

## ज्योतिष सारिणी

जन्म दिन-	18 December 1973 (Tuesday)		
जन्म समय-	01:45:00AM		
जन्म स्थान-	Hyderabad , INDIA		
रेखांश-	078:29:00E	सांपातिक काल-	07:14:11 hrs
अक्षांश-	017:23:00N	सूर्योदय-	06:42:20AM
समयक्षेत्र-	-05:30:00 hrs	सूर्यास्त-	05:42:47PM
समय संशोधन-	00:00:00 hrs	अयनांश-	N.C.Lahiri (023:29:36)
जीएमटी. समय-	20:15:00 hrs	विक्रम संवत्-	2030
स्थानीय समय संस्कार-	-00:16:04 hrs	शक संवत्-	1895
स्थानीय समय-	01:28:56 hrs	संवत्सर-	प्रमादी
		संवत्सर अधिपति-	इन्द्राग्नि

### अवकहड़ा चक्र

लग्न :	कन्या
लग्नाधिपति :	बुध
राशि (चन्द्रमा) :	कन्या
राशिपति :	बुध
नक्षत्र :	हस्त
नक्षत्रपति :	चन्द्र
नक्षत्र चरण :	2
पाया :	स्वर्ण
ऋतु :	हेमन्त
मास :	पौष
पक्ष :	कृष्ण
तिथि :	नवमी
तिथि श्रेणी :	रिक्ता
तिथि पति :	सूर्य
करण :	गरिज
करण श्रेणी :	चर
करणपति :	वासुदेव
गण :	देव
वर्ण :	वैश्य
योनि :	महिष (स्त्री)
सूर्य सिद्धान्त योग :	सौभाग्य
रज्जु :	कंठ
वश्य :	द्विपद
तत्त्व :	अग्नि
तत्त्वाधिपति :	मंगल
विहग :	वायस
नाडी :	आदि
नाडी पद :	मध्य
वेध :	शातभिषा
आद्याक्षर :	श

### घात चक्र

राशि (सूर्य) :	मिथुन
मास :	भद्रा
तिथि :	5,10,15
वार :	शनिवार
नक्षत्र :	श्रावण
प्रहर :	1
लग्न :	मीन
सूर्य सिद्धान्त योग :	सुकर्मन
करण :	कौलव

### शासक ग्रह (क० म० पद्धति के अनुसार)

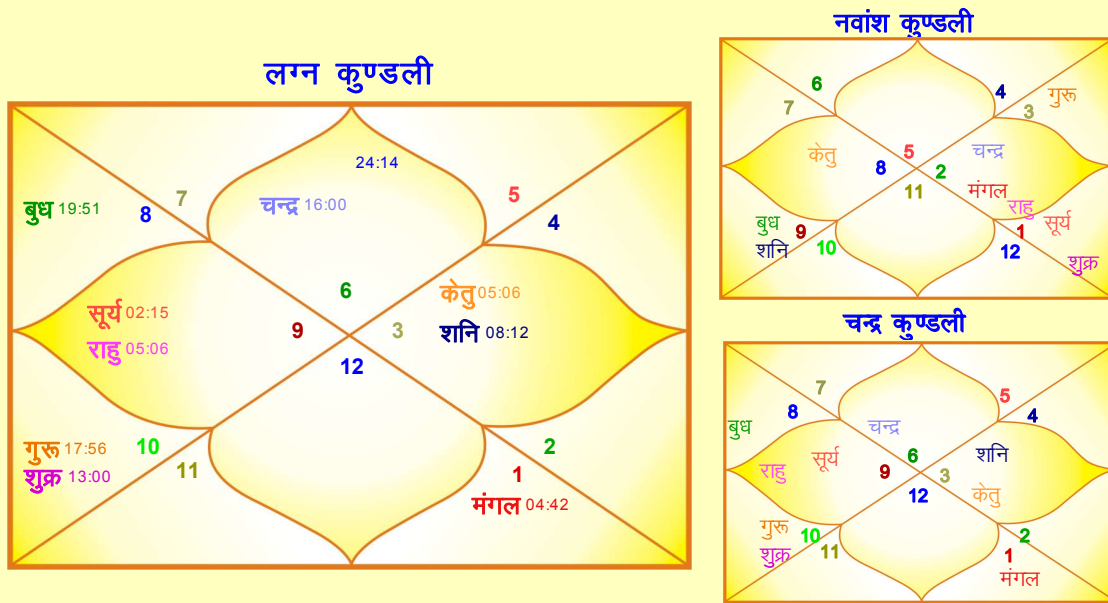
वारेणश :	मंगल
लग्नेश :	बुध
लग्न नक्षत्र स्वामी-	मंगल
लग्न उप स्वामी :	शुक्र
चन्द्र राशि स्वामी :	बुध
चन्द्र नक्षत्र स्वामी त्र	चन्द्र
चन्द्र उप स्वामी :	शुक्र
फॉरच्युना(क० प०)	097:57:31
अयनांशं (क० प०) :	023:23:49

### पाश्चात्य ज्योतिषीय सारिणी

सूर्य राशि-	धनु
देकानेट-	3
फेस :	VI
चन्द्र राशि (पाश्चात्य) :	तुला
लग्न (पाश्चात्य) :	तुला
सूर्य का अधिपति :	मंगल
चन्द्रमा का अधिपति :	शुक्र
अवधि बदलाव :	( मंगल, शनि ), ( बुध, शुक्र ), ( शुक्र, बुध ), ( शनि, मंगल )

### ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	राशि	डिग्री	नक्षत्र - चरन	न0 पति	सप्तकारक	विशेष	विशेष
AC	लग्न	कन्या	बुध 24:14:37	चित्रा.1	मंगल	...	...	...
☉	सूर्य	धनु	गुरु 02:15:49	मूल.1	केतु	दारा	मित्र के भाव में	ग्रसित
☾	चन्द्र	कन्या	बुध 16:00:58	हस्त.2	चन्द्र	भ्रात्रि	शत्रु के भाव में	---
♂	मंगल	मेष	मंगल 04:42:18	अश्विनी.2	केतु	ज्ञाति	मूलत्रिकोन	---
♃	बुध	वृश्चिक	मंगल 19:51:24	ज्येष्ठा.1	बुध	आत्म	शत्रु के भाव में	---
♄	गुरु	मकर	शनि 17:56:39	श्रवण.3	चन्द्र	अमात्य	तटस्थ भाव में	शुभ ग्रह के साथ
♅	शुक्र	मकर	शनि 13:00:16	श्रवण.1	चन्द्र	मात्रि	मित्र के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
♆	शनि व	मिथुन	बुध 08:12:34	आर्द्रा.1	राहु	अपत्या	तटस्थ भाव में	ग्रसित
♁	राहु व	धनु	गुरु 05:06:53	मूल.2	केतु	...	मित्र के भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
♂	केतु व	मिथुन	बुध 05:06:53	मृगशिरा.4	मंगल	...	तटस्थ भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
♁	हर्षल	तुला	शुक्र 03:20:59	चित्रा.4	मंगल	...	---	---
♃	नेपच्यून	वृश्चिक	मंगल 14:20:41	अनुराधा.4	शनि	...	---	शुभ ग्रह के साथ
♆	प्लूटो	कन्या	बुध 13:11:14	हस्त.1	चन्द्र	...	---	दुष्ट ग्रह के साथ



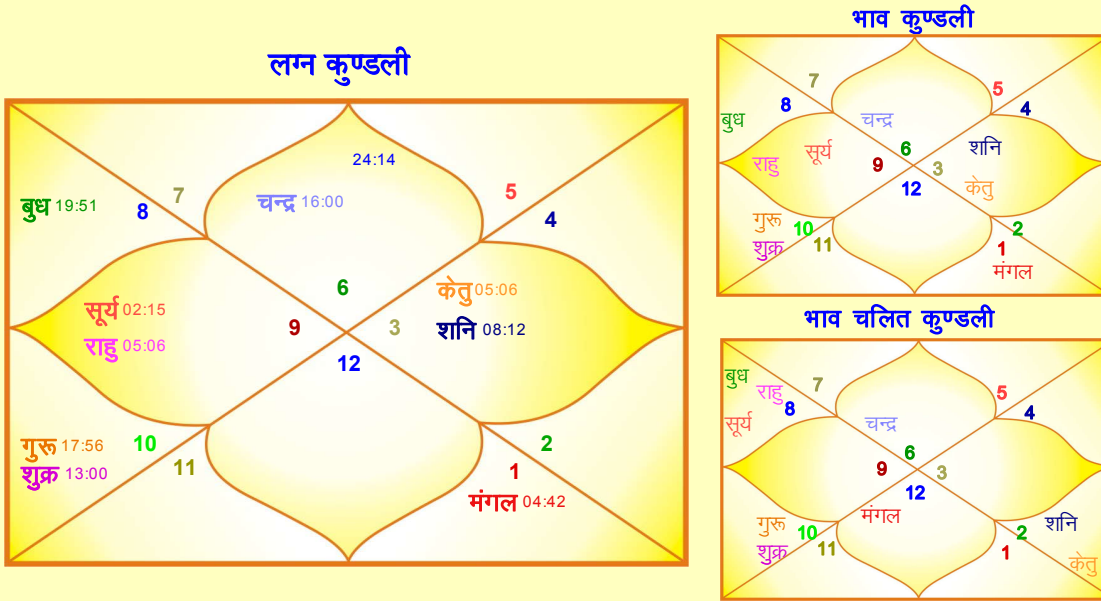
### ग्रह से ग्रह और ग्रह से लग्न के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	---	68	352	190	56	114	109	254	71	251	9	50	349
सूर्य	292	---	284	122	348	46	41	186	3	183	301	342	281
चन्द्र	8	76	---	199	64	122	117	262	79	259	17	58	357
मंगल	170	238	161	---	225	283	278	64	240	60	179	220	158
बुध	304	12	296	135	---	58	53	198	15	195	313	354	293
गुरु	246	314	238	77	302	---	355	140	317	137	255	296	235
शुक्र	251	319	243	82	307	5	---	145	322	142	260	301	240
शनि	106	174	98	296	162	220	215	---	177	357	115	156	95
राहु	289	357	281	120	345	43	38	183	---	180	298	339	278
केतु	109	177	101	300	165	223	218	3	180	---	118	159	98
हर्षल	351	59	343	181	47	105	100	245	62	242	---	41	340
नेपच्यून	310	18	302	140	6	64	59	204	21	201	319	---	299
प्लूटो	11	79	3	202	67	125	120	265	82	262	20	61	---

0,1,359 कन्जक्शॅन 59,60,61,299,300,301 सेक्सटाइल 89,90,91,269,270,271 स्कवायर  
 119,120,121,239,240,241 ट्राइन 149,150,151,209,210,211 क्वीनकक्सं 179,180,181 अपोजीसन  
 Page-91

### भाव स्फूट और कुण्डली

भाव संख्या	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ—अन्त)			
I	कन्या	024:14:37	कन्या	09:08:19	तुला	09:08:19
II	तुला	024:02:01	तुला	09:08:19	वृश्चिक	08:55:43
III	वृश्चिक	023:49:26	वृश्चिक	08:55:43	धनु	08:43:08
IV	धनु	023:36:50	धनु	08:43:08	मकर	08:43:08
V	मकर	023:49:26	मकर	08:43:08	कुम्भ	08:55:43
VI	कुम्भ	024:02:01	कुम्भ	08:55:43	मीन	09:08:19
VII	मीन	024:14:37	मीन	09:08:19	मेष	09:08:19
VIII	मेष	024:02:01	मेष	09:08:19	वृष	08:55:43
IX	वृष	023:49:26	वृष	08:55:43	मिथुन	08:43:08
X	मिथुन	023:36:50	मिथुन	08:43:08	कर्क	08:43:08
XI	कर्क	023:49:26	कर्क	08:43:08	सिंह	08:55:43
XII	सिंह	024:02:01	सिंह	08:55:43	कन्या	09:08:19



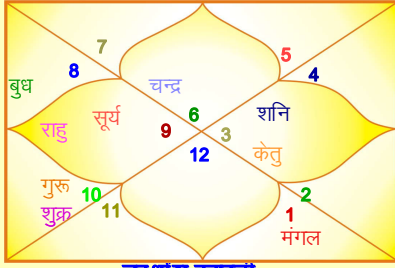
### ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	68	352	190	56	114	109	254	71	251	9	50	349
दूसरा भाव	38	322	161	26	84	79	224	41	221	339	20	319
तीसरा भाव	8	292	131	356	54	49	194	11	191	310	351	289
नादिर	339	262	101	326	24	19	165	342	162	280	321	260
पौंचवा भाव	308	232	71	296	354	349	134	311	131	250	291	229
छठवा भाव	278	202	41	266	324	319	104	281	101	219	260	199
सातवा भाव	248	172	10	236	294	289	74	251	71	189	230	169
आठवा भाव	218	142	341	206	264	259	44	221	41	159	200	139
नवा भाव	188	112	311	176	234	229	14	191	11	130	171	109
एम सी	159	82	281	146	204	199	345	162	342	100	141	80
ग्यारहवा भाव	128	52	251	116	174	169	314	131	311	70	111	49
बाह्रवा भाव	98	22	221	86	144	139	284	101	281	39	80	19

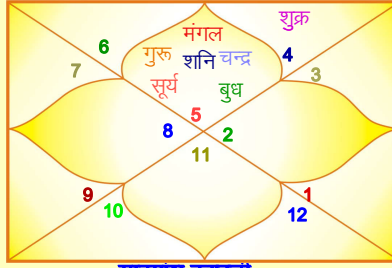
0,1,359 0,9,३५६ कन्जक्शेन 59,60,61,299,300,301 सेक्सटाइल 89,90,91,269,270,271 स्कवायर  
 119,120,121,239,240,241 ट्राइन 149,150,151,209,210,211 क्वीनकक्सं 179,180,181 अपोजीसन

## षोडश वर्ग

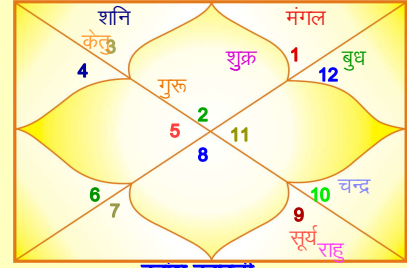
लग्न(जन्म) कुण्डली



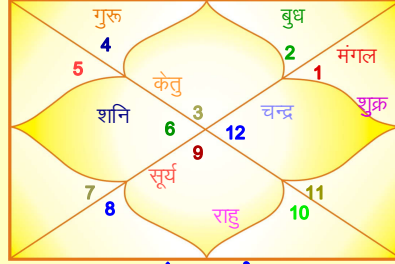
होरा कुण्डली



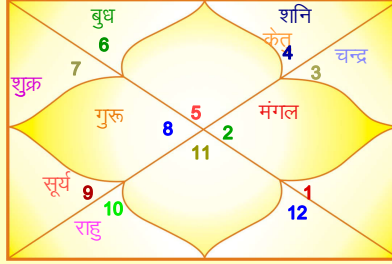
द्रेक्वाण कुण्डली



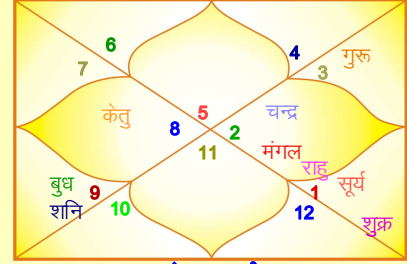
चतुर्थांश कुण्डली



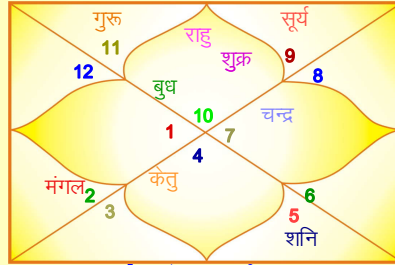
सप्तमांश कुण्डली



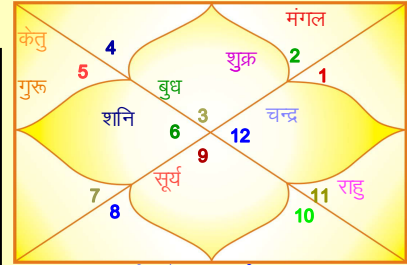
नवांश कुण्डली



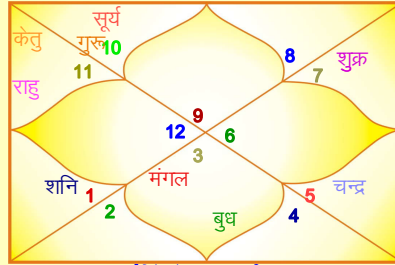
दशमांश कुण्डली



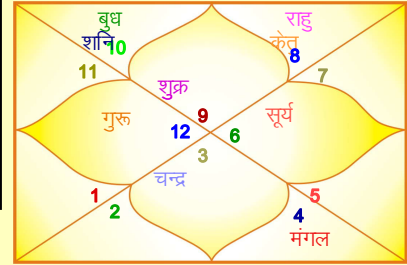
द्वादशांश कुण्डली



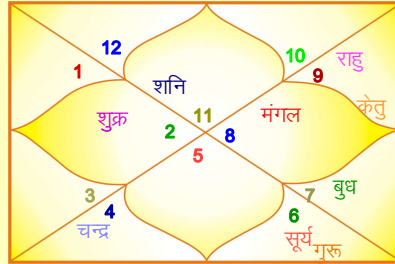
षोडशांश कुण्डली



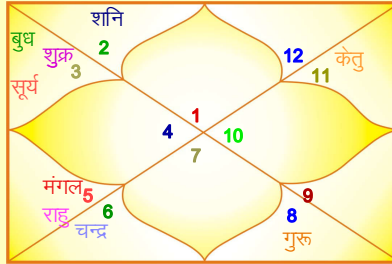
विंशांश कुण्डली



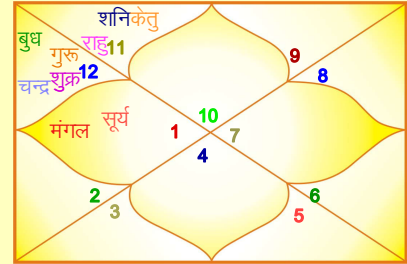
चतुर्विंशांश कुण्डली



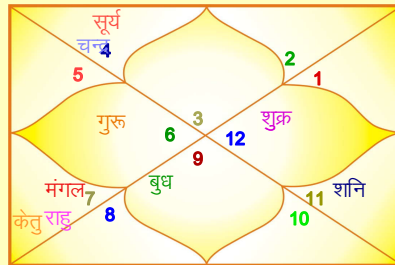
सप्तविंशांश कुण्डली



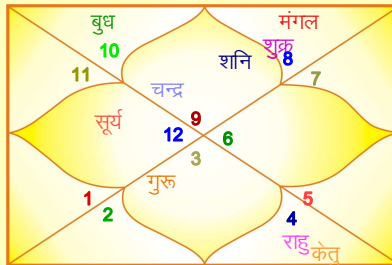
त्रिंशांश कुण्डली



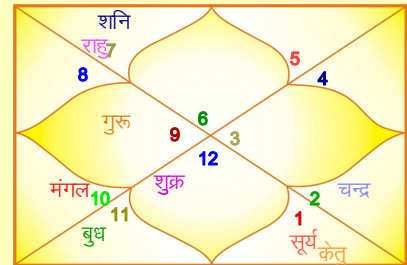
खवेदांश कुण्डली



अक्षवेदांश कुण्डली



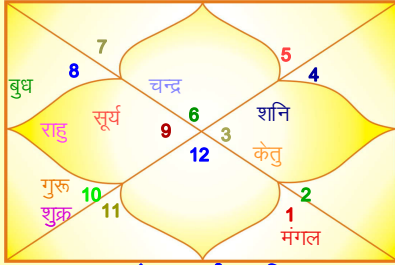
षष्ठांश कुण्डली



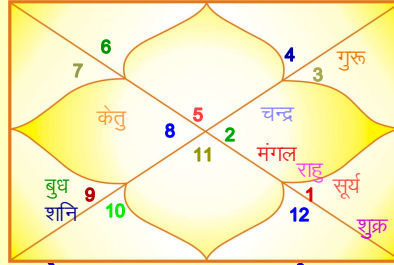
- D1** मुख्य कुण्डली, सभी मूद्रों के लिए  
**D2** धन दौलत के लिए  
**D3** सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य  
**D4** भाग्य और रिहायशी मकान  
**D7** संतान और उनकी संतान  
**D9** जीवनसाथी और उनकी स्वास्थ्य  
**D10** करियर और किसी भी कार्य में सफलता  
**D12** माता-पिता का जीवन और स्वास्थ्य  
**D16** वाहन से संबंधित बातें  
**D20** अध्यात्मिक रुझान  
**D24** शिक्षा, ज्ञान और समझ  
**D27** ताकत और दुर्बलता  
**D30** दरिद्रता, कठिनाईयां और दुर्गति  
**D40** शुभ-अशुभ घटनाएं  
**D45** सभी मूद्रों के लिए  
**D60** सभी मूद्रों के लिए

## जैमिनी लग्न कुण्डली

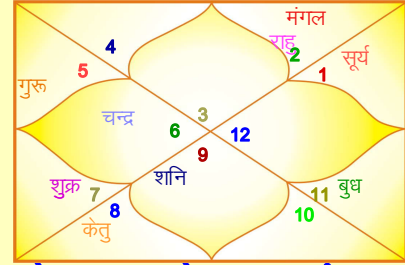
लग्न(जन्म) कण्डली



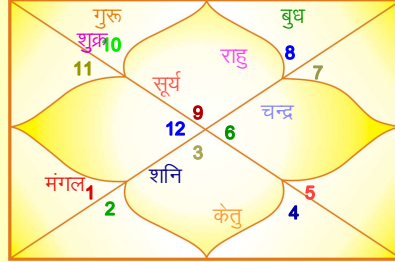
नवांश कण्डली



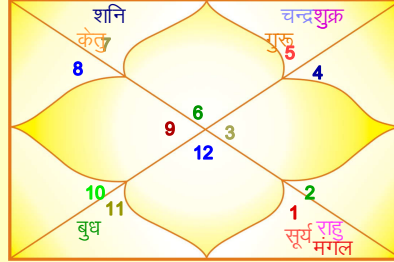
नवांश कण्डली (कष्ण मिश्रा)



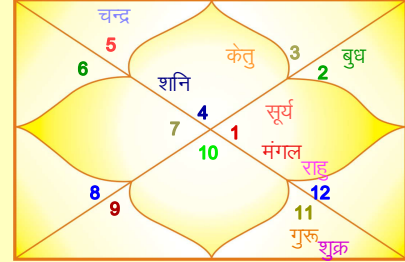
कारकांश कण्डली (राशि)



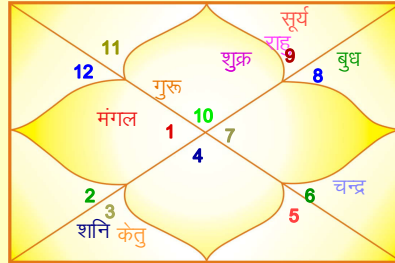
द्रेष्काण लग्न (प्रत्रा.)कण्डली



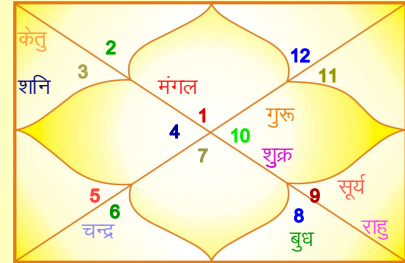
द्रेष्काण लग्न (सोमनाथ)कण्डली



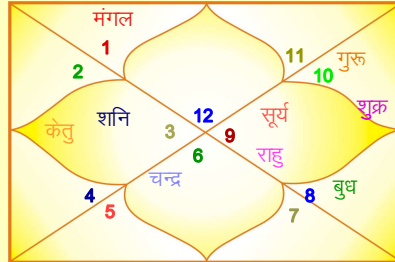
आरूढ लग्न कण्डली



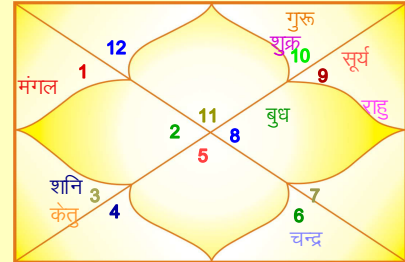
उप-पद लग्न कण्डली



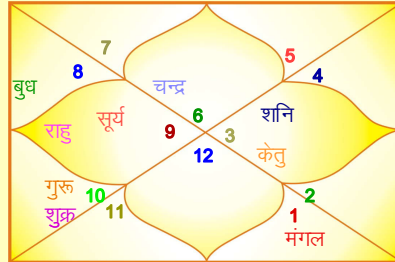
होश लग्न (वद्वि करिका) कण्डली



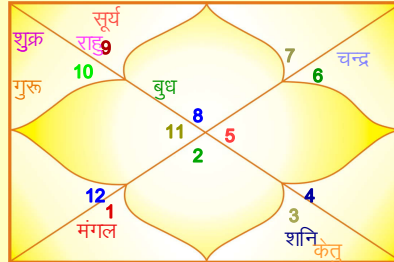
होश लग्न (सवाथा) कण्डली



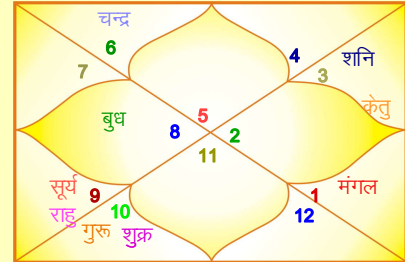
आयर लग्न कण्डली



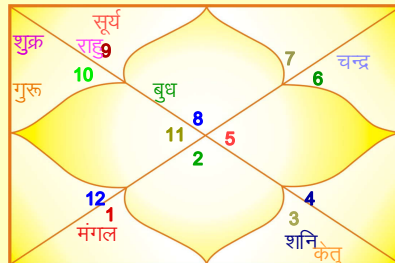
पका लग्न कण्डली



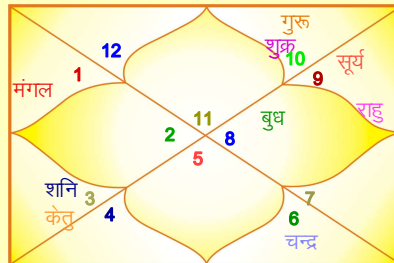
इन्द्र लग्न कण्डली



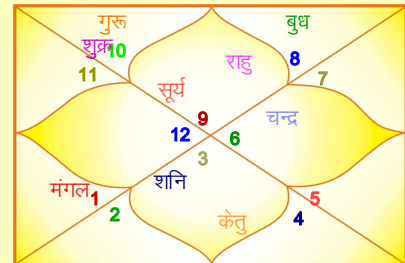
दिव्य लग्न कण्डली



ताग लग्न कण्डली



त्रिप्रवन लग्न कण्डली



### ग्रह अवस्था

ग्रह	स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10
सूर्य	स्वप्न	बाल	क्षुदित	प्रमुदित	मुदित
चन्द्रमा	सुप्त	युवा	क्षुदित	दुखित	
मंगल	जाग्रत	बाल	गर्वित	स्वस्थ	स्वस्थ
बुध	सुप्त	कुमार	क्षुदित	दुखित	दीन
बृहस्पति	जाग्रत	युवा	गर्वित	दीन	दीन
शुक्र	स्वप्न	युवा	मुदित	शांत	
शनि	स्वप्न	कुमार	क्षुदित	दीन	वक्र
राहु	स्वप्न	मृत	क्षुदित	प्रमुदित	मुदित
केतु	स्वप्न	मृत	लज्जित	दीन	संत

### सन्नडि

कर्म : श्रवण	संघातिक : अश्विनी
जन्म : हस्त	मानस : मघा
समुदय : कृत्तिका	विनाश : पुष्य

स्थुन	कंठक स्थुन-	मूल	जाति-	मघा	देश-	पूर्वाफल्युनी
कुज स्थुन-	मघा	रक्त स्थुन-	पूर्वाषाढ	प्रतिष्ठा-	उत्तरफल्युनी	त्रि-नाडि

### नव-तारा चक्र

जन्म	संपत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	निधन	मित्र	अति मित्र
हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठ	मूल	पूर्वाषाढ	उत्तराषाढ
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका
रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आरलेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तरफाल्गुनी

### आर्कचतुष्टय और नवशुभ अर्क

जन्म : हस्ता	कर्म : अभिजीत	आधान : कृत्तिका	नैधव : पुनर्वसु
--------------	---------------	-----------------	-----------------

आर्कचतुष्टय की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (२८ नक्षत्र के आधार पर)।

	दग्ध : मूल	क्षय : धनिष्ठा
	शूल : उत्तरभाद्रपद	सन्निपात : मृगशिरा
उल्का : उत्तरफाल्गुनी	भुकम्प : हस्त	वज्रक : चित्रा
		निर्घात : स्वाती

नवशुभ अर्क की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (२७ नक्षत्र के आधार पर)।

## मैत्री चक्र

## नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☾	चन्द्र	मित्र	....	सम	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
♂	मंगल	मित्र	मित्र	....	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु
♃	बुध	मित्र	शत्रु	सम	....	सम	मित्र	सम	सम
♄	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु	सम	मित्र
♅	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	....	मित्र	मित्र
♆	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	....	मित्र
♁	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	....	सम
♂	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	सम	....

## तत्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
☾	चन्द्र	मित्र	....	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
♂	मंगल	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
♃	बुध	मित्र	मित्र	शत्रु	....	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
♄	गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	....	शत्रु	शत्रु	मित्र
♅	शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु	मित्र
♆	शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	शत्रु
♁	राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	....
♂	केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....

## पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	अधिमित्र	सम	मित्र	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
☾	चन्द्र	अधिमित्र	....	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम
♂	मंगल	सम	सम	....	अधिशत्रु	अधिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु
♃	बुध	अधिमित्र	सम	शत्रु	....	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	मित्र
♄	गुरु	अधिमित्र	सम	अधिमित्र	सम	....	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र
♅	शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	....	सम	अधिमित्र
♆	शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	सम	....	सम
♁	राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	....
♂	केतु	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	शत्रु



## सुदर्शन चक्र

2/14/26/38/50/62/74/86/98/110

1/13/25/37/49/61/73/85/97/109

12/24/36/48/60/72/84/96/108/120

	बृ	सूर्य	बु
	शु	रा	
		चन्द्रमा	
	बु	7 8	5 4
		लग्न च	
	सू	9	के 3
	रा	रा सू	श के
	बृ	शु बृ	12
मं	शु	10 11	2 मं 1
			मं
		श	
		के	

6/18/30/42/54/66/78/90/102/114

7/19/31/43/55/67/79/91/103/115

8/20/32/44/56/68/80/92/104/116

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़ेंगे।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र बुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होंगे।  
यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सूर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।





## सर्वाष्टक वर्ग से निष्कर्ष

### सर्वाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39
♁ बृहस्पति	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56
♃ मंगल	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39
☉ सूर्य	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48
♆ शुक्र	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52
♃ बुध	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54
♄ चन्द्रमा	3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49
योग	27	21	29	34	24	32	31	35	25	26	31	22	337
AC लग्न	5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49
♁ राहु	4	5	6	2	4	2	3	3	5	4	2	4	44

### तत्त्व चक्र

स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	76	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	79	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	91	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	91	उत्तर

)विशेष - सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पू, द, प और उ)। अगर दोनों भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं, तो शुभ दिशा (उ पू, दपू, उ प और दप ) होगी। )

### भुवन चक्र

स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव-राशि	112.33	108	मेहनत और लगन
पनफरा भाव-राशि	112.33	118	आर्थिक स्थिति
अपविल्म भाव-राशि	112.33	111	वित्त हानि

### दिशा चक्र

भाग	स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	79	बन्धु -बान्धवों से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	91	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	91	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	76	दुर्भाग्य और हानि

## विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 0२३:२६:३६ ) : चन्द्र : 5 व 5  
मा 26 दि

क्र० सं०	ग्रह दशा	अवधि	से ----- तक
1	☾ चन्द्र महादशा	5 y.5 m.26 d.	18:12:1973 --- 14:06:1979
2	♂ मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	14:06:1979 --- 14:06:1986
3	♃ राहु महादशा	18 y.0 m.0 d.	14:06:1986 --- 13:06:2004
4	♁ गुरु महादशा	16 y.0 m.0 d.	13:06:2004 --- 13:06:2020
5	♄ शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	13:06:2020 --- 14:06:2039
6	♃ बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	14:06:2039 --- 13:06:2056
7	♃ केतु महादशा	7 y.0 m.0 d.	13:06:2056 --- 14:06:2063
8	♃ शुक्र महादशा	20 y.0 m.0 d.	14:06:2063 --- 14:06:2083
9	☼ सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	14:06:2083 --- 14:06:2089

### विंशोत्तरी अन्तर्दशा

चन्द्र दशा		मंगल दशा		राहु दशा	
अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक
चन्द्र		मंगल	14:06:1979 - 10:11:1979	राहु	14:06:1986 - 24:02:1989
मंगल		राहु	10:11:1979 - 28:11:1980	गुरु	24:02:1989 - 20:07:1991
राहु		गुरु	28:11:1980 - 04:11:1981	शनि	20:07:1991 - 26:05:1994
गुरु		शनि	04:11:1981 - 13:12:1982	बुध	26:05:1994 - 13:12:1996
शनि	18:12:1973 - 14:04:1975	बुध	13:12:1982 - 10:12:1983	केतु	13:12:1996 - 31:12:1997
बुध	14:04:1975 - 13:09:1976	केतु	10:12:1983 - 08:05:1984	शुक्र	31:12:1997 - 31:12:2000
केतु	13:09:1976 - 14:04:1977	शुक्र	08:05:1984 - 08:07:1985	सूर्य	31:12:2000 - 25:11:2001
शुक्र	14:04:1977 - 13:12:1978	सूर्य	08:07:1985 - 13:11:1985	चन्द्र	25:11:2001 - 26:05:2003
सूर्य	13:12:1978 - 14:06:1979	चन्द्र	13:11:1985 - 14:06:1986	मंगल	26:05:2003 - 13:06:2004
गुरु दशा		शनि दशा		बुध दशा	
अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक
गुरु	13:06:2004 - 01:08:2006	शनि	13:06:2020 - 17:06:2023	बुध	14:06:2039 - 10:11:2041
शनि	01:08:2006 - 12:02:2009	बुध	17:06:2023 - 24:02:2026	केतु	10:11:2041 - 07:11:2042
बुध	12:02:2009 - 20:05:2011	केतु	24:02:2026 - 05:04:2027	शुक्र	07:11:2042 - 07:09:2045
केतु	20:05:2011 - 25:04:2012	शुक्र	05:04:2027 - 05:06:2030	सूर्य	07:09:2045 - 14:07:2046
शुक्र	25:04:2012 - 25:12:2014	सूर्य	05:06:2030 - 17:05:2031	चन्द्र	14:07:2046 - 13:12:2047
सूर्य	25:12:2014 - 13:10:2015	चन्द्र	17:05:2031 - 16:12:2032	मंगल	13:12:2047 - 10:12:2048
चन्द्र	13:10:2015 - 12:02:2017	मंगल	16:12:2032 - 25:01:2034	राहु	10:12:2048 - 29:06:2051
मंगल	12:02:2017 - 19:01:2018	राहु	25:01:2034 - 01:12:2036	गुरु	29:06:2051 - 04:10:2053
राहु	19:01:2018 - 13:06:2020	गुरु	01:12:2036 - 14:06:2039	शनि	04:10:2053 - 13:06:2056
केतु दशा		शुक्र दशा		सूर्य दशा	
अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक	अन्तर्दशा	से — तक
केतु	13:06:2056 - 10:11:2056	शुक्र	14:06:2063 - 13:10:2066	सूर्य	14:06:2083 - 01:10:2083
शुक्र	10:11:2056 - 10:01:2058	सूर्य	13:10:2066 - 13:10:2067	चन्द्र	01:10:2083 - 01:04:2084
सूर्य	10:01:2058 - 17:05:2058	चन्द्र	13:10:2067 - 14:06:2069	मंगल	01:04:2084 - 07:08:2084
चन्द्र	17:05:2058 - 16:12:2058	मंगल	14:06:2069 - 14:08:2070	राहु	07:08:2084 - 02:07:2085
मंगल	16:12:2058 - 14:05:2059	राहु	14:08:2070 - 14:08:2073	गुरु	02:07:2085 - 20:04:2086
राहु	14:05:2059 - 01:06:2060	गुरु	14:08:2073 - 13:04:2076	शनि	20:04:2086 - 02:04:2087
गुरु	01:06:2060 - 08:05:2061	शनि	13:04:2076 - 14:06:2079	बुध	02:04:2087 - 06:02:2088
शनि	08:05:2061 - 17:06:2062	बुध	14:06:2079 - 14:04:2082	केतु	06:02:2088 - 13:06:2088
बुध	17:06:2062 - 14:06:2063	केतु	14:04:2082 - 14:06:2083	शुक्र	13:06:2088 - 14:06:2089

## विंशोत्तरी दशा

चन्द्र महादशा ( 18:12:1973 से 14:06:1979 )

प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -

		शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
				बुध	14:04:1975
		बुध	18:12:1973	केतु	26:06:1975
		केतु	05:03:1974	शुक्र	26:07:1975
		शुक्र	08:04:1974	सूर्य	20:10:1975
		सूर्य	13:07:1974	चन्द्र	15:11:1975
		चन्द्र	11:08:1974	मंगल	28:12:1975
		मंगल	28:09:1974	राह	28:01:1976
		राह	01:11:1974	गुरु	14:04:1976
		गुरु	27:01:1975	शनि	23:06:1976

केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
केतु	13:09:1976	शुक्र	14:04:1977	सूर्य	13:12:1978
शुक्र	25:09:1976	सूर्य	24:07:1977	चन्द्र	22:12:1978
सूर्य	31:10:1976	चन्द्र	24:08:1977	मंगल	07:01:1979
चन्द्र	10:11:1976	मंगल	13:10:1977	राह	17:01:1979
मंगल	28:11:1976	राह	18:11:1977	गुरु	14:02:1979
राह	11:12:1976	गुरु	17:02:1978	शनि	10:03:1979
गुरु	12:01:1977	शनि	09:05:1978	बुध	08:04:1979
शनि	09:02:1977	बुध	14:08:1978	केतु	04:05:1979
बुध	15:03:1977	केतु	08:11:1978	शुक्र	14:05:1979

## विंशोत्तरी दशा

मंगल महादशा ( 14:06:1979 से 14:06:1986 )

मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा		गुरु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
मंगल	14:06:1979	राहु	10:11:1979	गुरु	28:11:1980
राहु	22:06:1979	गुरु	06:01:1980	शनि	12:01:1981
गुरु	15:07:1979	शनि	27:02:1980	बुध	07:03:1981
शनि	04:08:1979	बुध	27:04:1980	केतु	25:04:1981
बुध	27:08:1979	केतु	21:06:1980	शुक्र	15:05:1981
केतु	17:09:1979	शुक्र	13:07:1980	सूर्य	10:07:1981
शुक्र	26:09:1979	सूर्य	15:09:1980	चन्द्र	27:07:1981
सूर्य	21:10:1979	चन्द्र	04:10:1980	मंगल	25:08:1981
चन्द्र	28:10:1979	मंगल	06:11:1980	राहु	14:09:1981

शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शनि	04:11:1981	बुध	13:12:1982	केतु	10:12:1983
बुध	07:01:1982	केतु	03:02:1983	शुक्र	19:12:1983
केतु	05:03:1982	शुक्र	24:02:1983	सूर्य	13:01:1984
शुक्र	29:03:1982	सूर्य	25:04:1983	चन्द्र	20:01:1984
सूर्य	04:06:1982	चन्द्र	13:05:1983	मंगल	02:02:1984
चन्द्र	24:06:1982	मंगल	12:06:1983	राहु	10:02:1984
मंगल	28:07:1982	राहु	03:07:1983	गुरु	04:03:1984
राहु	21:08:1982	गुरु	27:08:1983	शनि	24:03:1984
गुरु	20:10:1982	शनि	14:10:1983	बुध	16:04:1984

शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शुक्र	08:05:1984	सूर्य	08:07:1985	चन्द्र	13:11:1985
सूर्य	18:07:1984	चन्द्र	14:07:1985	मंगल	01:12:1985
चन्द्र	08:08:1984	मंगल	25:07:1985	राहु	13:12:1985
मंगल	13:09:1984	राहु	02:08:1985	गुरु	14:01:1986
राहु	08:10:1984	गुरु	21:08:1985	शनि	11:02:1986
गुरु	11:12:1984	शनि	07:09:1985	बुध	17:03:1986
शनि	05:02:1985	बुध	27:09:1985	केतु	16:04:1986
बुध	14:04:1985	केतु	15:10:1985	शुक्र	29:04:1986
केतु	13:06:1985	शुक्र	23:10:1985	सूर्य	03:06:1986

## विंशोत्तरी दशा

राहु महादशा ( 14:06:1986 से 13:06:2004 )

राहु अन्तर्दशा		गुरु अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
राहु	14:06:1986	गुरु	24:02:1989	शनि	20:07:1991
गुरु	09:11:1986	शनि	21:06:1989	बुध	01:01:1992
शनि	20:03:1987	बुध	07:11:1989	केतु	28:05:1992
बुध	23:08:1987	केतु	11:03:1990	शुक्र	28:07:1992
केतु	10:01:1988	शुक्र	01:05:1990	सूर्य	17:01:1993
शुक्र	07:03:1988	सूर्य	24:09:1990	चन्द्र	10:03:1993
सूर्य	19:08:1988	चन्द्र	07:11:1990	मंगल	05:06:1993
चन्द्र	07:10:1988	मंगल	19:01:1991	राहु	05:08:1993
मंगल	29:12:1988	राहु	11:03:1991	गुरु	08:01:1994

बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
बुध	26:05:1994	केतु	13:12:1996	शुक्र	31:12:1997
केतु	05:10:1994	शुक्र	05:01:1997	सूर्य	02:07:1998
शुक्र	29:11:1994	सूर्य	09:03:1997	चन्द्र	26:08:1998
सूर्य	03:05:1995	चन्द्र	29:03:1997	मंगल	25:11:1998
चन्द्र	18:06:1995	मंगल	30:04:1997	राहु	28:01:1999
मंगल	04:09:1995	राहु	22:05:1997	गुरु	11:07:1999
राहु	28:10:1995	गुरु	18:07:1997	शनि	04:12:1999
गुरु	16:03:1996	शनि	08:09:1997	बुध	26:05:2000
शनि	18:07:1996	बुध	07:11:1997	केतु	28:10:2000

सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्र अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
सूर्य	31:12:2000	चन्द्र	25:11:2001	मंगल	26:05:2003
चन्द्र	17:01:2001	मंगल	10:01:2002	राहु	18:06:2003
मंगल	13:02:2001	राहु	11:02:2002	गुरु	14:08:2003
राहु	04:03:2001	गुरु	04:05:2002	शनि	04:10:2003
गुरु	23:04:2001	शनि	16:07:2002	बुध	04:12:2003
शनि	06:06:2001	बुध	10:10:2002	केतु	27:01:2004
बुध	28:07:2001	केतु	27:12:2002	शुक्र	19:02:2004
केतु	12:09:2001	शुक्र	28:01:2003	सूर्य	23:04:2004
शुक्र	01:10:2001	सूर्य	29:04:2003	चन्द्र	12:05:2004

## विंशोत्तरी दशा

गुरु महादशा ( 13:06:2004 से 13:06:2020 )

गुरु अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
गुरु	13:06:2004	शनि	01:08:2006	बुध	12:02:2009
शनि	25:09:2004	बुध	26:12:2006	केतु	09:06:2009
बुध	27:01:2005	केतु	06:05:2007	शुक्र	28:07:2009
केतु	17:05:2005	शुक्र	29:06:2007	सूर्य	12:12:2009
शुक्र	02:07:2005	सूर्य	30:11:2007	चन्द्र	23:01:2010
सूर्य	08:11:2005	चन्द्र	15:01:2008	मंगल	02:04:2010
चन्द्र	17:12:2005	मंगल	01:04:2008	राह	20:05:2010
मंगल	20:02:2006	राह	25:05:2008	गुरु	21:09:2010
राह	07:04:2006	गुरु	12:10:2008	शनि	09:01:2011

केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
केतु	20:05:2011	शुक्र	25:04:2012	सूर्य	25:12:2014
शुक्र	09:06:2011	सूर्य	05:10:2012	चन्द्र	09:01:2015
सूर्य	05:08:2011	चन्द्र	23:11:2012	मंगल	02:02:2015
चन्द्र	22:08:2011	मंगल	12:02:2013	राह	19:02:2015
मंगल	19:09:2011	राह	10:04:2013	गुरु	04:04:2015
राह	09:10:2011	गुरु	03:09:2013	शनि	13:05:2015
गुरु	29:11:2011	शनि	11:01:2014	बुध	28:06:2015
शनि	14:01:2012	बुध	14:06:2014	केतु	09:08:2015
बुध	08:03:2012	केतु	30:10:2014	शुक्र	26:08:2015

चन्द्र अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
चन्द्र	13:10:2015	मंगल	12:02:2017	राह	19:01:2018
मंगल	23:11:2015	राह	04:03:2017	गुरु	30:05:2018
राह	21:12:2015	गुरु	24:04:2017	शनि	24:09:2018
गुरु	04:03:2016	शनि	08:06:2017	बुध	10:02:2019
शनि	08:05:2016	बुध	01:08:2017	केतु	14:06:2019
बुध	24:07:2016	केतु	19:09:2017	शुक्र	04:08:2019
केतु	01:10:2016	शुक्र	09:10:2017	सूर्य	28:12:2019
शुक्र	29:10:2016	सूर्य	04:12:2017	चन्द्र	10:02:2020
सूर्य	19:01:2017	चन्द्र	21:12:2017	मंगल	23:04:2020



## विंशोत्तरी दशा

शनि महादशा ( 13:06:2020 से 14:06:2039 )

शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शनि	13:06:2020	बुध	17:06:2023	केतु	24:02:2026
बुध	05:12:2020	केतु	03:11:2023	शुक्र	20:03:2026
केतु	09:05:2021	शुक्र	30:12:2023	सूर्य	26:05:2026
शुक्र	12:07:2021	सूर्य	11:06:2024	चन्द्र	15:06:2026
सूर्य	11:01:2022	चन्द्र	31:07:2024	मंगल	19:07:2026
चन्द्र	07:03:2022	मंगल	21:10:2024	राह	12:08:2026
मंगल	07:06:2022	राह	17:12:2024	गुरु	11:10:2026
राह	10:08:2022	गुरु	14:05:2025	शनि	04:12:2026
गुरु	21:01:2023	शनि	22:09:2025	बुध	06:02:2027

शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शुक्र	05:04:2027	सूर्य	05:06:2030	चन्द्र	17:05:2031
सूर्य	14:10:2027	चन्द्र	22:06:2030	मंगल	05:07:2031
चन्द्र	11:12:2027	मंगल	21:07:2030	राह	07:08:2031
मंगल	17:03:2028	राह	10:08:2030	गुरु	02:11:2031
राह	23:05:2028	गुरु	01:10:2030	शनि	18:01:2032
गुरु	13:11:2028	शनि	16:11:2030	बुध	19:04:2032
शनि	16:04:2029	बुध	10:01:2031	केतु	10:07:2032
बुध	16:10:2029	केतु	28:02:2031	शुक्र	13:08:2032
केतु	29:03:2030	शुक्र	21:03:2031	सूर्य	17:11:2032

मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा		गुरु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
मंगल	16:12:2032	राह	25:01:2034	गुरु	01:12:2036
राह	09:01:2033	गुरु	30:06:2034	शनि	03:04:2037
गुरु	11:03:2033	शनि	16:11:2034	बुध	28:08:2037
शनि	03:05:2033	बुध	29:04:2035	केतु	06:01:2038
बुध	07:07:2033	केतु	24:09:2035	शुक्र	01:03:2038
केतु	02:09:2033	शुक्र	23:11:2035	सूर्य	02:08:2038
शुक्र	25:09:2033	सूर्य	15:05:2036	चन्द्र	17:09:2038
सूर्य	02:12:2033	चन्द्र	06:07:2036	मंगल	03:12:2038
चन्द्र	22:12:2033	मंगल	01:10:2036	राह	26:01:2039

## विंशोत्तरी दशा

बुध महादशा ( 14:06:2039 से 13:06:2056 )

बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
बुध	14:06:2039	केतु	10:11:2041	शुक्र	07:11:2042
केतु	16:10:2039	शुक्र	01:12:2041	सूर्य	28:04:2043
शुक्र	07:12:2039	सूर्य	30:01:2042	चन्द्र	19:06:2043
सूर्य	01:05:2040	चन्द्र	17:02:2042	मंगल	13:09:2043
चन्द्र	14:06:2040	मंगल	19:03:2042	राह	12:11:2043
मंगल	27:08:2040	राह	10:04:2042	गुरु	16:04:2044
राह	17:10:2040	गुरु	03:06:2042	शनि	01:09:2044
गुरु	26:02:2041	शनि	21:07:2042	बुध	12:02:2045
शनि	24:06:2041	बुध	16:09:2042	केतु	09:07:2045

सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्र अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
सूर्य	07:09:2045	चन्द्र	14:07:2046	मंगल	13:12:2047
चन्द्र	22:09:2045	मंगल	26:08:2046	राह	03:01:2048
मंगल	18:10:2045	राह	25:09:2046	गुरु	27:02:2048
राह	05:11:2045	गुरु	12:12:2046	शनि	15:04:2048
गुरु	22:12:2045	शनि	19:02:2047	बुध	12:06:2048
शनि	01:02:2046	बुध	12:05:2047	केतु	02:08:2048
बुध	22:03:2046	केतु	24:07:2047	शुक्र	23:08:2048
केतु	05:05:2046	शुक्र	23:08:2047	सूर्य	23:10:2048
शुक्र	23:05:2046	सूर्य	17:11:2047	चन्द्र	10:11:2048

राहु अन्तर्दशा		गुरु अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
राह	10:12:2048	गुरु	29:06:2051	शनि	04:10:2053
गुरु	29:04:2049	शनि	17:10:2051	बुध	09:03:2054
शनि	31:08:2049	बुध	25:02:2052	केतु	26:07:2054
बुध	25:01:2050	केतु	22:06:2052	शुक्र	21:09:2054
केतु	06:06:2050	शुक्र	09:08:2052	सूर्य	04:03:2055
शुक्र	30:07:2050	सूर्य	26:12:2052	चन्द्र	22:04:2055
सूर्य	02:01:2051	चन्द्र	05:02:2053	मंगल	13:07:2055
चन्द्र	17:02:2051	मंगल	15:04:2053	राह	08:09:2055
मंगल	06:05:2051	राह	02:06:2053	गुरु	03:02:2056

## विंशोत्तरी दशा

केतु महादशा ( 13:06:2056 से 14:06:2063 )

केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
केतु	13:06:2056	शुक्र	10:11:2056	सूर्य	10:01:2058
शुक्र	22:06:2056	सूर्य	20:01:2057	चन्द्र	16:01:2058
सूर्य	17:07:2056	चन्द्र	10:02:2057	मंगल	27:01:2058
चन्द्र	24:07:2056	मंगल	18:03:2057	राह	03:02:2058
मंगल	06:08:2056	राह	11:04:2057	गुरु	22:02:2058
राह	14:08:2056	गुरु	14:06:2057	शनि	11:03:2058
गुरु	06:09:2056	शनि	10:08:2057	बुध	01:04:2058
शनि	26:09:2056	बुध	16:10:2057	केतु	19:04:2058
बुध	19:10:2056	केतु	16:12:2057	शुक्र	26:04:2058

चन्द्र अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
चन्द्र	17:05:2058	मंगल	16:12:2058	राह	14:05:2059
मंगल	04:06:2058	राह	25:12:2058	गुरु	11:07:2059
राह	17:06:2058	गुरु	16:01:2059	शनि	31:08:2059
गुरु	18:07:2058	शनि	05:02:2059	बुध	31:10:2059
शनि	16:08:2058	बुध	01:03:2059	केतु	24:12:2059
बुध	19:09:2058	केतु	22:03:2059	शुक्र	15:01:2060
केतु	19:10:2058	शुक्र	31:03:2059	सूर्य	19:03:2060
शुक्र	31:10:2058	सूर्य	24:04:2059	चन्द्र	08:04:2060
सूर्य	06:12:2058	चन्द्र	02:05:2059	मंगल	10:05:2060

गुरु अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
गुरु	01:06:2060	शनि	08:05:2061	बुध	17:06:2062
शनि	17:07:2060	बुध	11:07:2061	केतु	07:08:2062
बुध	09:09:2060	केतु	07:09:2061	शुक्र	28:08:2062
केतु	27:10:2060	शुक्र	30:09:2061	सूर्य	27:10:2062
शुक्र	16:11:2060	सूर्य	07:12:2061	चन्द्र	15:11:2062
सूर्य	12:01:2061	चन्द्र	27:12:2061	मंगल	15:12:2062
चन्द्र	29:01:2061	मंगल	30:01:2062	राह	05:01:2063
मंगल	26:02:2061	राह	22:02:2062	गुरु	28:02:2063
राह	18:03:2061	गुरु	24:04:2062	शनि	17:04:2063

## विंशोत्तरी दशा

शुक्र महादशा ( 14:06:2063 से 14:06:2083 )

शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शुक्र	14:06:2063	सूर्य	13:10:2066	चन्द्र	13:10:2067
सूर्य	03:01:2064	चन्द्र	01:11:2066	मंगल	03:12:2067
चन्द्र	04:03:2064	मंगल	01:12:2066	राह	08:01:2068
मंगल	13:06:2064	राह	22:12:2066	गुरु	08:04:2068
राह	23:08:2064	गुरु	15:02:2067	शनि	28:06:2068
गुरु	22:02:2065	शनि	05:04:2067	बुध	03:10:2068
शनि	03:08:2065	बुध	02:06:2067	केतु	28:12:2068
बुध	12:02:2066	केतु	23:07:2067	शुक्र	02:02:2069
केतु	03:08:2066	शुक्र	14:08:2067	सूर्य	14:05:2069

मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा		गुरु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
मंगल	14:06:2069	राह	14:08:2070	गुरु	14:08:2073
राह	09:07:2069	गुरु	25:01:2071	शनि	21:12:2073
गुरु	10:09:2069	शनि	20:06:2071	बुध	24:05:2074
शनि	06:11:2069	बुध	10:12:2071	केतु	09:10:2074
बुध	13:01:2070	केतु	14:05:2072	शुक्र	05:12:2074
केतु	14:03:2070	शुक्र	17:07:2072	सूर्य	16:05:2075
शुक्र	08:04:2070	सूर्य	16:01:2073	चन्द्र	04:07:2075
सूर्य	18:06:2070	चन्द्र	11:03:2073	मंगल	23:09:2075
चन्द्र	09:07:2070	मंगल	11:06:2073	राह	19:11:2075

शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
शनि	13:04:2076	बुध	14:06:2079	केतु	14:04:2082
बुध	14:10:2076	केतु	07:11:2079	शुक्र	09:05:2082
केतु	27:03:2077	शुक्र	07:01:2080	सूर्य	19:07:2082
शुक्र	02:06:2077	सूर्य	27:06:2080	चन्द्र	09:08:2082
सूर्य	12:12:2077	चन्द्र	18:08:2080	मंगल	13:09:2082
चन्द्र	08:02:2078	मंगल	13:11:2080	राह	08:10:2082
मंगल	15:05:2078	राह	12:01:2081	गुरु	11:12:2082
राह	21:07:2078	गुरु	16:06:2081	शनि	06:02:2083
गुरु	11:01:2079	शनि	01:11:2081	बुध	14:04:2083

## विंशोत्तरी दशा

सूर्य महादशा ( 14:06:2083 से 14:06:2089 )

सूर्य अन्तर्दशा		चन्द्र अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
सूर्य	14:06:2083	चन्द्र	01:10:2083	मंगल	01:04:2084
चन्द्र	19:06:2083	मंगल	16:10:2083	राह	08:04:2084
मंगल	28:06:2083	राह	27:10:2083	गुरु	28:04:2084
राह	05:07:2083	गुरु	23:11:2083	शनि	15:05:2084
गुरु	21:07:2083	शनि	18:12:2083	बुध	04:06:2084
शनि	05:08:2083	बुध	16:01:2084	केतु	22:06:2084
बुध	22:08:2083	केतु	11:02:2084	शुक्र	30:06:2084
केतु	07:09:2083	शुक्र	21:02:2084	सूर्य	21:07:2084
शुक्र	13:09:2083	सूर्य	23:03:2084	चन्द्र	27:07:2084

राहु अन्तर्दशा		गुरु अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
राह	07:08:2084	गुरु	02:07:2085	शनि	20:04:2086
गुरु	25:09:2084	शनि	10:08:2085	बुध	14:06:2086
शनि	08:11:2084	बुध	25:09:2085	केतु	02:08:2086
बुध	31:12:2084	केतु	06:11:2085	शुक्र	22:08:2086
केतु	15:02:2085	शुक्र	23:11:2085	सूर्य	19:10:2086
शुक्र	06:03:2085	सूर्य	10:01:2086	चन्द्र	05:11:2086
सूर्य	30:04:2085	चन्द्र	25:01:2086	मंगल	04:12:2086
चन्द्र	16:05:2085	मंगल	18:02:2086	राह	24:12:2086
मंगल	13:06:2085	राह	07:03:2086	गुरु	15:02:2087

बुध अन्तर्दशा		केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
बुध	02:04:2087	केतु	06:02:2088	शुक्र	13:06:2088
केतु	16:05:2087	शुक्र	14:02:2088	सूर्य	13:08:2088
शुक्र	03:06:2087	सूर्य	06:03:2088	चन्द्र	31:08:2088
सूर्य	24:07:2087	चन्द्र	12:03:2088	मंगल	01:10:2088
चन्द्र	09:08:2087	मंगल	23:03:2088	राह	22:10:2088
मंगल	04:09:2087	राह	30:03:2088	गुरु	16:12:2088
राह	22:09:2087	गुरु	19:04:2088	शनि	03:02:2089
गुरु	07:11:2087	शनि	06:05:2088	बुध	02:04:2089
शनि	19:12:2087	बुध	26:05:2088	केतु	23:05:2089

## अष्टोत्तरी दशा

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का अरिद्रादी सिद्धान्त प्रावी हो रहा है।

क्रस	ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से ----- तक	समय बिन्दु
1	मंगल( हस्त)	1 y.1 m.5 d.	18:12:1973 -- 22:01:1975	170:43:15
2	मंगल( चित्रा)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1975 -- 22:01:1977	009:24:35
3	मंगल( स्वाती)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1977 -- 22:01:1979	249:49:11
4	मंगल( विशाखा)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1979 -- 22:01:1981	292:38:57
5	बुध( अनु रधा)	5 y.8 m.0 d.	22:01:1981 -- 23:09:1986	298:03:58
6	बुध( ज्येष्ठा)	5 y.8 m.0 d.	23:09:1986 -- 23:05:1992	099:42:48
7	बुध( मूल)	5 y.8 m.0 d.	23:05:1992 -- 22:01:1998	294:58:17
8	शनि( पूर्वाषाढ)	2 y.6 m.0 d.	22:01:1998 -- 23:07:2000	351:12:50
9	शनि( उत्तराषाढ)	2 y.6 m.0 d.	23:07:2000 -- 22:01:2003	310:28:23
10	शनि( अभिजीत)	2 y.6 m.0 d.	22:01:2003 -- 24:07:2005	310:28:23
11	शनि( श्रवण)	2 y.6 m.0 d.	24:07:2005 -- 22:01:2008	234:13:31
12	बृहस्पति( धनिष्ठा)	6 y.4 m.0 d.	22:01:2008 -- 24:05:2014	292:38:57
13	बृहस्पति( शतभिषा)	6 y.4 m.0 d.	24:05:2014 -- 22:09:2020	173:03:32
14	बृहस्पति( पूर्वाभाद्रपद)	6 y.4 m.0 d.	22:09:2020 -- 22:01:2027	215:53:18
15	रहु( उत्तराभाद्रपद)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2027 -- 22:01:2030	313:19:27
16	रहु( रेवती)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2030 -- 22:01:2033	114:58:17
17	रहु( अश्विनी)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2033 -- 22:01:2036	310:13:47
18	रहु( भरणी)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2036 -- 22:01:2039	168:07:10
19	शुक्र( कृत्तिका)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2039 -- 22:01:2046	165:16:05
20	शुक्र( रोहिणी)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2046 -- 22:01:2053	089:01:14
21	शुक्र( मृगशिर)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2053 -- 22:01:2060	287:42:34
22	सूर्य( आर्द्रा)	1 y.6 m.0 d.	22:01:2060 -- 24:07:2061	127:22:42
23	सूर्य( पुनर्वसु)	1 y.6 m.0 d.	24:07:2061 -- 22:01:2063	170:12:28
24	सूर्य( पुष्य)	1 y.6 m.0 d.	22:01:2063 -- 23:07:2064	310:28:23
25	सूर्य( आश्लेषा)	1 y.6 m.0 d.	23:07:2064 -- 22:01:2066	112:07:13
26	चन्द्रमा( मघा)	5 y.0 m.0 d.	22:01:2066 -- 22:01:2071	231:07:51
27	चन्द्रमा( पूर्वाफाल्गुनी)	5 y.0 m.0 d.	22:01:2071 -- 22:01:2076	089:01:14













(विशेष- घटनाओं के समय की सटीक जानकारी और स्पष्ट परिणाम के लिए आपको केवल एन सी लाहिड़ी अयनांश का प्रयोग करना चाहिए।)

## योगिनी दशा

क्रस	ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से ----- तक	समय बिन्दु
1	संकट (राहु)( हस्त )	4 y.4 m.21 d.	18:12:1973 to 09:05:197	051:07:51
2	मंगला (चन्द्रमा)( चित्रा )	1 y.0 m.0 d.	09:05:1978 to 09:05:197	170:43:15
3	पिंगला (सूर्य)( स्वाती )	2 y.0 m.0 d.	09:05:1979 to 09:05:198	127:22:42
4	धन्या (बृहस्पति)( विशाखा )	3 y.0 m.0 d.	09:05:1981 to 08:05:198	215:53:18
5	भ्रमरी(मंगल)( अनुराधा )	4 y.0 m.0 d.	08:05:1984 to 08:05:198	072:54:51
6	भद्रीका( बुध)( ज्येष्ठा )	5 y.0 m.0 d.	08:05:1988 to 09:05:199	099:42:48
7	उल्का (शनि)( मूल )	6 y.0 m.0 d.	09:05:1993 to 09:05:199	133:19:27
8	सिद्धा (शुक्र)( पूर्वाषाढ )	7 y.0 m.0 d.	09:05:1999 to 09:05:200	206:00:33
9	संकट (राहु)( उत्तराषाढ )	8 y.0 m.0 d.	09:05:2006 to 09:05:201	127:22:42
10	मंगला (चन्द्रमा)( श्रवण )	1 y.0 m.0 d.	09:05:2014 to 09:05:201	332:01:55
11	पिंगला (सूर्य)( धनिष्ठा )	2 y.0 m.0 d.	09:05:2015 to 09:05:201	246:58:06
12	धन्या (बृहस्पति)( शतभिषा )	3 y.0 m.0 d.	09:05:2017 to 08:05:202	173:03:32
13	भ्रमरी(मंगल)( पूर्वाभाद्रपद )	4 y.0 m.0 d.	08:05:2020 to 08:05:202	292:38:57
14	भद्रीका( बुध)( उत्तरभाद्रपद )	5 y.0 m.0 d.	08:05:2024 to 09:05:202	298:03:58
15	उल्का (शनि)( रेवती )	6 y.0 m.0 d.	09:05:2029 to 09:05:203	298:03:58
16	सिद्धा (शुक्र)( अश्लेषा )	7 y.0 m.0 d.	09:05:2035 to 09:05:204	348:07:10
17	संकट (राहु)( भरणी )	8 y.0 m.0 d.	09:05:2042 to 09:05:205	168:07:10
18	मंगला (चन्द्रमा)( कृत्तिका )	1 y.0 m.0 d.	09:05:2050 to 09:05:205	048:16:46
19	पिंगला (सूर्य)( रोहिणी )	2 y.0 m.0 d.	09:05:2051 to 09:05:205	048:16:46
20	धन्या (बृहस्पति)( मृगशिर )	3 y.0 m.0 d.	09:05:2053 to 08:05:205	292:38:57
21	भ्रमरी(मंगल)( आर्द्रा )	4 y.0 m.0 d.	08:05:2056 to 08:05:206	249:49:11
22	भद्रीका( बुध)( पुनर्वसु )	5 y.0 m.0 d.	08:05:2060 to 09:05:206	157:48:03
23	उल्का (शनि)( पुष्य )	6 y.0 m.0 d.	09:05:2065 to 09:05:207	136:25:07
24	सिद्धा (शुक्र)( आश्लेषा )	7 y.0 m.0 d.	09:05:2071 to 09:05:207	152:51:40



## जैमिनी चर दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

क्र० सं०	राशि दशा	अवधि	से ----- तक
1	 कन्या दशा	10 y.0 m.0 d.	18:12:1973 --- 18:12:1983
2	 तुला दशा	3 y.0 m.0 d.	18:12:1983 --- 18:12:1986
3	 वृश्चिक दशा	5 y.0 m.0 d.	18:12:1986 --- 18:12:1991
4	 धनु दशा	1 y.0 m.0 d.	18:12:1991 --- 18:12:1992
5	 मकर दशा	7 y.0 m.0 d.	18:12:1992 --- 18:12:1999
6	 कुम्भ दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:1999 --- 18:12:2003
7	 मीन दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:2003 --- 18:12:2005
8	 मेष दशा	12 y.0 m.0 d.	18:12:2005 --- 18:12:2017
9	 वृष दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2017 --- 18:12:2021
10	 मिथुन दशा	5 y.0 m.0 d.	18:12:2021 --- 18:12:2026
11	 कर्क दशा	10 y.0 m.0 d.	18:12:2026 --- 18:12:2036
12	 सिंह दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2036 --- 18:12:2040

### जैमिनी चर दशा की भुक्ति

कन्या दशा		तुला दशा		वृश्चिक दशा		धनु दशा	
भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से
तुला	18:12:1973	वृश्चिक	18:12:1983	तुला	18:12:1986	वृश्चिक	18:12:1991
वृश्चिक	18:10:1974	धनु	18:03:1984	कन्या	19:05:1987	तुला	17:01:1992
धनु	18:08:1975	मकर	18:06:1984	सिंह	18:10:1987	कन्या	17:02:1992
मकर	18:06:1976	कुम्भ	17:09:1984	कर्क	18:03:1988	सिंह	18:03:1992
कुम्भ	18:04:1977	मीन	18:12:1984	मिथुन	18:08:1988	कर्क	18:04:1992
मीन	16:02:1978	मेष	19:03:1985	वृष	17:01:1989	मिथुन	18:05:1992
मेष	18:12:1978	वृष	18:06:1985	मेष	18:06:1989	वृष	18:06:1992
वृष	18:10:1979	मिथुन	17:09:1985	मीन	17:11:1989	मेष	18:07:1992
मिथुन	18:08:1980	कर्क	18:12:1985	कुम्भ	18:04:1990	मीन	18:08:1992
कर्क	18:06:1981	सिंह	19:03:1986	मकर	17:09:1990	कुम्भ	17:09:1992
सिंह	18:04:1982	कन्या	18:06:1986	धनु	16:02:1991	मकर	18:10:1992
कन्या	16:02:1983	तुला	17:09:1986	वृश्चिक	19:07:1991	धनु	17:11:1992
मकर दशा		कुम्भ दशा		मीन दशा		मेष दशा	
भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से
धनु	18:12:1992	मीन	18:12:1999	मेष	18:12:2003	वृष	18:12:2005
वृश्चिक	19:07:1993	मेष	18:04:2000	वृष	17:02:2004	मिथुन	18:12:2006
तुला	16:02:1994	वृष	18:08:2000	मिथुन	18:04:2004	कर्क	18:12:2007
कन्या	17:09:1994	मिथुन	18:12:2000	कर्क	18:06:2004	सिंह	18:12:2008
सिंह	18:04:1995	कर्क	18:04:2001	सिंह	18:08:2004	कन्या	18:12:2009
कर्क	17:11:1995	सिंह	18:08:2001	कन्या	18:10:2004	तुला	18:12:2010
मिथुन	18:06:1996	कन्या	18:12:2001	तुला	18:12:2004	वृश्चिक	18:12:2011
वृष	17:01:1997	तुला	18:04:2002	वृश्चिक	16:02:2005	धनु	18:12:2012
मेष	18:08:1997	वृश्चिक	18:08:2002	धनु	18:04:2005	मकर	18:12:2013
मीन	19:03:1998	धनु	18:12:2002	मकर	18:06:2005	कुम्भ	18:12:2014
कुम्भ	18:10:1998	मकर	18:04:2003	कुम्भ	18:08:2005	मीन	18:12:2015
मकर	19:05:1999	कुम्भ	18:08:2003	मीन	18:10:2005	मेष	18:12:2016
वृष दशा		मिथुन दशा		कर्क दशा		सिंह दशा	
भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से
मेष	18:12:2017	वृष	18:12:2021	मिथुन	18:12:2026	कन्या	18:12:2036
मीन	18:04:2018	मेष	19:05:2022	वृष	18:10:2027	तुला	18:04:2037
कुम्भ	18:08:2018	मीन	18:10:2022	मेष	18:08:2028	वृश्चिक	18:08:2037
मकर	18:12:2018	कुम्भ	19:03:2023	मीन	18:06:2029	धनु	18:12:2037
धनु	18:04:2019	मकर	18:08:2023	कुम्भ	18:04:2030	मकर	18:04:2038
वृश्चिक	18:08:2019	धनु	17:01:2024	मकर	16:02:2031	कुम्भ	18:08:2038
तुला	18:12:2019	वृश्चिक	18:06:2024	धनु	18:12:2031	मीन	18:12:2038
कन्या	18:04:2020	तुला	17:11:2024	वृश्चिक	18:10:2032	मेष	18:04:2039
सिंह	18:08:2020	कन्या	18:04:2025	तुला	18:08:2033	वृष	18:08:2039
कर्क	18:12:2020	सिंह	17:09:2025	कन्या	18:06:2034	मिथुन	18:12:2039
मिथुन	18:04:2021	कर्क	16:02:2026	सिंह	18:04:2035	कर्क	18:04:2040
वृष	18:08:2021	मिथुन	19:07:2026	कर्क	17:02:2036	सिंह	18:08:2040

## जैमिनी चर दशा

(राघवभट्ट और नरसिंह सूरी का सिद्धान्त)

क्र० सं०	राशि दशा	अवधि	से ----- तक
1	कन्या दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:1973 --- 18:12:1975
2	वृष दशा	8 y.0 m.0 d.	18:12:1975 --- 18:12:1983
3	मकर दशा	7 y.0 m.0 d.	18:12:1983 --- 18:12:1990
4	सिंह दशा	8 y.0 m.0 d.	18:12:1990 --- 18:12:1998
5	मेष दशा	12 y.0 m.0 d.	18:12:1998 --- 18:12:2010
6	धनु दशा	1 y.0 m.0 d.	18:12:2010 --- 18:12:2011
7	कर्क दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:2011 --- 18:12:2013
8	मीन दशा	10 y.0 m.0 d.	18:12:2013 --- 18:12:2023
9	वृश्चिक दशा	7 y.0 m.0 d.	18:12:2023 --- 18:12:2030
10	मिथुन दशा	5 y.0 m.0 d.	18:12:2030 --- 18:12:2035
11	कुम्भ दशा	8 y.0 m.0 d.	18:12:2035 --- 18:12:2043
12	तुला दशा	3 y.0 m.0 d.	18:12:2043 --- 18:12:2046

## जैमिनी चर दशा की भुक्ति

कन्या दशा		वृष दशा		मकर दशा		सिंह दशा	
भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से
वृश्चिक	18:12:1973	मकर	18:12:1975	मिथुन	18:12:1983	धनु	18:12:1990
तुला	18:12:1974	धनु	18:12:1976	कर्क	18:12:1984	मकर	18:12:1991
		वृश्चिक	18:12:1977	सिंह	18:12:1985	कुम्भ	18:12:1992
		तुला	18:12:1978	कन्या	18:12:1986	मीन	18:12:1993
		कन्या	18:12:1979	तुला	18:12:1987	मेष	18:12:1994
		सिंह	18:12:1980	वृश्चिक	18:12:1988	वृष	18:12:1995
		कर्क	18:12:1981	धनु	18:12:1989	मिथुन	18:12:1996
		मिथुन	18:12:1982			कर्क	18:12:1997
मेष दशा		धनु दशा		कर्क दशा		मीन दशा	
भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से
मेष	18:12:1998	मकर	18:12:2010	कन्या	18:12:2011	मकर	18:12:2013
वृष	18:12:1999			सिंह	18:12:2012	धनु	18:12:2014
मिथुन	18:12:2000					वृश्चिक	18:12:2015
कर्क	18:12:2001					तुला	18:12:2016
सिंह	18:12:2002					कन्या	18:12:2017
कन्या	18:12:2003					सिंह	18:12:2018
तुला	18:12:2004					कर्क	18:12:2019
वृश्चिक	18:12:2005					मिथुन	18:12:2020
धनु	18:12:2006					वृष	18:12:2021
मकर	18:12:2007					मेष	18:12:2022
कुम्भ	18:12:2008						
मीन	18:12:2009						
वृश्चिक दशा		मिथुन दशा		कुम्भ दशा		तुला दशा	
भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से	भुक्ति	से
मेष	18:12:2023	वृश्चिक	18:12:2030	मिथुन	18:12:2035	मकर	18:12:2043
वृष	18:12:2024	तुला	18:12:2031	कर्क	18:12:2036	धनु	18:12:2044
मिथुन	18:12:2025	कन्या	18:12:2032	सिंह	18:12:2037	वृश्चिक	18:12:2045
कर्क	18:12:2026	सिंह	18:12:2033	कन्या	18:12:2038		
सिंह	18:12:2027	कर्क	18:12:2034	तुला	18:12:2039		
कन्या	18:12:2028			वृश्चिक	18:12:2040		
तुला	18:12:2029			धनु	18:12:2041		
				मकर	18:12:2042		

## जातक से संबंधित सामान्य भविष्यफल

### सामान्य जानकारी :

आपकी लग्न राशि कन्या है, जिसका स्वामी बुध है। यह एक भौतिक, साधारण तथा लचीली और वायु तत्व की राशि है। विशेषतः यह नीरस और मानवीय राशि है।

इस लग्न में जन्म होने के कारण आप मेधावी, अध्ययनपरायण एवं समझदार होंगे। आप विचारक, सिद्धान्तवादी तथा विधिवत कार्य करने वाले होंगे तथा ज्ञान की खोज में लगे रहेंगे। आप शांत और स्थिरदिमाग वाले होंगे, और लम्बे समय तक अपने मस्तिष्क को एकाग्रचित करके कोई कार्य कर सकते हैं। भौतिक और रसायनिक विज्ञान में आपकी गहन रुचि होगी। अनौपचारिक अध्ययन एवं अनुशंधान में भी आपकी रुचि होगी। आपका ज्ञान विस्तृत होगा, और आप वाक्पटु होंगे। आपके ये गुण दूसरों को प्रभावित करेंगे, और लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आप सतत् प्रयास और धैर्य के लिए जाने जायेंगे। अपनी भावनाओं और आवेगों पर आपका नियंत्रण होगा। आप एक कूटनीतिक और चतुर व्यक्ति होंगे। आपकी वाणी में मिठास और नम्रता होगी।

कला, संगीत और साहित्य में भी आपकी रुचि होगी, और आप इन विधाओं में निपुणता प्राप्त करेंगे। आप महत्वाकांक्षी होंगे। आप बहुत उदार और सुशील होंगे। आप सादा जीवन और ऊँचे विचार की शैली को मान्यता देंगे और कम खर्चीले होंगे। आप धार्मिक होंगे, और धर्म तथा परम्पराओं के प्रति आपके हृदय में सम्मान होगा। यात्राओं और आनन्द भ्रमण पर जाना आपको प्रिय होगा। आपमें विविध प्रकार की चीजों को इकट्ठा करने की उत्सुकता होगी जो आपकी कल्पना को जागृत करेगा। आप अपने द्वारा इकट्ठी की गई चीजों को नष्ट करने के पक्ष में नहीं होंगे।

### शारीरिक संरचना :

आपकी रंगत गोरी और व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आपके नेत्र सुन्दर और चेहरा चौड़ा होगा। आपके चेहरे पर एक मुस्कराहट विराजमान रहेगी। आप मध्यम कद के बढ़िया आकृति, पतले तथा गोल चेहरे वाले हो सकते हैं। आपका शरीर छरहरा होगा, लेकिन सीना चौड़ा होगा। आप देखने में खुवा प्रतीत होंगे। आपकी नाक सीधी और नुकीली तथा आवाज तीखी हो सकती है। आपका स्वभाव चंचल हो सकता है।

### मानसिक स्थिति :

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा कन्या राशि में स्थित है, जो बुध द्वारा संचालित होता है। यह साधारण, नकरात्मक और भौतिक राशि है। आप शांत स्वभाव के लेकिन चंचल प्रवृत्ति के हो सकते हैं। आप अधिक महत्वाकांक्षी नहीं हो सकते हैं। आप अहंकारी तथा निराधार वादे करने वालों से घृणा करेंगे। आपका बौद्धिक स्तर ऊँचा होगा तथा आप बौद्धिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। आप ऐसा कार्य करना पसंद करेंगे, जिसमें जिम्मेदारी तथा अधीनस्थता हो। आप शांतिमय तथा तनावमुक्त जीवन पसंद करेंगे।

आपका अपने परिवार से लगाव होगा, तथा आपके निकट संबंधी आपके जीवन को आनंदमय तथा खुशहाल बना देंगे। कृषि, कृषि उत्पाद, दवाईयाँ, आयुर्वेद, खाद्य पदार्थ, मिष्ठान तथा घर में प्रयोग किए जाने वाले दूसरे उपकरण आपको आकर्षित करेंगे। आप अपने सहयोगियों, वरिष्ठ अधिकारियों तथा अधीनस्थ अधिकारियों से मीठे संबंध विकसित करेंगे। यदि आपका कोई घरेलू नौकर है, तो उसका

आचरण ठीक होगा, और वो आपका आदर करेगा।

आपका स्वभाव जन्म से ही जागरूक और तेज होगा, फिर भी आप कुछ कम बोलने वाले भी हो सकते हैं, जिसके कारण आप असामान्य रूप से धैर्यवान होंगे। कम उम्र में ही आपका पारिवारिक भाग्य क्षीण होने के कारण या घरेलू विवाद, किसी तरह का प्रतिबंध या कमी आपके जीवन को पीछे की ओर खींच सकती है। औपचारिक तौर पर आप विश्लेषण विज्ञान पढ़ेंगे, लेकिन हस्तकला में भी गहरी दिलचस्पी होगी, और आप केवल सैद्धांतिक विषय पढ़ने में ही दिलचस्पी नहीं रखेंगे, बल्कि व्यावहारिक भी होंगे, और आप उनका पूर्णतया उपयोग करने में रूचि रखेंगे। आप कुछ नई जानकारियों तथा तथ्यों की खोज कर सकते हैं, या आप रोजमर्रा में प्रयोग किये जाने वाले कुछ उपकरणों का अविष्कार भी कर सकते हैं। समय के साथ-साथ आपकी परिपक्वता और भागीदारी की क्षमता बढ़ेगी, स्वभाव मिलनसार होगा, संवाद बेहतर होगा। शिक्षण या सांस्कृतिक कार्यक्रम के सिलसिले में आपके किसी दूरस्थ स्थान या विदेशजाने की भी संभावना है।

### गुण :

आपकी तार्किक क्षमता विलक्षण होगी, और आप बहुत बुद्धिमान और विवेकी होंगे। आपकी स्मरण शक्ति बहुत उत्तम होगी। आपको कई विषयों का ज्ञान होगा। आपको ललित कलाओं, जैसे संगीत, साहित्य आदि से प्रेम होगा। आप झगड़ों और कलह से दूर रहेंगे, और सौहार्द प्रिय होंगे। आप धीरे-२ और नम्रतापूर्वक बोलेंगे, तथा आपकी वाणी मृदु होगी। आप चीजों को व्यवस्थित ढंग से करना और रखना पसन्द करेंगे। आप मितव्ययी होंगे, और फिजूलखर्ची से दूर रहेंगे।

### अवगुण :

आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कभी-२ आप भ्रमित हो सकते हैं, जिससे आपको अपने निर्णय पर पहुँचने में विलम्ब हो सकता है, इस कारण से आप निरूत्साहित हो सकते हैं। आपका मिजाज गर्म हो सकता है। आप सभी पर शक कर सकते हैं, और हर एक को स्वार्थी समझ सकते हैं। आप छद्म रूप से दंभी हो सकते हैं। आप नकचढे हो सकते हैं, और आपको खुश करना कठिन हो सकता है। आप दूसरों के धन और घर का लाभ उठा सकते हैं। आप आवेगी हो सकते हैं। आपमें प्रतिशोध की भावना हो सकती है। आपका वास्तविकता से कोई नाता नहीं हो सकता है, और आप सपनों के संसार में विचरण कर सकते हैं।

### विशेष लक्षण :

- १) आप कर्तव्यपरायण होंगे, और अपने कार्यों और जिम्मेदारियों को पूर्ण समर्पण के साथ निभायेंगे।
- २) चीजों का विश्लेषण करके अपनी तर्कशक्ति के आधार पर आप उनकी समालोचना करेंगे।
- ३) आपकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण होगी, और अपनी विलक्षण ग्राह्य क्षमता के कारण नवीन चीजों को आप शीघ्र आत्मसात कर लेंगे।
- ४) आप प्रत्येक कार्य विधिवत ढंग से करेंगे, और उसके हर पहलू, हर बारीकी और तथ्य पर ध्यान देंगे।
- ५) आप एक कुशल अन्वेशक होंगे, और अपने आस-पास की परिस्थितियों को जाँचने परखने की आपमें अद्भुत क्षमता होगी।

### रोजगार :

आपका मेधावी होने का गुण आपको बौद्धिक कार्यों की तरफ आकर्षित करेगा। आपके लिये ऐसे कार्य

जहाँ दिमाग का प्रयोग हो, उत्तम रहेंगे। आप सलाहकार, वकील, अध्यापक, गणितज्ञ, चिकित्सक, प्रबंधक, सांख्यिकी विद्, प्रोफेसर, काउंसलर, लेखक, लेखाकार आदि बनकर अपने भविष्य को चमका सकते हैं। आप संगीतज्ञ, अभिनेता, कमप्यूटर प्रोग्रामर, टेलीफोन ऑपरेटर, सुनार, ट्रांसपोर्टर या टूर प्रबंधक के रूप में भी प्रगति कर सकते हैं।

### शुभ एवं अशुभ ग्रह :

- १) आपके लग्न का स्वामी बुध होने के कारण वह आपके लिये सबसे शुभ होगा।
- २) द्वितीयेश और नवमेश शुक्र एक लाभकारी ग्रह होगा।
- ३) तृतीयेश और अष्टमेश मंगल अति अशुभ होगा। एकादशेश चन्द्रमा भी शुभ है।
- ४) बृहस्पति सप्तमेश होने के कारण मारकेश है।

### कन्या लग्न वाले कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्ति :

अजरूद्दीन, सचिन तेंदुलकर, वेंकटेश प्रसाद - क्रिकेटर, जॉन एफ कैनेडी, बिल क्लीटन - पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति, प्रिंसेस डायना - वेल्स की राजकुमारी, मुजीबुर रहमान - बांग्लादेश के जन्मदाता, राजीव गांधी, पी वी नरसिम्हा राव - पूर्व प्रधानमंत्री, लियंडर पैस - टेनिस खिलाड़ी, राधाकृष्णन - भारत के पूर्व राष्ट्रपति

## जन्म कुण्डली में प्राप्त विभिन्न ज्योतिषीय गणनाओं से भविष्यफल

### जन्म कालिक ब्राह्मस्पत्य (संवत्सर) का भविष्यफल-

आपका जन्म प्रमादी संवत्सर में हुआ है। यदि कुछ अनुकूल योग आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, और / या यदि कुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो आपको प्रतिकूल परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप बहुत बुद्धिमान या ज्ञानी नहीं हो सकते हैं, और आप एक उत्तम जीविका अर्जित करने में निपुण नहीं हो सकते हैं। आप अत्याधिक दंभी स्वभाव वाले, विद्वेषी, लालची व्यक्ति हो सकते हैं। आप विचारहीन और झगड़ालू हो सकते हैं, कई लोगों का विरोध कर सकते हैं, और बुरे कामों को करने में आपको विशेष सुख मिल सकता है।

### जन्म कालिक सौर अयन का भविष्यफल-

आपका जन्म सूर्य के दक्षिणायन ( या यमयायन) में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल नहीं हैं। आप कुछ हद तक दंभी और हठी प्रकृति, या असहिष्णु स्वभाव वाले व्यक्ति हो सकते हैं। यदि कुछ अनुकूल रवि योग कुण्डली (शुभ करतरी, उभयाचरी, वेशी, वोशी आदि) में मौजूद हैं, तो स्थितियों में बेहतरी के लिये सुधार होगा, लेकिन यदि सूर्य पाप करतरी योग में है, या अगली अधिकृत राशि में नैसर्गिक अशुभ ग्रह हैं, तो आप कठोर हृदयी या कपटी हो सकते हैं, आप अपनी जीविका कृषि और/ या मवेशियों के पालन से अर्जित कर सकते हैं, साथ ही आप कुछ ऐसे कामों को करने में संलग्न हो सकते हैं, जहाँ पर पारिश्रमिक किये गये प्रयासों की तुलना में बिल्कुल भी सामंजस्य पूर्ण नहीं हो सकता है।

### जन्म कालिक ऋतु का भविष्यफल-

आपका जन्म हेमन्त ऋतु में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल हैं। आप बहुत बुद्धिमान, विचारवान, ज्ञानी और विवेकी व्यक्ति होंगे। आप एक खुले दिमाग, उदार प्रवृत्ति वाले व्यक्ति होंगे, और हमेशा उचित कामों को करने में संलग्न रहेंगे। आपका धार्मिकरूढ़ान उत्कृष्ट होगा, और आप अपनी जीविका एक वरिष्ठ सलाहकार बन कर अर्जित कर सकते हैं। आप एक सुन्दर आचरण और सुशील स्वभाव वाले व्यक्ति होंगे - जिससे लोग आपको सम्मान देंगे।

### जन्म कालिक मास का भविष्यफल-

आपका जन्म पौष मास ( दिसम्बर/ जनवरी) में हुआ है। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डलीमें मौजूद नहीं हैं, तो संकेत बहुत अनुकूल नहीं हैं। यद्यपि आप आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर रूप वाले होंगे, फिर भी आपकी संरचना कमजोर हो सकती है- यदि आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। आपको अपने माता पिता से आर्थिक सहायता नहीं प्राप्त हो सकती है, फिर भी आप लापरवाही से व्यय कर सकते हैं। साथ ही, आप रहस्यमयी प्रकृति के हो सकते हैं, और अपने विचार तथा निर्णय अपने तकसीमित रख सकते हैं - जिससे आप अपने शत्रुओं को आघात पहुँचा सकते हैं। सुखद पहलू यह है, कि आप धार्मिक विचारों वाले, पवित्र शास्त्रों के अध्ययन के शौकीन होंगे, और विद्वानों तथा धर्मपरायण लोगों का उचित सम्मान करेंगे।

### जन्म कालिक पक्ष का भविष्यफल-

आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल नहीं हैं। आपकी संरचना कुछ हद तक कमजोर हो सकती है, और आप रोग से ग्रसित

हो सकते हैं। आपकी प्रकृति अशांत और स्वभाव अस्थिर हो सकता है। आप पर झगड़ालू होने की छाप लग सकती है। आप बहुत भावुक हो सकते हैं, चीजों को उनके उचित परिपेक्ष्य में देखे बिना आप राई का पहाड़ बना सकते हैं। इसके अलावा, आप कामुक हो सकते हैं, और अपने जीवन साथी की चापलू सीकर सकते हैं।

जैसाकि आपकी कुण्डली में शुभ ग्रह बृहस्पति चन्द्रमा के साथ स्थित है (या इस पर उसकी दृष्टि है), आप मानसिक शांति और मिजाज की समता से पूर्ण होंगे। आप खुले विचारों, आशावादी दृष्टिकोण और परोपकारी स्वभाव वाले होंगे। आर्थिक रूप से आप काफी संपन्न होंगे, और आपके मित्रों तथा परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा। आप हमेशा स्वयं निर्णय करने की स्थिति में होंगे, और आपके दायरे के लोग कुछ महत्वपूर्ण मामलों में आपकी कीमती राय या सलाह ले सकते हैं।

### जन्म कालिक दिन का भविष्यफल-

आपका जन्म मंगल को हुआ है। दिवसपति मंगल की स्थिति आपकी कुण्डली में काफी महत्वपूर्ण है। इसका फल - भाव में यह स्थिति के अनुसार - और भी अधिक महत्वपूर्ण होगा। इसके अलावा सारी सामान्य स्थिति आपके पक्ष में है। आप बहुत गुणी होंगे। आप उत्तम चरित्र वाले व्यक्ति होंगे। आप पूर्णलगा से अपने कार्य को करेंगे, आपमें अचानक ही नई शक्ति का प्रवाह होगा। आप अपने बोलचाल और वाकचातुर्य से सभी मुश्किलों को पार करेंगे। आप अपनी आजीविका का उपार्जन धातु, चल-अचलसम्पत्ति अथवा रोजगार जैसे पुलिस, सुरक्षा आदि से करेंगे।

### दिन या रात के जन्म का भविष्यफल-

आपका जन्म रात्रि के समय हुआ है। अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप आलसी तथा दिन में भी सोने वाले हो सकते हैं। आप कुछ गोपनीय स्वभाव के हो सकते हैं और आप अपनी अभिलाषाएँ गुप्त रखना चाहेंगे। इसके अलावा, आप कुछ कामुक स्वभाव के हो सकते हैं, जिसकी वजह से आप अपने जीवनसाथी से दबे हो सकते हैं। यदि आपके लग्न में कोई ग्रह स्थित है या अपनी दृष्टि डाल रहा है तो आप कर्मठ, उत्साही, मेहनती तथा प्रतिभाशाली होंगे।

### जन्म कालिक सूर्य सिद्धान्त योग का भविष्यफल -

सूर्य-सिद्धान्त के अनुसार आपका जन्म सौभाग्य योग में हुआ है। यह एक उत्तम योग है। इस योग में जन्म लेने के कारण आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप शिक्षित तथा बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा हमेशा सही मार्ग पर चलेगें। आम लोग आपके व्यवहार, विवेक, बुद्धिमत्ता और दृढ़दर्शिता के कारण आपका सम्मान करेंगे तथा आपसे खुद से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर सलाह लेंगे।

### जन्म कालिक तिथी का भविष्यफल-

आपका जन्म नवमी तिथि को हुआ है। अगर कोई शुभ ग्रह चन्द्रमा से जुड़ा हुआ है या इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है तो परिणाम काफी लाभदायक होगा। आप अपने पिता के काफी नजदीक होंगे तथा शिक्षकों एवं गुरुओं का काफी सम्मान करेंगे लेकिन आपका स्वभाव दूसरों से भिन्न हो सकता है, जिसकी वजह से कुछ अपने लोग आपका विरोध कर सकते हैं और आपसे फायदा उठा सकते हैं। आप धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे और आपका निर्णय प्रशंसनीय होगा। लेकिन यदि कोई अशुभ ग्रह चन्द्रमा से जुड़ा है या इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है तो आप भ्रष्ट हो सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपके बुरे आचरण के लिए आपकी निंदा कर सकते हैं।



### जन्म कालिक करन का भविष्यफल-

आपका जन्म गरिजा करन में हुआ है। यह चर श्रेणी का पाँचवा करन है। आप उत्तम स्वास्थ्य, सुदृढ़ शारीरिक गठन, आकर्षक व्यक्तित्व और सुखद आचरण के स्वामी होंगे। आप विद्वान, बुद्धिमान, उदार, सम्मानीय तथा दूसरों को लाभ देने वाले व्यक्ति होंगे। आप चतुर और बुद्धिमान होंगे। आप अपने सभी शत्रुओं को दबाने में सक्षम होंगे, लेकिन आप ऐसा किसी गुट, मंडली या चालाकी भरे कामों का सहारा लिए बगैर करेंगे। आपकी सफलता की कुंजी आपका धैर्य, बुद्धिमता, दृढ़ता तथा समय पर कार्य है। आपआगे बढ़ने में सक्षम होंगे और अपने समकालीनों से काफी आगे निकल जाएँगे।

### जन्म कालिक नक्षत्र का भविष्यफल-

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा हस्त नक्षत्र में स्थित है। जैसाकि चन्द्रमा अपने नक्षत्र में स्थित है, अतः आपकई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप सक्रिय, संवेदनशील, और विचारपूर्ण व्यक्ति होंगे। आप तीक्ष्णबुद्धिमान और सुशिक्षित व्यक्ति होंगे, इसके अलावा, पवित्र तथा प्राचीन शास्त्रों को पढ़ने में आपकी गहरी रूचि होगी। साथ ही आप ललित कलाओं में कुछ निपुण हो सकते हैं। आप रचनात्मक कल्पनाशीलता और ऊँचे विचारों से पूर्ण होंगे। आप लेखक, संपादक, आलोचक आदि के रूप में ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। आपके व्यवसाय का कुछ संबंध महापालिका, जलीय कामों, मर्चेट नेवी, आयात निर्यात आदि से हो सकता है, आपकी आय बहुत उत्तम हो सकती है।

## कुण्डली में लागू हो रहे योग (ग्रह-युति)

### कुण्डली में हो लागू हो रहे महत्वपूर्ण योग-

आपकी कुण्डली में, चतुर्थेश नीच या शत्रु राशि में स्थित है या एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ में स्थित है, या एक बुरे षष्ठीअंश में स्थित है। यह एक बहुत प्रतिकूल युति है, जिसे बन्धुभीसत्यकता योगकहते हैं। यदि कुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो इस युति की उपस्थितिके कारण, आपके अपने संबंधी और मित्र जीवन में कभी आपको त्याग सकते हैं - यद्यपि आपकी किसी छोटी सी गलती या बिना किसी वास्तविक दोष के कारण।

आपकी कुण्डली में, पंचमेश बली नहीं है- तुंगस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं होने के कारण। इसके अलावा, यह केन्द्रीय भाव या त्रिकोण भाव में है। इस युति को एक पुत्र योग कहते हैं। यदिकुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो आपके केवल एक संतान हो सकती है - जो काफी हद तक एक पुत्र होगा।

आपकी कुण्डली में, द्वितीयेश चतुर्थेश के साथ या उसकी दृष्टि इस में है, जबकि ये दोनों ग्रह ना ही अस्त और ना ही ग्रसित हैं। यह एक अनुकूल युति है, जिसे मातृ मूलत धन योग कहते हैं। इस योग कीउपस्थिति के कारण, आपको अपनी माता से आर्थिक लाभ होगा।

आप एक पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ ५वें भाव में स्थित हैं। ५वें भाव में कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित नहीं है, या उसकी दृष्टि इस भाव में नहीं है। यह एक बहुत अनुकूल युति है, जिसे अपत्य सुख योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस युति के होने के कारण, आप योग्य संतानों को प्राप्त करने में विशेषरूप से भाग्यशाली होंगे- जो आपके परिवार के लिये सुख और गर्व का सदा कारण बनेगी।

आपकी कुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक शुक्र वकी या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अलावा, यहसबसे उत्तम नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति के साथ है या उसकी दृष्टि इस पर है। यह एक अनुकूल युतिहै, जिसे सत कलत्र योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस योग के गुणों कारण, जीवन साथी के मामलें में, आप बहुत भाग्यशाली होंगे- जो एक कुलीन परिवार से होंगी, और सद्गुणों और विशेषताओं से भरपूर होंगी।

आपकी कुण्डली में, द्वितीयेश एक नैसर्गिक शुभ ग्रह साथ में है, और यह केन्द्रीय या त्रिक भाव में स्थितहै। समग्ररूप से यह एक बहुत अनुकूल युति है, जिसे युक्तिसमन्वित वाग्मि योग कहते हैं। आपकोवाक्पटुता का नैसर्गिक उपहार प्राप्त होगा, और अपनी अकाट्य तर्क शक्ति और भाषण दक्षता के कारण आप सुविख्यात होंगे। आप सभाओं में अपनी चमक बिखेर सकते हैं, और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं।

### कुण्डली में लागू हो रहे धन योग -

आपकी कुण्डली में ८वें भाव(धन) का स्वामी उत्तम स्थिति में है, आप आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे, आपको एक मोहक पद प्राप्त होने की काफी संभावना है, और आपको उत्तम नौकरी प्राप्त होगी-

संभवतः आपके पेशे का संबंध बीमा, प्रॉविडेंट फंड, राजस्व आदि से हो सकता है। साथ ही, आपको अपनी शादी या व्यावसायिक भागीदार से आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे, साथ ही, आप कुछ प्रमुख वित्तीय संस्थानों से, अपना नया उपक्रम शुरू करने के लिये भारी ऋण प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बहुत ही शुभ युति बन रही है। अपने स्वयं के कठिन प्रयत्नों और अपनी मनाशक्ति के द्वारा आप अपने समकालीनों से बहुत अधिक प्रगति करेंगे। आपकी महत्वाकांक्षा फलीभूत होगी, और अवलम्बित अभिलाषायें पूरी होंगी। आपके चारों तरफ के लोग आपको एक अनुकरणीय और प्रेरणादायक व्यक्ति मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतान, संबंधी और मित्रों के साथ एक खुशहाल और समृद्धिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे।

आपकी कुण्डली में, लग्नेश और बृहस्पति एक साथ हैं, जो एक अनुकूल स्थिति में है, जिससे एक शुभधन योग बनता है। आप धन के मामलों में भाग्यशाली होंगे, आय बहुत उत्तम होगी, और अवश्य बहुत धनी होंगे।

आपकी कुण्डली में, चतुर्थेश द्वितीयेश के साथ (या इसकी इस पर दृष्टि है) है, जैसाकि इन दोनों में से कोई भी ग्रह किसी भी प्रकार से पीड़ित नहीं है। आप अपनी माता के संदर्भ में भाग्यशाली होंगे, और उनसे धन दौलत प्राप्त करेंगे। आपको अपने संबंधियों और कृषि से भी लाभ प्राप्त हो सकता है।

जैसाकि आपकी कुण्डली में, 99वाँ भाव जल तत्व की राशि के साथ है, आप अपने जन्मस्थान या निवासस्थान से उत्तर की दिशा में स्थित जगहों पर या से उत्तम लाभ कमा सकते हैं।

### कुण्डली में लागू हो रहे वित्तहानि योग-

आपकी कुण्डली में, अति अशुभ ग्रह ढवें भाव में स्थित है, इस पर किसी शुभ ग्रह का प्रभाव नहीं है। यद्यपि आप काफी धनाढ्य होंगे, फिर भी आपको बहुत सावधान और सजग रहना चाहिये, और अनावश्यक रूप से अधिक जोखिम नहीं उठाना चाहिये। आपको गम्भीर प्रकार की अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है, इस बात की भी संभावना है कि आप किसी को गहरी चोट पहुँचा सकते हैं - जिससे आपको फँसाया या दंडित किया जा सकता है।

### कुण्डली में लागू हो रहे नभष योग-

आपकी कुण्डली में मौजूद इस नभष योग को दामिनी योग कहते हैं। यह एक प्रशंसनीय ग्रह युति है। आप बहुत समृद्ध होंगे, आप सज्जन और सहिष्णु प्रकृति के एक बहुत विद्वान व्यक्ति होंगे। आप उदार होंगे, और दूसरों के प्रति आपके दिल में करुणा भाव होगा। आपमें जानवरों के प्रति दया होगी, और आप उनकी किसी प्रकार से सेवा कर सकते हैं। आप परम्परागत धार्मिक कार्यों को करेंगे, और एक शान्त और खुशहाल वैवाहिक जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे, आपको योग्य और कर्तव्यपरायण संतान का सुख मिलेगा। आपके नाम और यश का डंका चारों दिशाओं में गूँजेगा।

### कुण्डली में लागू हो रहे अरिष्ट योग-

आपकी कुण्डली में, सूर्य और राहु ४थे भाव में स्थित हैं, जबकि उनमें से कोई भी तुंगस्थ या अपने भाव में नहीं है। यह एक प्रतिकूल अरिष्ट योग युति है। आपके पिता को आपके जन्म के समय कुछ कष्टका सामना करना पड़ा हो सकता है, और उनका स्वास्थ्य और सुख आपके परिवार के सदस्यों के

लिये गंभीर चिन्ता का विषय रहा हो सकता है। यदि कुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो आपके पिता की मानसिक दशा का उनके जीवन के किसी दौर में कुछ हद तक ह्रास हो सकता है।

### कुण्डली में लागू हो रहे रवि योग-

आपकी कुण्डली में सूर्य से दूसरे भाव में चन्द्रमा के अलावा एक ग्रह मौजूद है, और ऐसा ही ग्रह सूर्य से 92वें भाव में स्थित है, यह एक ग्रह युति बनाता है, जिसे उभयचरी योग कहते हैं। इसके अलावा जैसाकि ये दोनों ग्रह प्राकृतिक रूप से शुभ ग्रह हैं, युति बहुत शुभ होगी, क्योंकि आपकी कुण्डली में सूर्य शुभकरतारी योग में है। इस पूरी युति को उभयचरी शुभ करतरी योग कहते हैं। जैसाकि यह योग कई अनुकूल परिणामों और शुभ घटनाओं को दर्शाता है, आपका जन्म धनी परिवार में हुआ है, और आप अपने जीवन के काफी प्रारम्भिक आयु काल में निश्चित रूप से विशिष्ट स्थान तक पहुँचेंगे। आपको सरकारी साधनों से लाभ प्राप्त होगा, जीवन के सभी सुखों और आराम का आनन्द मिलेगा, और आपके नाम तथा यश की पताका हर तरफ फहरायेगी।

## ग्रहों के लिए रत्न और रूद्राक्ष

लग्नाधिपति के लिए रत्न

आपका लग्न स्वामी बुध है। चूँकि यह न तो नीचस्थ है और न ही त्रिका भाव में विराजमान है और न ही मारक भाव में स्थित है, इसलिए आप बुध के लिए रत्न पहन सकते हैं।

सोने की अँगुठी में पांच या सात रत्ती का पन्ना डलवाकर इसे बुधवार के दिन दाहिने हाथ की छोटी या मध्य ऊँगली में पहनें। यदि आप पन्ना पाने में सक्षम नहीं हैं तो इसकी जगह एक्वामरीन, पैरिडोट रत्न, हरितमणि या हरा तुरमली भी पहना जा सकता है।

“रत्न धारण करते समय निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:

व्यासदेव का वेदिक मंत्र :

प्रियगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्,  
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधम् प्रणमाम्यहम्।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् ब्रम् ब्रीम् ब्रूम् सह बुधवे नमः।

बीज मंत्र :

ओऽम् ब्रू म ब्रीम बुधवे नमः।

नौवें भाव के स्वामी के लिए रत्न

चूँकि आपकी कुण्डली में नौवें घर का स्वामी मारक भाव का स्वामी है, इसलिए नौवें घर के स्वामी के लिए रत्न पहनना उपयुक्त है।

योग कारक ग्रह के लिए रत्न

आपकी कुण्डली में कोई प्राकृतिक योग-कारक ग्रह नहीं है

तात्कालिक योग कारक ग्रह के लिए

रत्न

शनि ग्रह आपकी कुण्डली में तात्कालिक योग-कारक है। चूँकि तात्कालिक योग-कारक ग्रह न तो तुंगस्थ है, न ही नीचस्थ है और न ही अपने भाव में स्थित है, इसलिए आप शनि ग्रह के लिए रत्न पहन सकते हैं।

सोने की अँगुठी में पांच या सात रत्ती का नीलम डलवाकर इसे शनिवार के दिन दाहिने हाथ की मध्य उँगली में धारण करें। यदि आप नीलम लेने में अक्षम हैं तो इसके स्थान पर नीलमणि या वैदुर्य भी पहन सकते हैं।

रत्न धारण करते समय निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:

व्यासदेव का वेदिक मंत्र :

नीलण्जनसंभूतम् रविमुत्रम यमाग्रजम्,  
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् प्रम् प्रीम् प्रोम् सह शनिश्चराय नमः।

बीज मंत्र :

सम् शनिश्चराय नमः।

## रूद्राक्ष के लिए सुझाव

आपका जन्म नवमी तिथि को हुआ है, इसलिए आपके लिए नौ मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्ट देव शक्ति हैं। हालाँकि ये नवरात्र (दशहरा या दूर्गा पूजा) के दौरान दुर्बल होते हैं। ये ऊर्जा और शक्ति प्रदान करते हैं, जिसकी सहायता से हमें धन की प्राप्ति होती है तथा हर कार्य में हम सफलता प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष को धारण करते समय आपको निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:  
रूद्राक्ष के लिए मंत्र:

ओऽम् ह्रिम् हम् नमः।

रूद्राक्ष के लिए पंचाक्षरी मंत्र:

ओऽम् ह्रिम् व्यम् र्म् लम्।

रूद्राक्ष के लिए दुसरे अन्य सुझाव :

चूँकि आपके चन्द्रमा का नक्षत्र स्वामी चन्द्रमा है, इसलिए आपके लिए दो मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जाँच:

(अ) तैरान जाँच :- पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डुब जाता है तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष झूठा है।

(ब) तौबा जाँच :- असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तौबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटका कर तौबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेंगे। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है तो ये असली हैं।

(वि प्रा - भद्राक्ष भी रूद्राक्ष की तरह होता है, परन्तु यह मृदुल रंग एवं कम ताप देने वाला होता है।)

(स) दूध जाँच :- एक कप दूध के अंदर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखिये। यदि दूध खराब नहीं होता है तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो झूठा है।

वि प्रा - असली रूद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष की जगह आपको भद्राक्ष पहनना

चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकरका आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए मंत्र:-

ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्र:-

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके  
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।



## विमशोत्तरी दशा से भविष्यफल

### चन्द्र दशा

(18:12:1973--14:06:1979)

### शनि अर्न्तदशा

(18:12:1973--14:04:1975)

यदि इनमें से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में ठीक से स्थित नहीं है तो यह समय आपके लिए ठीकही होगा। अन्यथा यह समय आपके लिए ठीक नहीं होगा। आपको सावधान और सचेत रहना चाहिए। आपको अपने शब्दों पर ध्यान देना चाहिए और कोई भी बड़ा कदम उठाने से पहले आपको काफी सोच-विचार करना चाहिए। आपको अति-आत्मविश्वास से काम नहीं लेना चाहिए अन्यथा आप परेशानी में पड़ सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी, अथवा मित्र या किसी प्रिय के बिछुड़ने की वजह से मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्य स्थल पर भी आपको कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है और आप इससे निकलने की कोशिश करने के बावजूद भी नहीं निकल पायेगे। आपको हानि भी हो सकती है और आप अपने किये हुये वादों को पूरा करने की स्थिति में नहीं होंगे। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है और आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में चन्द्रमा और शनि ग्रसित हैं तो आपको सामान्य लोगों में अपमानित होना पड़ सकता है। यदि आपका लग्न कर्क है तो यह लग्नपति एवं अष्टमपति का सयुक्त रूप से समय है, जिसकी वजह से आपको कुछ गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और किसी दुर्घटना से भी इंकार नहीं किया जा सकता है।

### बुध अर्न्तदशा

(14:04:1975--13:09:1976)

यह आपके लिए एक आनंदायक समय होगा। आपका दिमाग शांत, बुद्धि पैनी, विचार साफ और कल्पना सकारात्मक होगा। आपकी बौद्धिक क्षमता होगी और आप जो कल्पना करेंगे उसे कार्यान्वित करने की स्थिति में होंगे। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधि में संलग्न हैं तो निश्चित रूप से आप सफल होंगे। आप सारे विवादों से मुक्त होंगे और अपने जीवनसाथी और संतानों या प्रेमी और मित्रों के साथ खुशी महसूस करेंगे। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और आपकी सामाजिक लोकप्रियता बढ़ेगी। आप कम दूरी की कुछ यात्राएँ कर सकते हैं और पिकनिक या सैर-सपाटे में हिस्सा लेंगे। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा और आपकी आमदनी बढ़ेगी। यदि आप किसी व्यवसाय में हैं तो काफी तेजी से आगे बढ़ेंगे और इसके विस्तार या कोई नया क्षेत्र चुनने के लिए प्रभावी उपाय करेंगे। आपका घरेलू जीवन शांतिमय और सुखमय होगा। यदि बुध आपकी कुण्डली में ग्रसित है तो आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय बन सकता है। यदि दोनो ग्रह ग्रसित हैं तो तात्कालिक रूप से आप अपनी बुद्धि का औचित्य खो सकते हैं और निरर्थक तथा भ्रामक बातों से लोगों को चौंका सकते हैं।

### केतु अर्न्तदशा

(13:09:1976--14:04:1977)

यदि आपकी कुण्डली में ये दोनो ग्रह ठीक स्थिति में नहीं हैं तो यह समय आपके लिए भाग्यशाली नहीं होगा। आपको कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है और आपके दिमाग में डर और चिन्ता भरा हो सकता है। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधि में संलग्न हैं तो आपको निराशा हो

सकती है। यदि आप किसी नौकरी में हैं तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों का कोपभाजन बनना पड़ सकता है। यदि आप व्यवसाय में हैं तो आप अपनी भ्रामक बातों से लोगों को विरोधी बना सकते हैं और आलोचनाओं को आमंत्रित कर सकते हैं। आपके मान-सम्मान और विश्वसनीयता पर आँच आ सकती है। आपका स्वास्थ्य भी गड़बड़ हो सकता है और आप तेज बुखार, फोड़ा, ग्रंथि में सूजन अथवा आंखों के रोग से पीड़ित हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में केतू एक या अधिक ग्रहों से ग्रसित है तो आपको बिजली से सम्बन्धित कार्यों और उपकरणों से दूर रहने की आवश्यकता है। यदि केतू आपकी कुण्डली में वृहस्पति अथवा शुक्र ग्रह के राशि या नक्षत्र में बैठा है तो आपकी परेशानियों में कुछ कमी हो सकती है।

### शुक्र अर्न्तदशा

(14:04:1977--13:12:1978)

यह समय आपके लिए काफी आनंदायक होगा, यह और भी भाग्यशाली हो सकता है यदि आपकी कुण्डली में चन्द्रमा और शुक्र एक साथ वृष राशि में बैठे हों। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र चन्द्रमा से गिनती करने पर केन्द्र में स्थित है तो भी यह समय आपके लिए अत्यंत सुखमय होगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आप विपरित लिंगी व्यक्तियों के साथ सुखपूर्वक जीवन का आनंद उठायेगें। यदि आप वयस्क हैं तो आप किसी प्रेम प्रसंग में पड़ सकते हैं और आपका विवाह भी हो सकता है। काव्य एवं संगीत में आपकी रूचि बढ़ेगी और आप महँगे मनोरंजन के साधन खरीदेंगे। यदि आप कलात्मक कार्य में संलग्न हैं तो आपको यथोचित सफलता प्राप्त होगी। आपके परिवार में कोई शुभ आयोजन हो सकता है और सामाजिक मिलन में आप आकर्षण का केन्द्र होंगे। आप अपनी रोजगार के सिलसिले में किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं। आपको अपनी यात्रा के दौरान सावधान और सचेत रहना चाहिए अन्यथा आपका धन चोरी हो सकता है। यदि आपका लग्न तुला है तो जैसा कि यह लग्नपति और दशमपति का सम्मिलित रूप से समय है, निश्चित रूप से आप कोई सम्मानीय पाएँगे।

### सूर्य अर्न्तदशा

(13:12:1978--14:06:1979)

यदि इनमें से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में ठीक स्थिति में नहीं हैं तो यह समय आपके लिए ठीक नहीं होगा। आपका स्वास्थ्य गड़बड़ हो सकता है। आपको अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। आप बुखार और आँखों की बिमारियों से ग्रसित हो सकते हैं और यदि चन्द्रमा आपकी कुण्डली में अस्त है तो आपका स्वास्थ्य और भी सोचनीय हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य ठीक स्थिति में है तो आप अपने प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेंगे और सरकारी स्रोतों से लाभ प्राप्त करेंगे। यदि चन्द्रमा आपकी कुण्डली में ठीक स्थिति में है तो यह समय आपके लिए ठीक होगा और आप विभिन्न कार्यों से जुड़े व्यक्तियों से मधुर सम्बन्ध बनायेंगे और उनसे प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेंगे। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में सूर्य एक या अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आपको निराशा हो सकती है और आपके मान-सम्मान की क्षति हो सकती है। और यदि आपकी कुण्डली में चन्द्रमा एक या अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आप काफी निराशा का समाना कर सकते हैं। यदि आपका लग्न कुंभ है तो आपके रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। यदि आपका लग्न मकर है तो आपके जीवनसाथी आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। यदि आपका लग्न सिंह है तो आपको चिकित्सा पर काफी धन व्यय करना पड़ सकता है या आपका काफी धन निरर्थक व्यय हो सकता है।

### मंगल दशा

(14:06:1979--14:06:1986)

## मंगल अर्न्तदशा

(14:06:1979--10:11:1979)

यदि आपकी कुण्डली में मंगल तुंगस्थ है या अपनी राशि अथवा अपने नक्षत्र में स्थित है अथवा आपके लग्न से दशम भाव में स्थित होकर दिक् बल बना रहा है तो यह समय आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगा। आप बहुत ही प्रभावशाली स्थिति पाएंगे, आमदनी बढ़ेगी, काफी धन संचित करेंगे और कोई नई संपत्ति खरीदेंगे। यदि आपकी कुण्डली में मंगल चन्द्रमा के साथ स्थित है तो यह समय आपके लिए धन के मामले में काफी भाग्यशाली होगा। यदि मंगल आपकी कुण्डली में ग्रसित है तो आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता के साथ मुसीबत में पड़ सकते हैं और कुछ कारणों से चिंतित हो सकते हैं। कुछ इर्ष्यालु व्यक्ति आपके लिए परेशानियाँ खड़ी कर सकते हैं, अपने दोस्तों की सहानुभूति खो सकते हैं और अपरिचित लोग भी आपके लिए परेशानियाँ खड़ी कर सकते हैं। यदि मंगल आपकी कुण्डली में शुभ है तो ये परेशानियाँ आपके लिए कम हो जायेगी। यदि मंगल आपकी कुण्डली में छठे घर में स्थित है तो आप प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में मंगल एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आप दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आप पुलिस के चक्कर में पड़ सकते हैं और यदि मंगल आठवें घर में स्थित है तो आपकी परेशानियाँ बढ़ सकती हैं। यदि मंगल कुंभ राशि में स्थित है तो आपको ऊँचे रक्तचाप की शिकायत हो सकती है।

## राहु अर्न्तदशा

(10:11:1979--28:11:1980)

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनों ग्रहों में से कम से कम एक ग्रह भी ठीक स्थिति में है तो यह समय आपके लिए अनुकूल हो सकता है अन्यथा निश्चित रूप से यह समय ठीक नहीं है। आपको हमेशा सिर दर्द की शिकायत हो सकती है, और कभी-कभी बुखार हो सकता है। आप घातक रसायनों की वजह से चर्म रोगों के शिकार हो सकते हैं। आपको इस बात का हमेशा ख्याल रखना चाहिए कि आप किसी भी बुरे या संदिग्ध चरित्र वाले व्यक्ति से नहीं मिले-जुले, अन्यथा आप गहरी मुसीबत में फँस सकते हैं और समाज में आपकी मान-मर्यादा की क्षति हो सकती है। आपको धन के लेन-देन तथा निवेश में सावधानी बरतने की जरूरत है अन्यथा धन हानि की संभावना है। यदि आपकी कुण्डली में मंगल एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आप ग्रंथि में सूजन के शिकार हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में दोनों ग्रह ग्रसित हैं तो जो कम ग्रसित होगा, उससे परिणाम निकाला जाएगा।

## गुरु अर्न्तदशा

(28:11:1980--04:11:1981)

यदि आपकी कुण्डली में वृहस्पति तुंगस्थ है या अपनी राशि अथवा अपने नक्षत्र में स्थित है तो यह समय आपके लिए काफी भाग्यशाली होगा। आप कई मामलों में तेजी से उन्नति करेंगे और आपकी चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आप कोई नयी सम्पत्ति का क्रय कर सकते हैं। यदि आपका लग्न वृश्चिक अथवा मीन है तो आप और भी भाग्यशाली हो सकते हैं। अन्यथा इस दशा का उत्तरार्द्ध इसके पूर्वार्द्ध से अधिक लाभदायक होगा। पूर्वार्द्ध में आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं और कुछ इर्ष्यालु व्यक्ति आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। यह और भी परेशानियों से भरा हो सकता है यदि आपकी कुण्डली में मंगल और वृहस्पति एक दूसरे पर विपरीत दृष्टिपात कर रहे हों। उत्तरार्द्ध में आपको कई सारे सुअवसर प्राप्त होंगे और आप प्रभावशाली व्यक्तियों से सहयोग और धन की प्राप्ति करेंगे। यदि आपकी कुण्डली में वृहस्पति कुंभ राशि में स्थित है तो

आपको ऊँचे रक्तचाप की शिकायत हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में वृहस्पति एक या अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो संपत्ति के मामले में आपको अपने मकान मालिक या किरायेदार के साथ गहरा विवाद हो सकता है जिसकी वजह से वो पुलिस की मदद भी ले सकता है। आपको पुलिस का ध्यान खींचना चाहिए और किसी वकील से संपर्क करना चाहिए।

### शनि अर्न्तदशा

(04:11:1981--13:12:1982)

यदि आपकी कुण्डली में इनमें से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में है तो यह समय आपके लिए व्यस्तताओं से भरा होगा और आप बहुत सारे रचनात्मक कार्यों में एक साथ लगे होंगे। यदि आपका लग्नमेष है तो, जैसा कि यह लग्नपति और दशमपति का सम्मिलित समय है, आप निश्चित रूप से कोई प्रतिष्ठित पाएँगे और आपके मान-मर्यादा में बेतहाशा वृद्धि होगी। अन्यथा यह समय दो परस्पर विरोधी अशुभ ग्रहों का सम्मिलित समय है, इसलिए आपको सावधान और सचेत रहने की जरूरत है। यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो यह समय आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है। आप बहुत सारे विवादों में फँस सकते हैं जिसकी वजह से लम्बे समय तक चलने वाली मुकदमे बाजी से आपकी पाला पड़ सकता है। यदि आपकी कुण्डली में मंगल और शनि विपरीत अथवा परस्पर वर्गीय दृष्टिपात कर रहे हैं तो आपकी परेशानियाँ बढ़ सकती हैं। कार्य स्थल पर भी आपकी परेशानियों में इजाफा होगा और आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। आप चिंतित हो सकते हैं। यदि आप किसी नौकरी में हैं तो आपके पद और मान-मर्यादा की क्षति हो सकती है। आपका घरेलू जीवन भी शांतिमय और सुखमय नहीं हो सकता है। यदि आप किसी व्यवसाय में संलग्न हैं तो आपको अचानक बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ सकती है।

### बुध अर्न्तदशा

(13:12:1982--10:12:1983)

यह समय कुछ मामलों में आपके लिए भाग्यशाली है। यदि आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में भाग ले रहे हैं या नौकरी के लिए आवेदन कर रहे हैं तो निश्चित ही आपको सफलता प्राप्त होगी। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधियों में संलग्न हैं तो आपको आशातीत सफलता प्राप्त होगी। यदि आप विज्ञान अथवा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हैं तो बड़ी सफलताएँ आपके हाथ लग सकती हैं। यदि बुध और मंगल एक दूसरे पर परस्पर प्रतिकूल दृष्टि डाल रहे हैं तो आपका रूझान कानून की पढाई में हो सकता है। यदि आप खेल-कूद के क्षेत्र में सक्रिय हैं तो आप उन्नति करेंगे। आपकी आय में वृद्धि होगी और आप रहन-सहन के महँगे वस्तुओं का क्रय करेंगे। आप बहुत सारे नये लोगों के साथ मधुर सम्बन्ध बनायेंगे और समाज में आपकी मान-मर्यादा में वृद्धि होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध किसी अशुभ ग्रह से ग्रसित है तो आपमें बहस करने का गुण हो सकता है। इसके अलावा आप किसी जहरीले डंक मारने वाले कीड़े के काटने से प्रभावित हो सकते हैं।

### केतु अर्न्तदशा

(10:12:1983--08:05:1984)

यह दशा दो बहुत ही उग्र और आग्नेय ग्रहों की है। जहाँ एक आग को संचालित करता है वहीं दूसरा धुआँ को सूचित करता है। इसलिए, यदि आपकी कुण्डली में इन दोनों ग्रहों में से कम से कम एक ग्रह भी ठीक स्थिति में है तो यह समय आपके लिए परेशानियाँ उत्पन्न कर सकता है। जैसा कि यह समय आपके लिए ठीक नहीं है, इसलिए इस दशा के दौरान आपको सावधान रहना चाहिए। आप पारिवारिक

कलह में फँस सकते हैं और आपके शुभचिंतक आपके प्रति शत्रुतापूर्ण खैया अपना सकते हैं। आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है और खासकर महिलाओं की सहानुभूति खो सकते हैं। आप मानसिक तनाव से ग्रसित रहेंगे और अक्सर उग्र भी हो सकते हैं। यदि मंगल आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है तो आप यातायात के साधनों, निर्माण कार्य, चल-अचल सम्पत्ति, रासायनिक पदार्थों एवं बिजली आदि के सामानों से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन यदि मंगल एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आपको आग एव बिजली से खतरा हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में केतू एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आपको गलत दवा या जहरीले वस्तु के सेवन से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।

### शुक्र अर्न्तदशा

(08:05:1984--08:07:1985)

यह समय आपके लिए सुखदायक होगा। आप इस दशा के दौरान खुशमिजाज बने रहेंगे। आपके दोस्तों और परिचितों की संख्या में वृद्धि होगी। आपको विपरीत लिंगी व्यक्तियों का साथ भाएगा और यदि आप अविवाहित हैं तो आप किसी प्रेम-प्रसंग में पड़ सकते हैं। आप त्योहारों, सामाजिक मिलन, एवं पर्यटन आदि का मजा लेंगे। आपकी खुशियों में और इजाफा हो सकता है यदि आपकी कुण्डली में शुक्र तुंगस्थ है या अपनी राशि अथवा अपने नक्षत्र में स्थित हो - जबकि यह न तो अस्त हो और न ही राशि से ग्रसित हो और आपकी खुशियों में कमी हो सकती है यदि शुक्र अस्त हो या राशि से ग्रसित हो। यदि वृहस्पति किसी भी तरह मंगल या शुक्र को प्रभावित कर रहा है तो हर तरफ से आपकी उन्नति हो सकती है। यदि शुक्र आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आपको फोड़े-फुन्सी, घाव अथवा चर्म रोग आदि की शिकायत हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में मंगल और शुक्र एक साथ स्थित हैं और दोनो ग्रह किसी अशुभ ग्रह की राशि या नक्षत्र में स्थित हैं तो आपको सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप किसी नाजायज संबंध में फँस सकते हैं और यह आपके और आपके परिवार के मान-मर्यादा को क्षति पहुँचा सकता है।

### सूर्य अर्न्तदशा

(08:07:1985--13:11:1985)

यद्यपि यह दशा दो आग्नेय ग्रहों की है फिर भी यह समय उतना बुरा नहीं होगा क्योंकि ये दोनो ग्रह एक दूसरे के मित्र हैं। सूर्य सत्ता को सूचित करता है और मंगल अधिकार को। इस दोनों ग्रहों का सम्मिलित प्रभाव कई मामलों में आपको लाभान्वित करेगा। आप प्रभावशाली व्यक्तियों के करीब आयेगे और उनसे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से लाभ प्राप्त करेंगे। आप और अधिक लाभान्वित हो सकते हैं, यदि इन दोनो ग्रहों में से एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है। स्वास्थ्य के मामलों में आप अधिक भाग्यशाली नहीं होंगे। शरीर में अत्यधिक ताप उत्सर्जन के कारण आप ठीक महसूस नहीं कर सकते हैं आप तेज बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं हो सकता है और वो गुस्सैल स्वभाव के हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में मंगल ग्रसित है तो आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है और आप प्रभावशाली व्यक्तियों के कोपभाजन बन सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य ग्रसित है तो आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं या आपको आग से हानि उठानी पड़ सकती है।

### चन्द्र अर्न्तदशा

(13:11:1985--14:06:1986)



यह समय आपके लिए काफी लाभदायक और आनंददायक होगा। यह और अधिक लाभदायक हो सकता है यदि मंगल और चंद्रमा आपकी कुण्डली में एक साथ स्थित हों और दोनो में से कोई भी ग्रह अस्त न हो। आप कुछ महँगी वस्तुएँ और कोई अचल सम्पत्ति का क्रय करेंगे, जिसकी वजह से आपके रहन-सहनके स्तर में सुधार होगा। आप काफी धन अपने घर के नवीनीकरण और आंतरिक सजावट पर खर्च करेंगे। आपका सामाजिक स्तर और मानसिक शांति में सुधार होगा। इस दशा के अंत में आपके आय के साधन सिकुड़ सकते हैं और संभावना है कि बिना सोच-समझे निवेश के कारण आपको नुकसान हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में मंगल एक या एक से अधिक ग्रहों से ग्रसित है तो आप कुछ लोगों के साथ सम्पत्ति के मामलों को लेकर विवाद में पड़ सकते हैं। कुछ लोग - जिनके पास प्रभावशाली लोगों का समर्थन होगा - आपकी संपत्ति का बड़ा हिस्सा आपसे हासिल करने की कोशिश कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक ग्रहों से ग्रसित है तो आप निम्न सामाजिक और आर्थिक स्तर के लोगों के साथ झगड़ा कर सकते हैं। लेकिन, अगर दोनो ग्रह ग्रसित हैं तो आपको काफी परेशानी हो सकती है और आपकी मान-मर्यादा की क्षति हो सकती है।

### राहु दशा

(14:06:1986--13:06:2004)

### राहु अर्न्तदशा

(14:06:1986--24:02:1989)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं है) तो इस दशा-काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) तो इस दशा-काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यदि राहु आपकी कुण्डली में वृष अथवा कन्या अथवा कुंभ राशि में नहीं बैठा है और यह अपने नक्षत्र में भी नहीं है तो यह समय आपके लिए कठिनाईयों से भरा हो सकता है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं हो सकता है। आपके घर और कार्य स्थल पर भी लगातार कलह होता रहेगा। आप परिस्थितियों में बदलाव की वजह से अपने किसी प्रिय से अलग हो सकते हैं और पुनः विपरीत परिस्थिति की वजह से स्थान परिवर्तन करना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं हो सकता है और आप ऐसी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं जिसका इलाज मुश्किल होगा। कुछ असामाजिक व्यक्ति आपके उपर अनाचार का झूठा आरोप लगाकर आपकी छवि खराब करने की कोशिश कर सकते हैं या झूठी योजना बनाकर आपको धोखा दे सकते हैं। आप भ्रम की स्थिति में हो सकते हैं कि क्या किया जाय और क्या न किया जाय। यदि आपकी कुण्डली में राहु किसी शुभ ग्रह के प्रभाव में है तो आपकी परेशानियाँ कम हो सकती हैं। यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के प्रभाव में है तो आप गलत दवा या जहरीले वस्तु के सेवन से परेशानी में पड़ सकते हैं। आपकी कुछ गोपनीय बातें आम लोगों के सामने आ सकती हैं जिसकी वजह से आप शर्मसार हो सकते हैं।

## गुरु अर्न्तदशा

(24:02:1989--20:07:1991)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं है) तो इस दशा-काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) तो इस दशा-काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यह आपके लिए बहुत सुखदायक समय है। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और आप चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे और आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों तथा सरकारी कर्मचारियों से प्रत्यक्ष सहयोग और अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेंगे। आपकी कुछ महत्वाकांक्षाएँ पूर्ण होंगी। आपकी आय में वृद्धि होगी, धन-संपत्ति बढ़ेगी और रहन-सहन के स्तर में सुधार होगा। आपके दोस्तों और परिचितों का दायरा बढ़ेगा। अगर आप अविवाहित हैं तो आप किसी प्रेम-प्रसंग में पड़ सकते हैं और आपका विवाह भी हो सकता है। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो आपको संतान की प्राप्ति होगी। वैसे भी, कोई विवाह या संतान उत्पन्न होने से आपके परिवार में वृद्धि हो सकती है। आपके परिवार में कोई शुभ आयोजन हो सकता है। आपका पारिवारिक जीवन शांतिमय तथा सुखमय होगा।

## शनि अर्न्तदशा

(20:07:1991--26:05:1994)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं है) तो इस दशा-काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) तो इस दशा-काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यह दो अशुभ ग्रहों का संयुक्त रूप से समय है। अगर इनमें से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावी स्थिति में नहीं है तो यह समय बहुत सारी कठिनाइयों से भरा हो सकता है। आप कलह और विवादों में फँस सकते हैं। आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि होगी और वे आपके लिए परेशानियाँ पैदा करने की कोशिश करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं हो सकता है और आप गठिया, पित्त आदि संबंधी रोगों के शिकार हो सकते हैं। आपके खर्चे आपकी आय से अधिक होंगे, जिसकी वजह से आप

अपने किये हुये वादों को निभाने में असमर्थ होंगे। इन सब कारणों से आप दुविधा में होंगे और आपको मानसिक तनाव हो सकता है। यदि इनमें से कोई भी एक ग्रह आठवें घर में बैठा है तो आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपको चिंतित कर सकता है। लेकिन अगर ये दोनो ग्रह एक साथ सातवें घर में बैठे हैं तो आपको पेशे में फायदा हो सकता है। आप किसी दूसरे समुदाय, धर्म या देश के व्यक्ति के साथ साझेदारी में काम कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

### बुध अर्न्तदशा

(26:05:1994--13:12:1996)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं है) तो इस दशा-काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) तो इस दशा-काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

इस दशा के पहले दो-तिहाई भाग के दौरान आप शैक्षणिक या बौद्धिक कार्यों में काफी व्यस्त होंगे। यदि राहु और बुध दोनो ग्रह परस्पर केन्द्र में बैठे हैं तो आप शिक्षा के क्षेत्र में कोई पदक प्राप्त कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और आप चिन्ताओं से मुक्त होंगे। आप अपने कार्य के प्रति काफी गंभीर होंगे और कई स्रोतों से धन की प्राप्ति करेंगे। आपको दूसरे लोगों से भी संपत्ति प्राप्त हो सकती है। यदि आप किसी वित्तीय संस्था से निवेश के लिए कर्ज लेना चाहते हैं तो आप सफल होंगे। यदि इनमें से कोई भी ग्रह पाँचवें घर में बैठा है तो आप प्रेम-प्रपंच में पड़ सकते हैं पर बाद में आप निराशा हो सकते हैं। इस दशा के अन्त का एक-तिहाई भाग आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है और आप दुःखी हो सकते हैं। आप अपने दोस्तों की सहानुभूति खो सकते हैं और अपने घमंडी व्यवहार की वजह से आप अपने मित्रों, परिचितों और सहकर्मियों से दुश्मनी कर लेंगे।

### केतु अर्न्तदशा

(13:12:1996--31:12:1997)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं है) तो इस दशा-काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) तो इस दशा-काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।



है।

यदि केतू वृश्चिक राशि अथवा अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है तो यह समय आपके लिए कठिनाइयों से भरा हो सकता है। आपके जीवनसाथी की वजह से आप अप्रत्याशित समस्याओं का सामना कर सकते हैं और आपके संतानों का स्वास्थ्य भी आपको चिंतित कर सकता है। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों का कोपभाजन बनना पड़ सकता है अथवा आप किसी अनजाने व्यक्ति के साथ विवाद में पड़ सकते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं हो सकता है और आपके शरीर में सूजन और दर्द रह सकता है। आपको घातकरसायनों, कीड़े-मकोड़ों, गलत दवाओं, सॉप इत्यादि से बचकर रहने की जरूरत है। यदि राहु एवं केतू नक्षत्र बदलाव में शामिल हैं तो आपको अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है अन्यथा आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी से आपका विवाद हो सकता है और आपके ससुराल वाले आपके विरोधी हो सकते हैं या आप किसी के साथ मुकदमें बाजी में फँस सकते हैं। यदि राहु एवं केतू दोनो ग्रह किसी शुभ ग्रह के प्रभाव में हैं तो आप अपने भाग्य या किसी बाहरी व्यक्ति के हस्तक्षेप से बाल-बाल बच सकते हैं।

### शुक्र अर्न्तदशा

(31:12:1997--31:12:2000)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं है) तो इस दशा-काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) तो इस दशा-काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यह समय आपके लिए अत्यंत आनंदायक है। भाग्य आप पर मेहरबान होगा। आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों से प्रत्यक्ष सहयोग एवं अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेंगे। आप किसी कुलीन पृष्ठभूमि के व्यक्ति - संभवतः धनी महिलाएँ - से विशेष सहयोग प्राप्त करेंगे। जरूरत पड़ने पर आपको आम लोगों का सहयोग भी प्राप्त होगा। आप नये व्यवसायी सहयोगी बनायेंगे जिससे कि आप लाभ की स्थिति में होंगे। आपकी धन-संपत्ति बढ़ेगी और आपके रहन-सहन के स्तर में सुधर होगा। फिर भी आपको सावधान और सचेत रहना चाहिए अन्यथा कुछ इर्ष्यालु व्यक्ति आपकी छवि को नुकसान पहुँचा सकते हैं। आपके जीवनसाथी अथवा कोई विपरीत लिंगी व्यक्ति आपके लिए विशेष खुशी का स्रोत हो सकता है। यदि आप अविवाहित हैं तो आप किसी प्रेम-प्रसंग में पड़ सकते हैं और आपका विवाह किसी धनी परिवार के व्यक्ति से हो सकता है।

### सूर्य अर्न्तदशा

(31:12:2000--25:11:2001)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं है) तो इस दशा-काल के दौरान आपको कई

शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) तो इस दशा-काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यदि इन दोनो ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो परस्पर दो विरोधी ग्रहों का यह समय आपके लिए कठिनाइयों से भरा हो सकता है। यदि दोनो ग्रह आपकी कुण्डली में दसवें, आठवें अथवा पाचवें घर में बैठे हैं तो आपको पेशे में गहरा धक्का लग सकता है और आप अपयश या बदनामी के शिकार हो सकते हैं जिससे आपकी छवि को नुकसान पहुँच सकता है। आप ऊँचे तबके के लोगों से लाभ प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु आपको सावधानी रहना चाहिए, क्योंकि ऐसाभी हो सकता है कि वो अपना काम निकालने की कोशिश कर रहे हों, लेकिन वे ऐसा जाहिर नहीं करेंगे। इसके अलावा पारिवारिक स्तर पर भी आपकी परेशानियों में बढ़ोत्तरी होगी और अपने जीवनसाथी और संतानों के व्यवहार से संदेह उत्पन्न हो सकता है। इस दशा के दौरान आपका तबादला हो सकता है अथवा आपको अपना घर भी बदलना पड़ सकता है।

### चन्द्र अर्न्तदशा

(25:11:2001--26:05:2003)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं है) तो इस दशा-काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थिति है (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) तो इस दशा-काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यदि इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो दो ग्रहों का यह संयुक्त समय आपके लिए कठिनाइयों से भरा हो सकता है। यदि ये दोनो ग्रह एक साथ वृष राशि में बैठे हैं तो आपकी परेशानियों में कमी हो सकती है। लेकिन यदि इनमें से कोई भी ग्रह तुंगस्थ नहीं है या अपनी राशि अथवा अपने नक्षत्र में नहीं है तो आप भ्रम की स्थिति में हो सकते हैं और मानसिक तनाव में हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा और आपके अंगों में दर्द हो सकता है। कोई छोटी-मोटी चोट की भी संभावना है। आप अपने किसी नजदीकी संबंधी से बिछुड़ने से दुःखी हो सकते हैं। इसके अलावा, आप अपने जीवनसाथी या साझेदार की गलतियों की वजह से भारी नुकसान उठा सकते हैं। इसके अलावा आपको मजबूरी में अपना निवास स्थान भी बदलना पड़ सकता है या किसी अप्रत्याशित घटना से आपको अपनी मातृभूमि छोड़नी पड़ सकती है - जिसपर आपका कोई वश नहीं

हो सकता है।

### मंगल अर्न्तदशा

(26:05:2003--13:06:2004)

यदि राहु आपकी कुण्डली में किसी राशि में अकेला बैठा है और उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है और शुभ स्थिति में है (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं है) तो इस दशा-काल के दौरान आपको कई शुभ फल प्राप्त होने की उम्मीद है। लेकिन, यदि राहु किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित है और उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है और अशुभ त्रिका भाव में स्थित है (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) तो इस दशा-काल के दौरान आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु उसी के जैसा व्यवहार करेगा। लेकिन, यदि राहु, सूर्य या चंद्रमा के काफी नजदीक है (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) तो राहु की दशा कुछ विपरीत और असामान्य परिणाम दे सकता है। यदि राहु ग्यारहवें भाव में किसी शुभ ग्रह के साथ स्थित है या ग्यारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है तो यह काफी धन दे सकता है।

यदि इनमे से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो यह दो अशुभ ग्रहों का समय आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है। आप अचानक ही परेशानियों से घिर जायेगें और आप निश्चय नहीं कर पाएंगें कि क्या करें और क्या न करें। आप कुछ लापरवाह हो सकते हैं, जिससे आपको छोटी-मोटी समस्याएँ हो सकती हैं। किसी बेवकूफी की वजह से आप गुण्डे या बदमाश किस्म के लोगों के साथ विवाद में पड़ सकते हैं और दुश्मनों की ईर्ष्या के कारण आपको शारीरिक कष्ट भी झेलना पड़ सकता है। आपको चिंता और मानसिक तनाव हो सकता है और आप चोट लगने अथवा जलने की वजह से कष्ट का सामना कर सकते हैं। यदि इनमे से कोई भी एक ग्रह वृहस्पति अथवा शुक्र के प्रभाव में है तो स्थितियों में सुधार होगा।

### गुरु दशा

(13:06:2004--13:06:2020)

### गुरु अर्न्तदशा

(13:06:2004--01:08:2006)

आपकी उन्नति का प्रारंभ होगा और भाग्य आप पर मेहरबान होगा। आप ईश्वरीय संरक्षण में रहेंगे। आपके प्रति आम लोगों की सहानुभूति बढ़ेगी और वे काफी मददगार एवं लाभदायक होंगे। वृहस्पति द्वाराशासित लोग - जैसे पुजारी, धर्मपरायण, वकील, शिक्षक, और वित्तीय संस्था में लगे लोग - जरूरतपड़ने पर हर संभव मदद करने को तैयार रहेंगे। यदि वृहस्पति आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है तो आपकी स्थिति और भी बेहतर होगी। नौकरी अथवा व्यापार में आपको अपार सफलता मिलेगी, पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपकी आय में वृद्धि होगी। आपका पारिवारिक जीवन खुशियों से भरा होगा। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और आपके संतान आपके लिए खुशियाँ लायेंगे। आपकी विश्वसनीयता और मान-सम्मान में वृद्धि होगी। लेकिन, यदि आपका लग्न वृष अथवा सिंह है तो वृहस्पति आपकी कुण्डली में अष्टमपति है जिसकी वजह से आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है और किसी दुर्घटना की संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता है।

### शनि अर्न्तदशा

(01:08:2006--12:02:2009)

यदि इनमे से कोई भी एक ग्रह आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है तो यह समय आपके लिए ठीक होगा। आपकी धन-संपत्ति में वृद्धि होगी। हालाँकि, आप बदन दर्द या गठिया जैसे कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आप अपने कार्य स्थल पर भी परेशानियों का सामना कर सकते हैं और आप की आय में कमी हो सकती है तथा कभी-कभी आप अपने किये हुए वादों को पूरा करने में असमर्थ हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके जीवनसाथी या आपके व्यवसायिक सहयोगी की वजह से कुछ व्यर्थ के खर्चे या हानि हो सकती है। या फिर, इन दोनों में से कोई एक समस्या के स्रोत हो सकते हैं और आपको चिंतित कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में इनमे से कोई एक भी ग्रह ग्रसित नहीं है तो आपको मिला-जुला फल मिलेगा और बुरा समय जल्द ही गुजर जाएगा। यदि आपका लग्न कर्क अथवा सिंह है तो यह छठे भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामी का सम्मिलित रूप से समय है और आपको बहुत ही सावधान और सचेत रहने की जरूरत है अन्यथा आपको किसी आत्मीय से विवाद हो सकता है जो कि जीवन पर्यन्त बना रहेगा।

**बुध अर्न्तदशा**

(12:02:2009--20:05:2011)

यह समय आपके लिए अत्यंत आनंदायक होगा। सामान्य लोग आपका काफी सम्मान और सहयोग करेंगे और आप एक से अधिक स्रोतों से धन की प्राप्ति करेंगे। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधि में लगे हुये हैं तो आपको आशातीत सफलता प्राप्त होगी या किसी असाधारण कार्य के लिए पदक मिल सकता है। यदि आप नौकरी में हैं तो आपकी पदोन्नति हो सकता है। यदि आप व्यवसाय के क्षेत्र में हैं तो यह काफी तेजी से आगे बढ़ेगा। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो आपको जल्द ही संतान की प्राप्ति हो सकती है। अनौपचारिक शिक्षा और कला विषयों के प्रति आपकी रुचि में वृद्धि होगी। आपके पास नये तकनीकी क्षेत्रों का ज्ञान एवं सूचना होगा, जिसका उपयोग आप अपने रोजगार में कर सकते हैं। यदि आपका लग्न चर राशि (मेष, कर्क, तुला या मकर राशि) में है तो जैसा कि यह छठे घर के स्वामी और बारहवें घर के स्वामी का सम्मिलित रूप से समय है, इस दशा के दौरान आपको कुछ लोग - जो खुले आम या गुप्त रूप से आपके प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया रखते हों - आपको परेशान कर सकते हैं। या फिर, आप किसी रोग के शिकार हो सकते हैं जिससे आप अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं।

**केतु अर्न्तदशा**

(20:05:2011--25:04:2012)

यदि इनमे से कोई भी एक ग्रह आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो आपको सावधान और सचेत रहना चाहिए, क्योंकि इस दशा के दौरान अप्रत्याशित कारणों से आप कई मुश्किलों का सामना कर सकते हैं। समस्याएँ कुछ समय के लिए हो सकती हैं और उनका प्रभाव अस्थिर हो सकता है। जहाँ तक संभव हो सके, आपको निम्न वर्ग और विदेशी व्यक्तियों के साथ मेल-जोल को कम करना चाहिए अन्यथा आप कई परेशानियों में पड़ सकते हैं और धन हानि हो सकती है। आपकी जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपको चिंतित कर सकता है अथवा आपका अपने व्यवसायिक सहयोगी के साथ विवाद या अलगाव हो सकता है। इसकी भी संभावना है कि आपको अपने पेशे में धक्का लग सकता है और आपको परिस्थितिवश निवास स्थान बदलना पड़ सकता है। आपके रिश्तेदार और आपके मित्र मददगार साबित नहीं हो सकते हैं, वे आपको दोषी समझ सकते हैं और आपको छोड़ भी सकते हैं।

**शुक्र अर्न्तदशा**

(25:04:2012--25:12:2014)

यह दो अति शुभ ग्रहों का सम्मिलित समय है। यह समय आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगा और निश्चित रूप से लाभदायक फल मिलेगा। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और आपका घरेलू जीवन शांतिमय और सुखमय होगा। आपके मित्रों और रिश्तेदारों से आपका मधुर बना रहेगा। आपके परिवार में कोई शुभ आयोजन हो सकता है और आप सामाजिक मिलन में आकर्षण का केन्द्र होंगे। रोजगार के क्षेत्र में आपको आशातीत सफलता प्राप्त होगी और आपकी आमदनी में बढ़ोतरी होगी। आपके रहन-सहन का स्तर उत्तम होगा। यदि आपका लग्न मेष अथवा वृश्चिक है तो यह दूसरे भाव के स्वामी और बारहवें भाव के स्वामी का सम्मिलित रूप से समय है, जिसकी वजह से आपकी आमदनी बढ़िया होगी, लेकिन खर्च में भी बढ़ोतरी हो सकती है और एक ही झटके में आपकी सारी जमा पूँजी खत्म हो सकती है। लेकिन, यदि आपका लग्न सिंह अथवा मीन है तो यह तीसरे घर के स्वामी और आठवें घर के स्वामी का सम्मिलित रूप से समय है, और आप किसी गंभीर बिमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

सूर्य अर्न्तदशा

(25:12:2014--13:10:2015)

यदि आपकी कुण्डली में वृहस्पति अस्त नहीं है तो यह समय आपके लिए काफी आनंदायक होगा और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। पुराने कार्यों का फल प्राप्त करने के लिए यह समय अति शुभ है। आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेगे जिससे आपको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लाभ की प्राप्ति होगी। अपनी विशेष योग्यता और कार्यों के लिए आप सम्मान प्राप्त करेंगे और वृहस्पति के शुभ प्रभाव के कारण आम लोग सहायक होंगे। समाज में आप सम्मानीय होंगे तथा आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा बढ़ेगी। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो आपको संतान की प्राप्ति होगी - संभवतः पुत्र-रत्न की। फिर भी, अपने स्वास्थ्य से संबंधित आपको कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपका कोई अंग किसी रोग से प्रभावित हो सकता है और आपकी शारीरिक शक्ति कम हो सकती है। लेकिन उपचार से आप बहुत जल्द स्वस्थ हो जाएँगे। लेकिन, यदि आपकी कुण्डली में वृहस्पति अस्त है तो आपको आँखों में या कोई दूसरी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। यदि आपका लग्न सिंह है तो जैसा कि यह लग्नपति और अष्टमपति का सम्मिलित रूप से समय है, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या कोई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

चन्द्र अर्न्तदशा

(13:10:2015--12:02:2017)

यह समय आपके लिए आनंदायक होगा। यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में है और चंद्रमा शुक्ल पक्ष में है तो यह समय आपके लिए और भी आनंदायक होगा। आपके पिछले किये हुए शुभ कार्यों और प्रयत्नों का फल आपको प्राप्त होगा। रोजगार के क्षेत्र में आपकी काफी उन्नति होगी, आपकी आय में वृद्धि होगी और आप कोई नई संपत्ति खरीदेंगे। आपका घरेलू जीवन सुखमय एवं शांतिमय होगा तथा कुछ महिला संबंधी और आपके संतान आपको खुशियाँ देंगे। धार्मिक कार्यों में आपका रूझान बढ़ेगा और निरंतर धार्मिक अनुष्ठान का अवलोकन करेंगे। यदि आप ऊँची या व्यवसायिक शिक्षा के लिए विदेश जाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अत्यंत शुभ है। यदि आपका लग्न मिथुन है तो, जैसा कि यह समय दो मारक ग्रहों दूसरे भाव के स्वामी और सातवें भाव के स्वामी का सम्मिलित रूप से समय है, आप किसी स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं या दुर्घटनाओं के शिकार हो सकते हैं।



### मंगल अर्न्तदशा

(12:02:2017--19:01:2018)

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो आपको काफी सावधान और सचेत रहना चाहिए, क्योंकि इस दशा के दौरान आप किसी अप्रत्याशित स्रोतों से उत्पन्न समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सामने कई बाधाएँ आ सकती हैं, चोरी या विश्वासघात की वजह से धन हानि हो सकती है और परिस्थितिवश अपने नजदीकी संबंधी या मित्रों से अलगाव हो सकता है। इसके अलावा, आपको अपने स्वास्थ्य से सम्बन्धित बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप सम्पत्ति से सम्बन्धित कई विवादों में फँस सकते हैं और अपना अधिकार बनाए रखने के लिए काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। अपनी गलती न होने पर भी आप लोगों का सहयोग खो सकते हैं, और परिस्थितिवश या कुण्ठा तथा घृणा से आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं। यदि आपका लग्न वृश्चिक या धनु है तो यह लग्नपति और पाँचवे भाव के स्वामीका सम्मिलित रूप से समय है और यदि आपका लग्न मेष या मीन है तो यह लग्नपति और नौवें भाव के स्वामी का संयुक्त समय है। दोनो स्थितियों में रोजगार के क्षेत्र में आपको आशातीत सफलता प्राप्त हो सकती है।

### राहु अर्न्तदशा

(19:01:2018--13:06:2020)

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो आपको काफी सावधान और सचेत रहना चाहिए, क्योंकि इस दशा के दौरान आप प्रत्याशित स्रोतों से उत्पन्न कई बाधाओं का सामना कर सकते हैं। ये परेशानियाँ कुछ समय के लिए होंगी और इनका प्रभाव अस्थिर हो सकता है। आपको असामाजिक और संदेहात्मक पृष्ठभूमि वाले लोगों से दूरी बनाये रहनी चाहिए और बाहरी तथा नए परिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, अन्यथा आप परेशानी में पड़ सकते हैं और आपको धन हानि हो सकती है। जैसा कि यह समय आपके लिए शुभ नहीं है, आपको समझना चाहिए कि हर चमकीली चीज सोना नहीं होता। आपको कहीं भी धन निवेश या जुए से बचना चाहिए। कुछ लोगचालाकी या छल से आपका शोषण करने की कोशिश कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में इनमें से कोई एक ग्रह भी ग्रसित है तो आपको अपने रिश्तेदारों से छोटे-मोटे विवाद हो सकते हैं और आपको धन हानि भी हो सकती है।

### शनि दशा

(13:06:2020--14:06:2039)

### शनि अर्न्तदशा

(13:06:2020--17:06:2023)

यदि आपकी कुण्डली में शनि प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो यह समय आपके लिए अत्यंत परेशानियों से भरा होगा। आप किसी रोग के शिकार हो सकते हैं। अपने किसी रिश्तेदार - जिनका व्यवहार आपके प्रति शत्रुतापूर्ण हो सकता है और वे आपकी धन-संपत्ति की हानि कराने की कोशिश कर सकते हैं - के साथ आप सम्पत्ति के मामले को लेकर विवाद में फँस सकते हैं। अपने पेशे के क्षेत्र में भी आपको कई मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप व्यवसायी हैं तो आपका व्यवसाय मंदा पड़ सकता है। यदि आप रोजगार के क्षेत्र में हैं तो आपको कठोर और गलतियाँ खोजने वाले वरिष्ठ अधिकारियों का कोपभाजन बनना पड़ सकता है। अप्रत्याशित घटनाओं और परिस्थितियों में विपरीत

बदलाव के कारण आप अपनी तरक्की का सुअवसर खो सकते हैं। इसके अलावा, आपके किसी निकट सम्बन्धि का आपसे अलगाव आपके लिए दुःख का कारण बन सकता है। यदि आपका लग्न मिथुन अथवा कर्क है तो यह समय आपके लिए और भी बुरा हो सकता है क्योंकि इस स्थिति में शनि अष्टमपति होगा। लेकिन, यदि आपका लग्न तुला या कुंभ या मकर है या आपकी कुण्डली में शनि तुंगस्थ है अथवा अपने नक्षत्र या अपनी राशि में है तो निश्चित रूप से आपको कुछ शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। अगर आपकी कुण्डली में लग्न की राशि तुला और शनि की राशि मकर है, तो इस दशा के दौरान निश्चित रूप से आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

### बुध अर्न्तदशा

(17:06:2023--24:02:2026)

यह समय आपके लिए बढ़िया होगा। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधि में संलग्न हैं तो आपको आशातीत सफलता प्राप्त होगी। आपको अपनी रूचि के विषय में गहरी जानकारी होगी और आपकाफी बुद्धिमान तथा विवकशील होंगे। आपके किसी रिश्तेदार को कोई विशेष सफलता मिल सकती है जिससे आपको अप्रत्यक्ष रूप से फायदा हो सकता है। अपने पेशे के क्षेत्र में आप काफी उन्नति करेंगे। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से सहयोग एवं लाभ प्राप्त होगा और आपकी आमदनी बढ़ेगी। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो किसी नए क्षेत्र में परिवर्तन का मौका मिल सकता है, जहाँ से आप काफी धन संचित कर सकते हैं। यदि आपकी कोई संतान है तो उनकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति आपके लिए गर्व एवं खुशी का कारण बनेगा। यदि आपका लग्न मिथुन है तो आपको कुछ अप्रत्याशित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि यह पहले भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामीका संयुक्त समय है। यदि आपका लग्न सिंह है तो, जैसा कि यह दो मारक ग्रहों - दूसरे घर के स्वामी और सातवें घर के स्वामी - का संयुक्त समय है, आप स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं के शिकार हो सकते हैं।

### केतु अर्न्तदशा

(24:02:2026--05:04:2027)

यदि इनमें से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो आपको काफी सावधान और सचेत रहना चाहिए, क्योंकि इस दशा के दौरान आप प्रत्याशित स्रोतों से उत्पन्न कई बाधाओं का सामना कर सकते हैं। ये परेशानियाँ कुछ समय के लिए होंगी और इनका प्रभाव अस्थिर हो सकता है। आप कलहों का सामना कर सकते हैं और झगड़े आपके परिवार को तोड़ सकते हैं। आपके संतान - खासकर आपके पुत्र - आपसे विद्रोह कर सकते हैं और उन्हें शांत करना मुश्किल हो सकता है। अचानक आपकी आय कम हो सकती है। आपको कुछ हानि होने की भी संभावना है या पैसे के कमी की वजह से आप अपने किये हुए वादों को निभाने की स्थिति में नहीं हो सकते हैं। आपके शरीर के किसी अंग में कोई विषैला पदार्थ हो सकता है, जिसकी वजह से आपको पित्त संबंधी शिकायत हो सकती है। आपको अपने दायें पैर या टखने में गठिया या दर्द भरे सूजन की शिकायत हो सकती है।

### शुक्र अर्न्तदशा

(05:04:2027--05:06:2030)

यह समय कुछ मामलों में आपके लिए भाग्यशाली होगा। आप कई बाधाओं को पार करेंगे और आपके शत्रु पूरी तरह से दबे रहेंगे। आप कई लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम होंगे और अपने वरिष्ठ अधिकारियों से सहयोग और लाभ प्राप्त करेंगे। यदि आप नौकरी की तलाश कर रहे हैं तो

यह अचानक और बहुत जल्दी प्राप्त होगी। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में संभावनाओं की तलाश में हैं तो आपको कई सुअवसर प्राप्त हो सकते हैं। आपकी आय में वृद्धि होगी और आपके रहन-सहन के स्तर में सुधार होगा। आप कुछ विपरीत लिंगी व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे, आप किसी प्रेम-प्रसंग में पड़ सकते हैं और आपका विवाह भी हो सकता है। या फिर, आपके परिवार में शिशु के जन्म अथवा किसी विवाह से संख्या में वृद्धि होगी। आप अपने रिश्तेदारों से महँगे उपहारों प्राप्त कर सकते हैं। आप अपनी खुशी तथा लाभ के लिए कुछ यात्राएँ कर सकते हैं, पिकनिक में भाग ले सकते हैं तथा कोई फिल्म या सांस्कृतिक कार्यक्रम देख सकते हैं।

### सूर्य अर्न्तदशा

(05:06:2030--17:05:2031)

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो आपको सावधान और सचेत रहने की आवश्यकता है। यह समय आपके लिए परेशानियों से भरा होगा। यद्यपि आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से सहयोग एवं लाभ प्राप्त होगा लेकिन ऐसी भी संभावना है कि आप किसी वरिष्ठ व्यक्ति को अपना विरोधी बना लें, जो आपके घोर शत्रु हो सकते हैं और आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। आपके पद में बदलाव हो सकता है और आपका असुविधाजनक स्थान परस्थानान्तरण हो सकता है या आपको अपना निवास बदलना पड़ सकता है। आपको पारिवारिक कलह का भी सामना करना पड़ सकता है और अपने जीवनसाथी, कोई संबंधी अथवा संतान को लेकर आपके मन में संदेह पैदा हो सकता है। अपने जीवनसाथी के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है या आपके जीवनसाथी चिंता के स्रोत हो सकते हैं। यदि आपका लग्न सिंह या कुंभ है तो, यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है अथवा किसी दूसरे समुदाय या धर्म या देश के व्यक्ति के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बना सकते हैं। लेकिन, यदि आपका लग्न मकर है तो, जैसा कि यह लग्नपति और अष्टमपति का सम्मिलित रूप से समय है, आपको कुछ अप्रत्याशित मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है।

### चन्द्र अर्न्तदशा

(17:05:2031--16:12:2032)

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो आपको सावधान और सचेत रहने की आवश्यकता है। यह समय आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है। आपके स्वास्थ्य की हालत खराब हो सकती है तथा गिरने या टक्कर लगने से आपको शारीरिक चोट भी लग सकती है। आपके अंगों में दर्द हो सकता है और आप उदास हो सकते हैं। वाहन चलाते समय - खासकर दुपहिया वाहन - तथा तेज चलने वाली मशीन के नजदीक आपको काफी सावधानी बरतनी चाहिए, अन्यथा आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आपको पारिवारिक कलह का भी सामना करना पड़ सकता है, जिससे आप दुःखी हो सकते हैं और आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। परिस्थिति में बदलाव की वजह से आपको अपना निवास स्थान त्यागना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी अथवा आपका व्यवसायिक सहयोगी आपको धन की हानि पहुँचा सकता है। यदि आपका लग्न कर्क या मकर है, और आप अविवाहित वयस्क हैं तो आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप किसी दूसरे समुदाय या धर्म या देश के व्यक्ति के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बना सकते हैं।

### मंगल अर्न्तदशा

(16:12:2032--25:01:2034)



यह दो परस्पर विरोधी एवं अशुभ ग्रहों का सम्मिलित समय है। यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो यह समय परेशानियों से भरा हो सकता है। आप कई विवादों में फँस सकते हैं और आपके शत्रुओं की संख्या एवं शक्ति में वृद्धि हो सकती है और जहाँ तक संभव हो सकता है वे आपके लिए परेशानियाँ पैदा करने की कोशिश करेंगे। आपके अपने या पारिवारिक सदस्यों के कार्य से आपको अपमानित होना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है और आप गठिया आदि से ग्रसित हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह ग्रसित है तो चोरी या जालसाजी से आपको हानि हो सकती है। जैसा कि आप अपने किये हुए वादों को निभाने की स्थिति में नहीं होंगे जिसकी वजह से आपका कोई प्रिय मित्र आपका शत्रु बन सकता है। परिस्थितियों में बदलाव की वजह से आपको अपने निवास स्थान तथा अपने रिश्तेदारों का त्याग भी करना पड़ सकता है और बिना किसी सफलता के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पड़ सकता है।

### राहु अर्न्तदशा

(25:01:2034--01:12:2036)

यह समय दो बहुत ही अशुभ ग्रहों का सम्मिलित समय है। यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो परिस्थितियाँ विपरीत होंगी और परेशानियों से भरी होंगी तथा उनका प्रभाव अस्थिर होगा। आपको काफी सावधानी बरतनी चाहिए और तय कर लेना चाहिए कि आपकी किसी बात से या आपके वादों से कोई विराधी तो नहीं बन गया है। इन दोनों ग्रहों के संयुक्तप्रभाव से आपके शत्रु आपके लिए अधिक परेशानियाँ पैदा करेंगे। यहाँ तक कि अपरिचित और विदेशी आपके साथ शत्रुतापूर्ण खैया अपना लेंगे। पैसों के लेन-देन में आपको अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए और जुए तथा निवेश से दूर रहना चाहिए। धन हानि तथा बकाए राशि के भुगतान संबंधितगहरे कलह की संभावना बहुत अधिक है। आपको शारीरिक कष्ट या चोट भी हो सकती है। आपको अवांछनीय और असामाजिक व्यक्तियों से दूर रहना चाहिए नहीं अन्यथा आप किसी मुसीबत में फँस सकते हैं।

### गुरु अर्न्तदशा

(01:12:2036--14:06:2039)

यदि इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी आपकी कुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है तो सामान्य रूप से यह समय आपके लिए लाभदायक है। अपने वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग से आप अपना कार्य सिद्ध करेंगे। आपकी धन-संपत्ति में वृद्धि होगी और रहन-सहन के स्तर में सुधार होगा। आपका स्वास्थ्य सामान्य रूप से ठीक रहेगा और अपने कार्य स्थल पर सभी बाधाओं को पार करने में सक्षम होंगे तथा आपकी आमदनी में भी वृद्धि हो सकती है। आप अपने किये हुए वादों को निभाने की स्थिति में होंगे और आपकी विश्वसनीयता तथा मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी और व्यवसायिक सहयोगी भी सहयोग करेंगे, जिसकी वजह से आप बहुत खुशी महसूस करेंगे। यदि आपका लग्न कर्क अथवा सिंह है तो जैसा कि यह छठे भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामी का सम्मिलित रूप से समय है, आपको अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है, अन्यथा अपने किसी प्रिय से आपको कठोर सबक सिखने को मिल सकता है, जिसे आप जीवनपर्यन्त नहीं भूल पाएँगे।

### बुध दशा

(14:06:2039--13:06:2056)

### बुध अर्न्तदशा

(14:06:2039--10:11:2041)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होंगे। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफी सुखद होंगे - हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेंगे। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में बुध प्रभावशाली स्थिति में है और ग्रसित नहीं है तो यह समय आपके लिए अत्यंत उन्नति वाला होगा। शैक्षणिक गतिविधियाँ और उपयोगी ज्ञान और सूचना आपको काफी आकर्षित करेगी। यदि आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं या कला के क्षेत्र में हैं तो आपके कार्य वांछनीय होंगे। आपको कोई प्रतिष्ठा मिल सकती है और आपके बहुत सारे अनुयायी हो सकते हैं। यदि आप व्यवसाय के क्षेत्र में हैं तो यह काफी तेजी से आगे बढ़ेगा, आपकी आमदनी बढ़ेगी, और आप किसी नए क्षेत्र में भी किस्मत आजमा सकते हैं, जहाँ से आप काफी धन जमा करेंगे। आपके मित्रों और परिचितों की संख्या में वृद्धि होगी। अपने शुभचिंतकों से जरूरी सूचनाएँ प्राप्त कर आप लाभ पाएँगे। आप आनंद और लाभ के लिए सुदूर स्थानों की यात्रा कर सकते हैं और वहाँ किसी प्रभावशाली व्यक्ति से मधुर सम्बंध बनायेंगे। यदि आपका लग्न मिथुन है तो यह समय आपके जीवन का सबसे आनंददायक समय हो सकता है। इसके अलावा, यदि आपका लग्न कन्या अथवा धनु है तो भी यह समय आपके लिए सुखमय होगा। लेकिन, यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रसित है तो आपको कई चिंताएँ हो सकती हैं और आपकी माता की स्वास्थ्य की हालत आपको चिंतित कर सकती है।

### केतु अर्न्तदशा

(10:11:2041--07:11:2042)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होंगे। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफी सुखद होंगे - हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेंगे। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या

इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में केतू न तो वृश्चिक राशि में और न ही अपने नक्षत्र में स्थित है तो यह समय आपके लिए काफी लाभदायक सिद्ध नहीं होगा। आपको आंतरिक रूप से कुछ कमजोरी महसूस हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली में केतू ग्रसित है तो आप किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं, जिसका इलाज मुश्किल हो सकता है। आपको गलत इलाज अथवा गलत दवा खाने की वजह से काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपको खाने-पीने के मामले में अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है, क्योंकि संभावना है कि भूल से आप विषैला पदार्थ ले सकते हैं। आपको निम्न वर्ग के व्यक्तियों के साथ दूरी बनाये रखनी चाहिए अन्यथा वो आपकी छवि को नुकसान पहुँचा सकते हैं। आपको अपने मकान मालिक या किरायेदार या अपने पड़ोसियों के साथ कठिनाई हो सकती है और आप मानसिक तनाव में हो सकते हैं। आपको अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है या किसी को जबरदस्ती छोड़ने पर मजबूर कर सकते हैं, जिसकी वजह से आपकी निंदा या आलोचना हो सकती है और आपकी लोकप्रियता कम हो सकती है।

### शुक्र अर्न्तदशा

(07:11:2042--07:09:2045)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होंगे। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफी सुखद होंगे - हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेंगे। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यह समय आपके लिए अत्यंत आनंददायक है। यदि आप अपने परिवार से दूर रह रहे हैं तो आप अपने परिवार के साथ रहने आयेंगे जिसकी वजह से आपके पारिवारिक सदस्य और मित्र सुख का अनुभव करेंगे। आपके मित्रों और परिचितों की संख्या में वृद्धि होगी और समाज में आपकी लोकप्रियता बढ़ेगा। आप किसी प्रभावशाली व्यक्ति के साथ मधुर सम्बंध बनायेंगे और उनसे आपको लाभ की प्राप्ति होगी। यदि आप वयस्क हैं और अविवाहित हैं तो आप किसी प्रेम-प्रसंग में पड़ सकते हैं और आपका विवाह हो सकता है। यदि आप शैक्षणिक या बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं तो निश्चित रूप से आपको कोई पदक मिल सकता है। और यदि आप कला के क्षेत्र में सक्रिय हैं तो आपको सराहना मिल सकती है। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको कोई प्रतिष्ठित पद मिल सकता है। और यदि आप व्यवसाय में हैं तो आपका काम काफी फलदायक हो सकता है और यदि आप कोई नया कार्यालय या शाखा खोलना चाहते हैं तो

यह समय उत्तम है। आप खुशी और लाभ के लिए कई यात्राएँ कर सकते हैं और पिकनिक में हिस्सा ले सकते हैं।

### सूर्य अर्न्तदशा

(07:09:2045--14:07:2046)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होंगे। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफी सुखद होंगे - हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनों में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेंगे। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनों में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनों ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो इस दशाके दौरान आप कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आप और आपके जीवनसाथी किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं। यदि आपका लग्न कुंभ है तो प्रभाव और अधिक हो सकता है, क्योंकि ऐसी स्थिति में सातवें भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामी का संयुक्त समय होगा। यदि आपकी कुण्डली में बुध अथवा सूर्य ग्रसित है तो आप मुकदमेबाजी में फँस सकते हैं या आपके खिलाफ विभागीय जाँच हो सकती है। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए तथा अपने वरिष्ठ अधिकारियों या सरकारी दंडात्मक अधिकारी को विरोधी नहीं बनाना चाहिए। आपके दायरे के कुछ इर्ष्यालु व्यक्ति आपके घोर दुश्मन बन सकते हैं और आपको मुश्किल स्थिति में डाल सकते हैं। आपको बातूनी तथा पीठ पीछे बुराई करने वाले व्यक्ति से बचकर रहना चाहिए। आपको कुछ बाधाओं का भी सामना करना पड़ सकता है, जिससे आप चिंतित हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य और बुध ग्रसित है तो आपको कोई चोट लग सकती है या आग लगने से कुछ हानि हो सकती है।

### चन्द्र अर्न्तदशा

(14:07:2046--13:12:2047)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होंगे। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफी सुखद होंगे - हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या

इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेंगे। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है -तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो इस दशाके दौरान आप कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपका किसी स्त्री के साथ विवाद हो सकता है जिसकी वजह से वो आपकी छवि को नुकसान पहुँचाने की अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर सकती है। इस मामले में आपको सावधान और सचेत रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में बुध अथवाचन्द्रमा किसी नीच ग्रह के साथ अथवा उसके प्रभाव में है तो आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं हो सकता है और आप ग्रंथि में सूजन या अंगों में चोट से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिंतित कर सकता है। यदि आपका लग्न धनु है तो आपकी समस्याओं में और भी वृद्धिहोने की संभावना है, क्योंकि ऐसी स्थिति में यह सातवें भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामी का संयुक्त समय होगा। यदि आपका लग्न मकर है तो आपके कुछ रिश्तेदार आपके विरोधी हो सकते हैं लेकिन आप कुछ दूसरे मामलों में भाग्यशाली हो सकते हैं। आप किसी निजी संस्था में नई नौकरी पा सकते हैं या अपना नया व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। आपके दिमाग में कुछ हिचकिचाहट हो सकती है लेकिन आप सही समय पर सही फैसले लेने में सक्षम होंगे।

### मंगल अर्न्तदशा

(13:12:2047--10:12:2048)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होंगे। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफीसुखद होंगे - हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेंगे। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है -तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में है तो यह समय आपके लिए शुभ नहीं होगा। इस दशा के दौरान आप कई समस्याओं, झगड़ों, तथा विवादों का सामना कर सकते हैं। समस्याओं के बढ़ते प्रभाव के कारण आपका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है और आप कई प्रकार के रोगों जैसे गंभीर दर्द, खून संबंधित रोग, पीलिया आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति एवं खाने-पीने के मामलों में अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपको अपनी बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए और तय कर लेना चाहिए कि आपकी बातों से किसी



की भावनाओं - खासकर प्रभावी व्यक्तियों की - को कोई ठेस तो नहीं पहुँची है। अन्यथा आप मुसीबत में फँस सकते हैं। यदि आपका लग्न मेष है तो आपको अपने ऊपर नियंत्रण रखना चाहिए। आपको वाहन चलाते समय सावधान और सचेत रहने की आवश्यकता है अन्यथा आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

### राहु अर्न्तदशा

(10:12:2048--29:06:2051)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होंगे। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफी सुखद होंगे - हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनों में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेंगे। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनों में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनों ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो यह समय आपके लिए शुभ नहीं होगा। इस दशा के दौरान आप कई परेशानियों एवं विवादों का सामना कर सकते हैं। आपको छोटे-मोटे रोग होते रहेंगे, आपके बुरे सपने होंगे, आपकी अभिलाषा खत्म होगी, और आपकी सोच धुंधली या भ्रमित हो सकती है। किसी प्रभावशाली व्यक्ति से आपका विवाद हो सकता है जिसकी वजह से आपको काफी क्षति हो सकती है और जहाँ तक उनसे संभव होगा, वे आपके जीवन को दुखद बनाने की कोशिश करेंगे। तात्कालिक रूप से आपको अपने पद से हटाया जा सकता है और किसी असुविधाजनक स्थान पर अपना निवास स्थान बदलने के लिए बाध्य किया जा सकता है। आपके कार्यस्थल पर भी परिस्थितियाँ बुरी हो सकती हैं और कुछ निम्न तबके के लोगों को जानबूझकर आपको नुकसान पहुँचाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। आप काफी हताश होंगे और आपको घृणा आएगी। यदि राहु, वृहस्पति या शुक्र के साथ स्थित है या इनकी दृष्टि पड़ रही है या बुध से केन्द्र स्थिति में है तो आप इन परेशानियों से बच सकते हैं।

### गुरु अर्न्तदशा

(29:06:2051--04:10:2053)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होंगे। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफी सुखद होंगे - हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में

बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेंगे। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यह आपके लिए बहुत ही शुभ और आनंददायक समय होगा। आपको बहुत ही बुद्धिमान लोगों का साथ मिलेगा, मानसिक शांति मिलेगी, और किसी महत्वपूर्ण कार्य में संलग्न होंगे। यदि आप किसी शैक्षणिक गतिविधि में संलग्न हैं तो अपने प्रयत्नों से आपको आशातीत सफलता मिलेगी और आप काफी मशहूर हो जाएंगे। आपकी किसी सम्मानित पद पर होंगे, आपकी आमदनी बढ़िया होगी, रहन-सहन का स्तर सुधरेगा, और आम लोग आपका आदर करेंगे। समाज में आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी, आपके सुझावों का महत्व होगा और गंभीर मामलों में लोग आपसे सलाह लेंगे। लेकिन आपको उतावला नहीं होना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि ईमानदारी और शालीनता के मार्ग से भटके नहीं। अन्यथा इस दशा के समाप्ति पर अपने आप को बाहर पाएंगे और अपने विशिष्ट कार्यों के बावजूद आप गुमनामी में खो जाएंगे।

### शनि अर्न्तदशा

(04:10:2053--13:06:2056)

यदि बुध कन्या राशि (तुंगस्थ) में अकेला बैठा है या मिथुन राशि (स्वग्रही) में या अपने नक्षत्र में है तो यह दशा आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ग्रह वृहस्पति या शुक्र या शनि के साथ बैठा है अथवा इस पर वृहस्पति या शनि की दृष्टि पड़ रही है तो भी परिणाम आपके लिए शुभ होंगे। यदि बुध सूर्य के काफी नजदीक (३ डिग्री २० मिनट के अंदर) है तो भी परिणाम काफी सुखद होंगे - हालाँकि कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ सकती हैं। यदि बुध राहु से परस्पर केन्द्र स्थिति में है तो शैक्षणिक और बौद्धिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए काफी उत्तम समय है। रोजगार में बदलाव के लिए यह समय काफी लाभदायक सिद्ध होगा। अगर बुध केतू के नजदीक स्थित है तो यह रहस्यमय विषयों के अध्ययन में सफलता दिला सकता है। लेकिन, यदि मंगल बुध के साथ स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो आप कई समस्याओं का सामना कर सकते हैं और हमेशा परेशान रहेंगे। यदि चंद्रमा बुध के साथ स्थित है या इसपर अपनी दृष्टि डाल रहा है - जबकि दोनो में से कोई भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है - तो व्यक्ति का दिमाग हिचकिचाने वाला हो सकता है और अस्थिर हो सकता है।

यदि आपकी कुण्डली में इन दोनो ग्रहों में से कोई एक ग्रह भी प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो यह समय आपके लिए शुभ नहीं होगा। इस दशा के दौरान आपको कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, जो कि आपकी अपनी गलतियों के कारण होगा। यदि आप दृढ़ हैं तो सही रास्ते पर चलें, क्योंकि ईश्वर सदा सही रास्ते पर चलने वालों का साथ देता है और धूप को भी छाँव में बदल देता है। यदि आपकी कुण्डली में ये दोनो ग्रह ग्रसित हैं तो आप सफलता से दूर हो सकते हैं और आपको खुशी नहीं मिल सकती है। आपके शत्रु आपके लिए अनेक परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं और भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। आपके कुछ निकट संबंधी अपमानित हो सकते हैं और परिणाम से आप बुरी

तरह प्रभावित हो सकते हैं। आपका दिमाग विषाद और उदासी से भरा हो सकता है, जिसकी वजह से आप दुखी महसूस करेंगे। यदि आपका लग्न मिथुन है तो, जैसा कि यह लग्नपति और अष्टमपति का सम्मिलित रूप से समय है, आप स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं से गुजर सकते हैं या आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। यदि आपका लग्न सिंह है तो, जैसा कि यह दो मारक ग्रहों (दूसरे भाव के स्वामी और सातवें भाव के स्वामी) का सम्मिलित रूप से समय है, आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से गुजर सकते हैं।

## केतु दशा

(13:06:2056--14:06:2063)

### केतु अर्न्तदशा

(13:06:2056--10:11:2056)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यदि केतू न तो वृश्चिक राशि में बैठा है और न ही अपने नक्षत्र में बैठा है तो यह समय आपके लिए कठिनाइयों से भरा हो सकता है। आपकी आमदनी कम हो सकती है और आपको थोड़े समय के लिए घरपर बैठना भी पड़ सकता है। पैसों और ससाधनों की कमी की वजह से आप काफी प्रभावित हो सकते हैं और अपने वादों को निभाने के स्थिति में नहीं हो सकते हैं। आपको इस स्थिति से बचने के लिए व्यक्तिगत सुखों का त्याग करना पड़ सकता है। आपके पारिवारिक सदस्य भी आपसे बढ़िया व्यवहार नहीं करेंगे और उनकी अपेक्षाएँ भी आप से बढ़ जायेगी। पारिवारिक कलह की वजह से आप बहुत अशांत हो सकते हैं और स्थिति दिन पर दिन बुरी हो सकती है तथा इससे बाहर निकलने का कोई दूसरा रास्ता न मिलने पर आप अपने निकट संबंधियों को भी छोड़ सकते हैं जिससे कुछ बहुत घमंडी और समझौता नहीं करने वाले हो सकते हैं। आप पर कोई प्रतिबंध लग सकता है या आपके साथ अपरिचितों जैसा व्यवहार हो सकता है, और यदि ऐसा हुआ तो आपको कैद भी हो सकती है। आपकी मानसिक दशा सोचनीय होगी और आप अपने को काफी असहाय और दुखी महसूस करेंगे।

### शुक्र अर्न्तदशा

(10:11:2056--10:01:2058)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छूटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी



अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यह समय आपके लिए काफी लाभदायक और सुखदायक होगा। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं, तो आपको यह सुख प्राप्त होगा। आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे और आपकी आमदनी तथा धन में वृद्धि होगी। आप अपने जीवन का पूरी तरह से आनंद उठाएंगे। परन्तु आपको अपने खर्चों पर अंकुश रखना होगा और पैसे का लेन-देन करते समय बहुत सावधान और सचेत रहने की जरूरत है तथा किसी भी चीज के आदी न बनें। आपको जुए तथा सट्टे में निवेश से बचना चाहिए क्योंकि ये आपके धन का बड़ा हिस्सा बर्बाद कर सकता है और आपको फिर से पहले वाली स्थिति में ला देगा। आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी और आप काफी पसंद किए जाएंगे। आपके निवास स्थान पर बहुत सारे मित्र और सम्बन्धी आयेंगे, और आप सामाजिक मिलन में आकर्षण का केन्द्र होंगे। इस दशाकी समाप्ति के समय आपको अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी अन्यथा आपको छोटी-मोटी बीमारी हो सकती है। ऐसा आपके जीवनसाथी के साथ भी हो सकता है।

### सूर्य अर्न्तदशा

(10:01:2058--17:05:2058)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छटे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यदि आपकी जन्मकुण्डली में केतू और सूर्य में से कम से कम एक ग्रह प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो यह समय आपके लिए परेशानियों वाला होगा। आप किसी रोग के शिकार हो सकते हैं या अपने जीवनसाथी को लेकर चिन्तित हो सकते हैं। पारिवारिक स्थिति आपको चिन्तित कर सकती है और कार्य स्थल पर परिस्थितियाँ आपके विपरित होंगी। कम सामाजिक और आर्थिक तबके वाले औसत वर्ग के कुछ लोग आपके लिए समस्याएँ पैदा कर सकते हैं। आपको परिस्थितियों में सुधार के लिए अपना काफी समय और प्रयत्न लगाना पड़ सकता है। फिर भी आप कुछ ऊँचे पदस्थ व्यक्तियों, अधिकारियों, और सरकारी स्रोतों से प्रत्यक्ष सहयोग और अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेंगे। आपको किसी विशेष कार्य के

सिलसिले में किसी दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा का मौका मिल सकता है। और सफलतापूर्वक कार्य खत्म होने के बाद आप खुशी-खुशी घर वापस लौटेंगे। यदि केतू वृश्चिक राशि में बैठा है अथवा वह अपने नक्षत्र में है तो यह समय आपके लिए निश्चय ही लाभदायक सिद्ध होगा। आपको कई स्रोतों से धनकी प्राप्ति होगी, आपका धन और स्वामित्व बढ़ेगा और आप अपने रहन-सहन के स्तर में सुधार के लिए कुछ नई वस्तुएँ खरीद सकते हैं।

### चन्द्र अर्न्तदशा

(17:05:2058--16:12:2058)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

इस दशा के दौरान आप विपरीत लिंगी व्यक्तियों की वजह से काफी दुखी रहेंगे और अपने संतानों की वजह से या उनकी गतिविधियों के कारण कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है - क्योंकि वे उपद्रवी किस्म के हो सकते हैं। अन्य मामलों में आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। आपको कई स्रोतों से लाभ मिलेगा, आपकी आमदनी और धन में वृद्धि होगी तथा सार्वजनिक सौदे से बढ़िया लाभ मिल सकता है। अगर आप कोई नया व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए उपयुक्त है, कई अप्रत्याशित सुअवसरों का आप लाभ उठाएंगे और परिस्थितियाँ आपके पक्ष में होगी। यदि आपका पेशा चिकित्सा, घरेलू साजो-समान की वस्तुएँ इत्यादि से जुड़ा हुआ है तो निश्चय ही यह समय आपके लिए कहीं अधिक भाग्यशाली होगा। यदि केतू वृश्चिक राशि में स्थित है या आपने नक्षत्र में स्थित है, तो यह समय कहीं अधिक फलदायक होगा। आप अपने घर पर या इसके आंतरिक सजावट पर काफी धन व्यय करेंगे।

### मंगल अर्न्तदशा

(16:12:2058--14:05:2059)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ

घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यह समय दो आग्नेय अशुभ ग्रहों के संयुक्त प्रभाव में है, इसलिए यह समय आपके लिए अधिक लाभदायक नहीं हो सकता है। आपको बहुत सारी परेशानियों, बाधाओं, और लड़ाई-झगड़ों का सामना करना पड़ सकता है। कुछ लोग जिनका व्यवहार आपके प्रति शत्रुतापूर्ण हो - खास कर विपरित लिंगी व्यक्ति - आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। आप बुखार या शरीर में ऊँचा ताप उत्पन्न होने जैसे बीमारी के शिकार हो सकते हैं। आप किसी छोटी-मोटी दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं अथवा आपके कार्य स्थल अथवा घर पर आग लगने जैसी घटनाएँ आपको नुकसान पहुँचा सकती हैं। इसलिए आपको बहुत ही सावधान और सचेत रहने की जरूरत है और आपको इससे बचने के लिए सारे उपाय कर लेने चाहिए। फिर भी, यदि केतू और मंगल, दोनो ही ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में हैं तो यह समय आपके लिए काफी आनंददायक हो सकता है। आप अपने लिए एक नया घर बनवा सकते हैं या कोई अचल सम्पत्ति खरीद सकते हैं। यदि आपकी जन्मकुण्डली में मंगल और केतू पीड़ित है तो आपके शरीर के निचले हिस्से में किसी समस्या की वजह से आपको सर्जरी भी करवानी भीपड़ सकती है।

### राहु अर्न्तदशा

(14:05:2059--01:06:2060)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यदि केतू और राहु, दोनो ग्रह न तो अपने तुंगस्थ राशि में स्थित हैं और न ही अपने नक्षत्र में स्थित हैं, तो यह समय आपके लिए निश्चय ही समस्यापूर्ण हो सकता है। आपको काफी सावधान और सचेत रहना चाहिए, क्योंकि संभावना है कि आपकी तबीयत अचानक ही खराब हो सकती है। आप किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं और इसका निदान/इलाज भी काफी मुश्किल होगा तथा इसकी तीव्रता अस्थिर हो सकती है। आपको गलत दवा खाने अथवा भूल से जहरीले पदार्थ के सेवन से काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके आस-पास की परिस्थितियाँ आपके वश में नहीं हो सकती हैं और आपको परिस्थितियों अथवा वातावरण में बदलाव की वजह से बहुत बड़ा घाटा उठाना पड़ सकता है। यदि राहु और केतू एक दूसरे के नक्षत्र में बैठे हुए हैं तो आपको और भी अधिक सतर्क रहना चाहिए क्योंकि संभावना है कि आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं अथवा आपका किसी के साथ गंभीर विवाद हो सकता है, जिसकी वजह से आप मुकदमे बाजी में भी फँस सकते हैं। यदि आपकी

जन्मकुण्डली में राहु और केतू पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि है तो आपके मान-सम्मान की क्षति हो सकती है। आपको किसी को रिश्वत लेने या देने से बचना चाहिए अन्यथा आप बहुत जल्द फँस सकते हैं।

### गुरु अर्न्तदशा

(01:06:2060--08:05:2061)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यह समय निश्चय ही आपके लिए काफी सुखदायक होगा। आप वरिष्ठ अधिकारियों और प्रभावशाली व्यक्तियों से मधुर सम्बन्ध बनायेंगे और उनसे आप प्रत्यक्ष सहयोग और अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं तो आपकी पदोन्नति हो सकती है अथवा आप कोई नया प्रभावशाली पद प्राप्त करेंगे। यदि आप व्यवसाय के क्षेत्र में हैं तो आपको काफी फायदा होगा और परिवर्तन के लिए आप कोई नया क्षेत्र चुन सकते हैं या आप कोई नया कार्यालय अथवा कम्पनी की कोई नई शाखा बहुत ही फायदेमन्द जगह पर खोलेंगे। आपको लेन-देन तथा कई स्रोतों से काफी धन प्राप्त होगा और आपकी चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी। कोई विपरीत लिंगी व्यक्ति आपके लिए विशेष खुशी का स्रोत हो सकता है और यदि आप अभी तक अविवाहित हैं तो आप किसी के साथ प्रेम सम्बन्ध भी स्थापित कर सकते हैं और बहुत जल्द आपका विवाह भी हो सकता है। अगर आप विवाहित हैं और संतान की कामना कर रहे हैं तो आपको एक भाग्यशाली संतान की प्राप्ति होगी जो कि आपके पूरे परिवार के लिए खुशी और गर्व का कारण बनेगा।

### शनि अर्न्तदशा

(08:05:2061--17:06:2062)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर है तो करेन्ट लगने

और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यह समय दो परस्पर विरोधी ग्रहों के संयुक्त प्रभाव में है। यदि दोनो ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में है तो यह समय आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है। रोजगार अथवा अन्य स्रोतों से आपकी आमदनी तात्कालिक रूप से लगातार घट सकती है और आपको लेन-देन में काफी घाटा उठाना पड़ सकता है या धन की कमी की वजह से आपको अन्य परेशानियाँ उठानी पड़ सकती है। आप समय पर अपने किये वादों को पूरा करने की स्थिति में नहीं हो सकते हैं, जिसके लिए आप काफी चिंतित हो सकते हैं। आपके मित्र और सम्बन्धी आपके लिए मददगार साबित नहीं हो सकते हैं, बल्कि वे आपसे दूरी बनाने की कोशिश करेंगे। आपको निचले तबके के लोगों द्वारा उत्पन्न किए हुए कुछ परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा पर आँच आ सकती है। इन सारी स्थितियों के कारण आपका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। इसके अलावा आपके जीवनसाथी और आपके संतान का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिंता का विषय बन सकता है। इस अवधि के दौरान आपको धुआँ, विकिरण और सूर्य की किरणों से खास तौर पर बचना चाहिए।

### बुध अर्न्तदशा

(17:06:2062--14:06:2063)

यदि केतू राशि में अकेला बैठा है, उसका राशिपति कोई शुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी अनुकूल भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल के दौरान आपको बहुत सारे शुभ फलों की प्राप्ति की उम्मीद कर सकते हैं। लेकिन, यदि केतू किसी अशुभ ग्रह के साथ बैठा है, उसका राशिपति कोई अशुभ ग्रह है, और जिस राशि में यह बैठा है उसका स्वामी प्रतिकूल त्रिका भाव (छठे या आठवें या बारहवें भाव में नहीं) में स्थित है, तो इसके दशा-काल में आपको अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि केतू सूर्य और चंद्रमा के अलावा किसी दूसरे ग्रह के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू का व्यवहार उसी ग्रह जैसा होगा। और यदि केतू सूर्य या चंद्रमा के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अंदर स्थित है, तो केतू दशा कुछ प्रतिकूल और अशुभ घटना उत्पन्न करने में सक्षम है। केतू मंगल के साथ ३ डिग्री २० मिनट के अन्दर है तो करेन्ट लगने और/अथवा आग से जलने के कारण कोई गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

यदि आपकी जन्मकुण्डली में बुध ठीक से स्थित नहीं है तो आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव आ सकते हैं। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नहीं है तो आपको किसी तरह के तात्कालिक धक्के का सामना करना पड़ सकता है अथवा परिस्थितिवश आपको अपना निवास स्थान भी बदलना पड़ सकता है। आपकी गलती न होते हुये भी अपने मित्रों और सम्बन्धियों से आपका सम्बन्ध बिगड़ सकता है और उनसे आपको कोई भी सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता है। आप काफी निराशा हो सकते हैं और उनसे अपना संबंध खत्म कर सकते हैं। आपको दूरस्थ स्थानों की कुछ निरर्थक यात्राएँ करनी पड़ सकती है और आपकी मेहनत के बावजूद भी उसका अपेक्षित फल प्राप्त नहीं होगा। आपके जीवनसाथी गलतियाँ खोजने और काफी बातूनी किस्म के हो सकते हैं जिसका वजह से आप काफी दुखीमहसूस करेंगे। आपके संतानों का स्वास्थ्य और खुशी भी आपके लिए चिन्ता का विषय होगा। यदि केतू और बुध में से कम से कम एक ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में ठीक से स्थित नहीं है तो आप अपने एक नए मित्र - जिनका संबंध किसी दूसरे समुदाय या धर्म से हो सकता है - से मदद प्राप्त कर सकते



हैं और बहुत जल्द आपकी स्थिति सामान्य हो जाएगी।

### शुक्र दशा

(14:06:2063--14:06:2083)

### शुक्र अर्न्तदशा

(14:06:2063--13:10:2066)

यह समय आपके लिए बहुत सुखमय होगा। अगर शुक्र आपकी जन्मकुण्डली में ग्रसित नहीं है तो आपके यश और सम्मान में वृद्धि होगी और आप अपने जीवन का भरपूर आनंद उठाएंगे। आप वरिष्ठ अधिकारियों और कुलीन पृष्ठभूमि के लोगों से सहयोग और लाभ प्राप्त करेंगे, खासकर प्रभावशाली स्त्रियों से। आपकी पदोन्नति होगी और आर्थिक रूप से आपकी स्थिति मजबूत होगी। अगर आप पहले से ही नौकरी कर रहे हैं तो आपके जिम्मेदारियों में वृद्धि होगी और आपकी आमदनी भी बढ़ेगी। यदि आप व्यवसाय करते हैं तो इसमें काफी उन्नति होगी, आप इसका विस्तार कर सकते हैं और आप किसी नये व्यवसाय में भी अपना हाथ आजमा सकते हैं। आप अपने और परिवार के सदस्यों के लिए फैशनेबल कपड़े, रत्न, आभूषण, इत्र और घरेलू सजावट पर काफी धन व्यय कर सकते हैं। आपका परिवारिक जीवन काफी खुशहाल और सुखमय होगा। आप सैर या पर्यटन के उद्देश्य से कई लम्बी और छोटी दोनों तरह की यात्राएँ कर सकते हैं। आप विपरित लिंगी व्यक्तियों से थोड़ी परेशानी में पड़ सकते हैं - जिनमें काफी संवेदनशील और अधिक माँग करने का स्वभाव विकसित हो सकता है।

### सूर्य अर्न्तदशा

(13:10:2066--13:10:2067)

यदि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह केन्द्र में है और दूसरा ग्रह त्रिकोण में है तो आपके जीवन में इस दशा के दौरान काफी महत्वपूर्ण बदलाव आयेगें और आपकी स्थिति में काफी सुधार होगा। यदि आपका लग्न सिंह है तो जैसा कि यह समय लग्नपति और दशमपति का सयुक्त रूप से है, इस समय में आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। लेकिन, यदि इनमें से कोई एक भी ग्रह प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो आपको कष्टकर समय से गुजरना पड़ सकता है। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों, मालिक अथवा सरकारी कर्मचारियों के साथ विवाद हो सकता है और आपको उनका कोपभाजन बनना पड़ सकता है। इसलिए आपको सावधान और सचेत रहना चाहिए। आपको कुछ विशिष्ट किस्म की घरेलू समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है या अपने निजी सम्बन्धियों से सम्पत्ति के मामले में विवाद हो सकता है जिससे आप काफी चिन्तित हो सकते हैं। आप निरंतर तनाव में हो सकते हैं जो आपके स्वास्थ्य पर असर डाल सकती है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र अस्त है तो आप किसी ऐसे रोग से ग्रसित हो सकते हैं जो आपके जननेन्द्रिय को प्रभावित करती हो या फिर आपकी आँखें भी प्रभावित हो सकती हैं।

### चन्द्र अर्न्तदशा

(13:10:2067--14:06:2069)

यह समय आपके लिए काफी शुभ और आनंदायक होगा। यह और भी शुभ हो सकता है यदि इनमें से कोई भी एक ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में चौथे घर में स्थित हो अथवा ये दोनों ग्रह एक साथ हों अथवा दोनों एक दूसरे पर दृष्टि डाल रहे हों। आपकी कुछ पुरानी अभिलाषाएँ पूरी हो सकती हैं और कुछ नए उद्देश्य किर्यान्वित होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी और अपनी रहन-सहन के स्तर में सुधार के लिए कुछ आरामदेह वस्तुएँ खरीदेंगे। आप अपने घर की आन्तरिक सजावट के लिए महँगे समान खरीद सकते हैं। आप खुशी और लाभ के लिए उत्तर या पश्चिम या उत्तर-पश्चिम दिशा में कुछ यात्राएँ कर

सकते हैं। आपके संतानों का स्वास्थ्य ठीक होगा और वो अपने कार्यों से आपको खुशियाँ प्रदान करेंगे। फिर भी, आपके जीवनसाथी कोई छोटी-मोटी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के शिकार हो सकते हैं जो आपके लिए कुछ चिन्तायें उत्पन्न कर सकता है। लेकिन यह कुछ दिनों के लिए ही है। आपका पारिवारिकजीवन खुशहाल होगा।

### मंगल अर्न्तदशा

(14:06:2069--14:08:2070)

यदि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में ठीक से स्थित नहीं है तो यह समय आपके लिए सुखदायक होगा। आपकी आमदनी, प्राप्ति और स्वामित्व में वृद्धि होगी। परन्तु आप थोड़े आलसी हो सकते हैं, और अपना कार्य ढंग से नहीं करेंगे। आप बहुत अधिक भौतिकवादी होंगे और मौज-मजे का स्वभाव विकसित होगा। आप किसी सुन्दर दिखने वाले विपरित लिंगी व्यक्ति से मधुर सम्बन्ध बना सकते हैं, यह और भी अधिक हो सकता है यदि ये दोनों ग्रह एक साथ स्थित हों या परस्पर एक-दूसरे पर दृष्टि डाल रहे हों। आप छोटी-मोटी आँख या त्वचा संबंधित रोग के शिकार हो सकते हैं। यदि ये दोनो ग्रह परस्पर और छठे और आठवें स्थान पर हैं तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप झूठ और बदनामी के शिकार हो सकते हैं। यदि शुक्र आपकी जन्मकुण्डली में छठे भाव में स्थित है और यह न तो तुंगस्थ है या न ही अपनी राशि में बैठा है या न ही अपने नक्षत्र में है तो आपको कलह या कोई दूसरी जटिलताओं का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन यदि यही स्थिति मंगलकी है तो आप किसी प्रतियोगिता में विजेता बन सकते हैं या किसी प्रतियोगी परिक्षा में सफल हो सकते हैं।

### राहु अर्न्तदशा

(14:08:2070--14:08:2073)

यदि इन दोनों ग्रहों में से कम से कम एक ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में ठीक से स्थित नहीं है तो यह समय आपके लिए बहुत सारी कठिनाइयों से भरा हो सकता है। परिस्थितियों में भारी बदलाव होने के कारण आपके आस-पास आकस्मिक बदलाव हो सकता है। आपकी आमदनी कम हो सकती है और पैसे की कमी के कारण आप अपने किये हुये वादों को निभाने के स्थिति में नहीं हो सकते हैं। आप बिना सोचे-समझे किये हुए निवेश की वजह से हानि उठा सकते हैं अथवा आपके मित्र या आपके संबंधी आपसे कर्ज लिए हुए धन वापस नहीं लौटायेगे। आपके जीवनसाथी और कुछ पारिवारिक सदस्य आपसे या आपस में नित्यक्रम की तरह झगड़ा कर सकते हैं और इन सबके कारण आप अपनी शांति खो सकते हैं तथा अपने आप को अभागा महसूस कर सकते हैं। हालाँकि, यह अप्रत्यक्ष रूप से आपके लिए फायदेमंद होगा क्योंकि इससे आप और भी अधिक निष्पक्ष होंगे और आपमें दार्शनिक छवि विकसित होगी जबकि धार्मिक क्षेत्रों में गहरा झुकाव होगा। हालाँकि, आप विलकुल एकांत नहीं पसंद करेंगे, फिर भी जहाँ तक संभव हो सकता है आप अपने आप को दूसरे लोगों से दूर रखने की कोशिश करेंगे। फिर भी यदि शुक्र और राहु दोनों ग्रह वृष राशि में बैठे हुए हैं तो यह समय आपके लिए सुखदायक होगा क्योंकि आपको कई स्रोतों से धन की प्राप्ति होगी और आपका संचय तथा स्वामित्व बढ़ेगा।

### गुरु अर्न्तदशा

(14:08:2073--13:04:2076)

यह समय आपके लिए बहुत ही सुखदायक होगा। ये दोनों शुभ ग्रह आपके जीवन में खुशियाँ लाएँगे। यदि ये दोनो ग्रह एक साथ स्थित हैं तो और भी सुखदायक होगा और यदि ये दोनों ग्रह मीन राशि में

एक साथ स्थित हैं तो ये समय आपके लिए सबसे उत्तम होगा। आय के नए स्रोत आपके लिए खुले होंगे और आपके पेशे से आमदनी बढ़ेगी। निवेश से भी आपको बढ़िया फल मिलेगा। काफी समय से बकाये धन की प्राप्ति होगी। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों एवं सरकारी कर्मचारियों से सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी। आपकी पदोन्नति हो सकती है या किसी आकर्षक संस्थान में आपको नई नौकरी प्राप्त हो सकती है। आप और आपके पारिवारिक सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके परिवार में कोई शुभ आयोजन होगा जो कि विवाह अथवा संतान के जन्म से बढ़ सकता है। यदि ये दोनो ग्रह परस्परविरोध की स्थिति में हैं तो एक तरफ जहाँ आपका रूझान कानून की पढाई की तरफ हो सकता है वहीं दूसरी तरफ संभावना है कि आप किसी लंबी चलने वाली मुकदमेबाजी में फँस सकते हैं।

### शनि अर्न्तदशा

(13:04:2076--14:06:2079)

यदि इन दोनों ग्रहों में से कोई एक आपकी जन्मकुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नहीं है तो यह समय आपके लिए खास लाभदायक नहीं होगा। अपने आप को अचानक भारी निराशा और प्रतिबंध से घिरा पाकर आपको आश्चर्य हो सकता है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रभावशाली स्थिति में नहीं है अथवा शुक्र एक या एक से अधिक अशुभ ग्रहों से ग्रसित है तो आप उत्सर्जन प्रणाली में तकलीफ, बवासीर, गठिया आदि जैसे रोगों के शिकार हो सकते हैं तथा आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आपको आँख की भी बीमारी होने की संभावना है। स्वास्थ्य खराब होने की वजह से आपको भूख भी नहीं लग सकती है और बढ़िया खाना भी बेस्वाद लग सकता है, आपको पर्याप्त नींद और आराम की कमी हो सकती है। यदि शनि शुक्र के साथ स्थित है अथवा शनि की दृष्टि शुक्र पर पड़ रही है तो आपको सतर्क रहना चाहिए क्योंकि संभावना है कि आपको पेशे में छोटे मोटे धक्के लग सकते हैं। यदि आपका लग्न वृष अथवा मकर है तो, जैसा कि यह लग्नपति और दशमपति का सयुक्त समय है, आप काफी भाग्यशाली होंगे और पेशे में काफी उन्नति होगी।

### बुध अर्न्तदशा

(14:06:2079--14:04:2082)

यदि इन दोनों ग्रहों में से कम से कम कोई एक ग्रह अथवा दोनों ग्रह किसी बुरे प्रभाव में नहीं हैं तो यह समय आपके लिए काफी फलदायक और आनंदायक होगा। यदि आप शिक्षा अथवा किसी कलात्मक क्षेत्र में हैं तो आपकी काफी उन्नति होगी। आप अपने सारे कार्यों में सफल होंगे और अपने सहज गुणों तथा विशेष कार्यों के लिए सम्मान प्राप्त करेंगे। आपको अपने रोजगार में उन्नति के बढ़िया अवसर प्राप्त हो सकते हैं और आपके सामाजिक स्तर में वृद्धि होगी। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको महँगे और आकर्षक लाभ के प्रस्ताव मिल सकते हैं। यदि आप व्यवसाय में हैं तो आप किसी नए व्यवसाय की शुरुवात कर सकते हैं, और आपके रहन-सहन के स्तर में सुधार होगा। आप किसी सांस्कृतिक अथवा शैक्षणिक कार्य के लिए दूरस्थ स्थानों की यात्रा कर सकते हैं और सफलतापूर्वक कार्य की समाप्ति पर खुशी मन से घर वापस लौट आयेंगे। आपके जीवनसाथी और संतानों का स्वास्थ्य उत्तम होगा और घरेलू जीवन शांतिमय और सुखमय होगा।

### केतु अर्न्तदशा

(14:04:2082--14:06:2083)

यदि इन दोनों ग्रहों में से कम से कम कोई एक ग्रह अथवा दोनों ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में ठीक से स्थित है तो यह समय आपके लिए ठीक नहीं होगा। आपको काफी सावधान रहना चाहिए क्योंकि भटके



हुए किसी चौपाए जानवर से आपको डर हो सकता है। इसके अलावा आपका कोई पारिवारिक सदस्य किसी छोटी-मोटी दुर्घटना का शिकार हो सकता है अथवा भोजन की विषाक्तता या गलत दवा खाने की वजह से उनका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आपकी आमदनी कम हो सकती है या आपको कुछ नुकसान हो सकता है। अथवा परिस्थितिवश आपको भारी व्यय करना पड़ सकता है। यदि आपका कोई प्रेम-प्रसंग है तो परिस्थिति में बदलाव के कारण भारी कठिनाई में पड़ सकते हैं। इस बात की भी संभावना है कि आपका कोई गुप्त रहस्य उजागर हो जाएगा, जिसकी वजह से आपको शर्मिन्दगी उठानी पड़ सकती है अथवा कोई ईर्ष्यालु व्यक्ति आपकी छवि को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकता है। आपके जीवनसाथी काफी संवेदनशील हो सकते हैं जिससे आपके लिए कई प्रकार की परेशानियाँ पैदा होगी।

## सूर्य दशा

(14:06:2083--14:06:2089)

### सूर्य अर्न्तदशा

(14:06:2083--01:10:2083)

यदि सूर्य तुंगस्थ है या अपनी राशि में है या अपने नक्षत्र में है या आपकी कुण्डली के दशवें भाव में बैठकर दिक् बल की स्थिति में है तो यह समय निश्चय ही आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा। आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों, प्राधिकारीगण, एवं सरकारी कर्मचारियों से काफी सहयोग और लाभ प्राप्त करेंगे। आपके मान-सम्मान में बेतहाशा वृद्धि होगी। आपकी विश्वसनीयता बढ़ेगी। अगर सूर्य किसी दूसरे उपचय भाव ( तीसरे या छठे या ग्यारहवें ) में बैठा है तो भी काफी बढ़िया उन्नति होगी और समय का भरपूर आनंद लेंगे। लेकिन, यदि सूर्य आपकी जन्मकुण्डली में प्रभावशाली स्थिति में नहीं है अथवा किसी कारणवश ग्रसित है तो यह समय आपके लिए काफी कठिनाईयों से भरा होगा। अपने सहकर्मियों, वरिष्ठ अधिकारियों या मालिक के साथ आपका मतभेद हो सकता है। या फिर, आप किसी दंडात्मक सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं और इसके परिणाम से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं। इसके अलावा, गहरा कलह आपके परिवार को तोड़ सकता है, जिसकी वजह से आप दुःखी महसूस करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है और आप सर दर्द, कान दर्द, मूत्र संबंधित समस्याएँ या गुरदे में तकलीफ के शिकार हो सकते हैं।

### चन्द्र अर्न्तदशा

(01:10:2083--01:04:2084)

यदि सूर्य और चन्द्रमा आपकी जन्मकुण्डली में किसी तरह से ग्रसित नहीं है तो यह समय आपके लिए बहुत बढ़िया और आनन्दायक होगा। आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों, नियोक्ता, एवं सरकारी कर्मचारियों से सहयोग और लाभ प्राप्त करेंगे। आप अपना कोई नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे अथवा किसी नये क्षेत्र में भी अपना हाथ आजमाएँगे। आपकी आय में वृद्धि होगी और उसी अनुसार रहन-सहन में भी सुधार होगा। सामाजिक स्तर पर आपकी लोकप्रियता में भी वृद्धि होगी। आप कुछ समाजिक कार्यों में भी तत्परतापूर्वक लगे हो सकते हैं। आपको किसी महिला मित्र या रिश्तेदार या परिचित आदि का विरोध सहना पड़ सकता है परन्तु आपके विरोधी तुरंत पीछे हट जाएँगे। आपके स्वास्थ्य के संदर्भ में यह समय बहुत अधिक ठीक नहीं है और अगर इन दोनों ग्रहों में से कम से कम एक ग्रह भी आपकी जन्मकुण्डली में ग्रसित है तो यह समय और भी बुरा होगा। आप अपने शरीर में रक्त प्रवाह से संबंधित किसी बीमारीके शिकार हो सकते हैं और आपकी आँखें भी प्रभावित हो सकती हैं। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य शनि से ग्रसित है तो आपकी मान-मर्यादा में कमी आ सकती है और यदि चन्द्रमा शनि से ग्रसित

है तो लोगों की कड़वी आलोचना सुननी पड़ सकती है।

### मंगल अर्न्तदशा

(01:04:2084--07:08:2084)

यदि आपकी कुण्डली में ये दोनों ग्रह एक साथ मेष राशि में स्थित हैं अथवा ये दोनों ग्रह दशवें भाव में स्थित हैं और दिक् बल बना रहे हैं जबकि मंगल अस्त नहीं है, तो यह आपके लिए बहुत सुखद स्थिति हो सकती है। आप अचानक बहुत ही प्रभावशाली स्थिति में होंगे। यदि उनमें से कोई एक ग्रह उपचय भाव (तीसरे, छठे या ग्यारहवें) में है तो भी यह समय आपके लिए बहुत फायदेमंद होगा। आप अपने कार्यों में सफलता पायेंगे और आपकी अभिलाषाएँ पूर्ण होंगीं। लेकिन यदि कुण्डली में मंगल अस्त है याठीक से स्थित नहीं है तो यह समय आपके लिए परेशानियों से भरा हो सकता है। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है तथा आपको छोटे-मोटे कष्टकारक रोग हो सकते हैं। आपको अनावश्यक खर्च करना पड़ सकता है अथवा आपको असावधानी की वजह से घाटा उठाना पड़ सकता है। आपका छोटा भाई अथवा कोई निकट का रिश्तेदार किसी बड़ी परेशानी में घिर सकता है जिसकी वजह से आप चिन्तित हो सकते हैं। यदि आपका लग्न वृश्चिक है तो, जैसा कि यह लग्नपति और दशमपति का सयुंक्त समय है, रोजगार के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त होगी।

### राहु अर्न्तदशा

(07:08:2084--02:07:2085)

जैसा कि ये दोनो ग्रह परस्पर विरोधी हैं, तो यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नहीं है तो इस दशा में आपको बहुत लाभदायक फल प्राप्त नहीं होगा। इसके अलावा यदि आपकी कुण्डली में राहु ग्रसित है तो यह समय आपके लिए और भी बुरा हो सकता है। आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ विवाद में फँस सकते हैं जिसकी वजह से आपको अपना निवास स्थान भी बदलना पड़ सकता है। आपके परिवार में कलह निरंतर हो सकता है और पारिवारिक सदस्य विभाजन चाहेंगे। या फिर आपको लंबे समय के लिए अपने घर से दूर रहना पड़ सकता है। यदि राहु आपकी कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में स्थित है तो आपको आमदनी बढ़ेगी, परन्तु उसमें उतार-चढ़ाव बहुत अधिक होगा। परन्तु यदि दोनों ग्रह ग्रसित हैं तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों के सामने अपने आचरण के लिए सफाई देनी पड़ सकती है। यदि राहु वृहस्पति या शुक्र के नक्षत्र अथवा राशि में है तो आपकी परेशानियाँ कुछ कम हो सकती हैं।

### गुरु अर्न्तदशा

(02:07:2085--20:04:2086)

यदि वृहस्पति आपकी कुण्डली में अस्त नहीं है या किसी तरह से ग्रसित नहीं है तो यह समय आपके लिए काफी आनंदायक होगा, जो कि आपको काफी उन्नति और परम संतोष देगा। आपको कई स्रोतों - खासकर सरकारी विभागों - से लाभ प्राप्त होगा। आपको किसी बड़ी वित्तीय संस्था से निवेश के लिए कोई बड़ी राशि मिल सकती है। निश्चित रूप से आप किसी विशिष्ट पद पर जाएँगे। आपके दुश्मन पीछेहटेंगे और सारी रूकावटें दूर होंगीं। यदि आप कोई ऊँची शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आपको कोई प्रतिष्ठित उपाधि मिल सकती है। यदि आप ऊँची शिक्षा के लिए विदेश जाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए उपयुक्त है। यदि किसी के साथ आपका कोई प्रेम-प्रसंग चल रहा है तो बहुत जल्द आपकी शादी हो सकती है। यदि आप विवाहित हैं और संतान चाहते हैं तो संभावना है कि आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। आपकी खुशियों में और भी इजाफा हो सकता है यदि आपका लग्न सिंह हो, क्योंकि यह

लग्नपति और पॉचवें भाव के स्वामी का संयुक्त दशा है। लेकिन, यदि आपका लग्न वृष है - जैसा कि यह समय चौथे भाव के स्वामी और आठवें भाव के स्वामी का है - तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आपको पानी से डर हो सकता है।

### शनि अर्न्तदशा

(20:04:2086--02:04:2087)

जैसा कि ये दोनो ग्रह एक दूसरे के घोर विरोधी हैं, यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नहीं है तो संभावना है कि यह समय आपके लिए अधिक लाभदायक नहीं होगा। और यदि सूर्य या शनि में से कोई भी ग्रह ग्रसित है तो यह समय आपके लिए और भी बुरा हो सकता है। अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकूल ग्रह युति उपस्थित नहीं है तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों या मालिक का कोपभाजन बनना पड़ सकता है और आपके अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ गहरे मतभेद हो सकते हैं। आपको अपने पिता, पुत्र अथवा जीवनसाथी से बिगाड़ हो सकता है और आपको इनके साथ कानूनी विवाद का सामना भी करना पड़ सकता है। इसके अलावा आपका स्वास्थ्य भी चिंताजनक हो सकता है और आपको कहीं उंचे स्थान से गिरने या टक्कर से हड्डी टूटने का भी खतरा हो सकता है। आप अपने जीवनसाथी या संतानों के व्यवहार से या किसी नुकसान से दुःखी हो सकते हैं, आप चिड़चिड़े हो सकते हैं और अकारण ही गुस्सा करने लगेंगे। यदि आपका लग्न सिंह है तो - जैसा कि यह लग्नपति और सप्तमपति का संयुक्त समय है - यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य और शनि एक दूसरे पर विपरीत दृष्टि डाल कर रहे हैं तो आप कानूनी पचड़ों में पड़ सकते हैं जो कि लम्बे समय तक चलेगी और अंत में आपके विरोधी के पक्ष में जाएगी।

### बुध अर्न्तदशा

(02:04:2087--06:02:2088)

यदि बुध आपकी कुण्डली में अस्त नहीं है और दोनो ग्रह या तो सिंह या मिथुन या कन्या राशि में बैठे हैं तो यह समय आपके लिए अत्यंत भाग्यशाली होगा। यदि आप शिक्षा अथवा किसी बौद्धिक क्षेत्र में हैं तो आपको असाधारण सफलता मिलेगी। अगर आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आपकी काफी उन्नति होगी। लेकिन, यदि आपकी कुण्डली में इनमें से कोई एक ग्रह भी ग्रसित है तो यह समय आपके लिए उतना भाग्यशाली नहीं हो सकता है। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से अनबन हो सकती है और आपके मित्र अथवा कुछ रिश्तेदार आपके विरोधी बनेंगे। आप अपने मान--सम्मान को लेकर निरंतर चिन्तित हो सकते हैं, न तो ठीक से भूख लगेगी और न ही ठीक से सो पाएंगे। आपके संतान भी कुछ समस्याएँ पैदा कर सकते हैं और दूरस्थ स्थानों की कुछ यात्राएँ कर सकते हैं जो कि लाभदायक नहीं हो सकता है। आपको अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए, क्योंकि आप थोड़े-बहुत प्रभावित हो सकते हैं। यदि बुध अस्त है तो आपको आँखों में कुछ परेशानी हो सकती है। आपको अपच, भूख न लगने तथा अनिद्रा जैसी बिमारी भी हो सकती है।

### केतु अर्न्तदशा

(06:02:2088--13:06:2088)

ये दोनों ग्रह एक दूसरे के घोर विरोधी हैं, यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नहीं है तो संभावना है कि यह समय आपके लिए अधिक लाभदायक नहीं होगा। यदि इनमें से कोई एक ग्रह भी ठीक स्थिति में नहीं है तो यह समय आपके लिए बुरा हो सकता है। आपका दिमाग शांत नहीं

होगा, उसमें बहुत सारे शक और बुरे ख्याल भरे रहेंगे। आप अपने मित्रों और संबंधियों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं। अपने मकान मालिक के साथ गंभीर मतभेद के कारण आप किसी दूसरे मकानमें रहने को विवश हो सकते हैं। या फिर, परिस्थितियों में बदलाव के कारण आपको अपना घर छोड़ना पड़ सकता है। आप बहुत निराश हो सकते हैं और आप चाहेगें कि परिस्थितियों में जल्दी से कोई बड़ा बदलाव हो। अगर केतु उपचय भाव में बैठा है अथवा अपने नक्षत्र में बैठा है तो आप किसी नये मित्र से सहयोग पाएँगे जो किसी अलग समुदाय या धर्म से भी हो सकता है और नई शुरूआत के लिए किसी दूरस्थ स्थान को जाएँगे। यह आपके लिए लाभदायक बदलाव होगा।

### शुक्र अर्न्तदशा

(13:06:2088--14:06:2089)

अगर आपकी कुण्डली में शुक्र अस्त नहीं है अथवा किसी अन्य बुरे प्रभाव में नहीं है तो यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा। यह और भी लाभदायक होगा यदि इनमें से कोई एक ग्रह केन्द्र में और एक त्रिकोण भाव में बैठा हो। यदि आपका लग्न सिंह है तो यह लग्नपति और दशमपति का सयुक्तसमय है। आप अपने व्यवसाय में बड़ी उन्नति की आशा कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में इन दोनों ग्रहों में से कम से कम एक ग्रह भी ठीक से स्थित है तो यह समय आपके लिए उन्नति वाला होगा। आप सरकारी स्रोतों और कुलीन पृष्ठभूमि के लोगों से काफी लाभ प्राप्त करेंगे। आपके सम्बन्धों का दायरा ऊँचा होगा और आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको सम्मान की प्राप्ति होगी। अगर आपका विवाह नहीं हुआ है तो होने की संभावना प्रबल है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र अस्त है अथवा किसी बुरे प्रभाव में है तो आप छोटी-मोटी बिमारियों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको आँख और प्रजनन संबंधी कुछ समस्याएँ हो सकती हैं।

# Sample



**Date of Birth : 18 December 1973 (Tuesday)**

**Time of Birth : 01:45:00AM**

**Place of Birth : Hyderabad , INDIA**

**Longitude : 078:29:00E**

**Latitude : 017:23:00N**

**Mindsutra Software Technologies**

**[www.mindsutra.com](http://www.mindsutra.com)**

**New Delhi**

**Contact - 9818193410,9350247058**

## ज्योतिष सारिणी

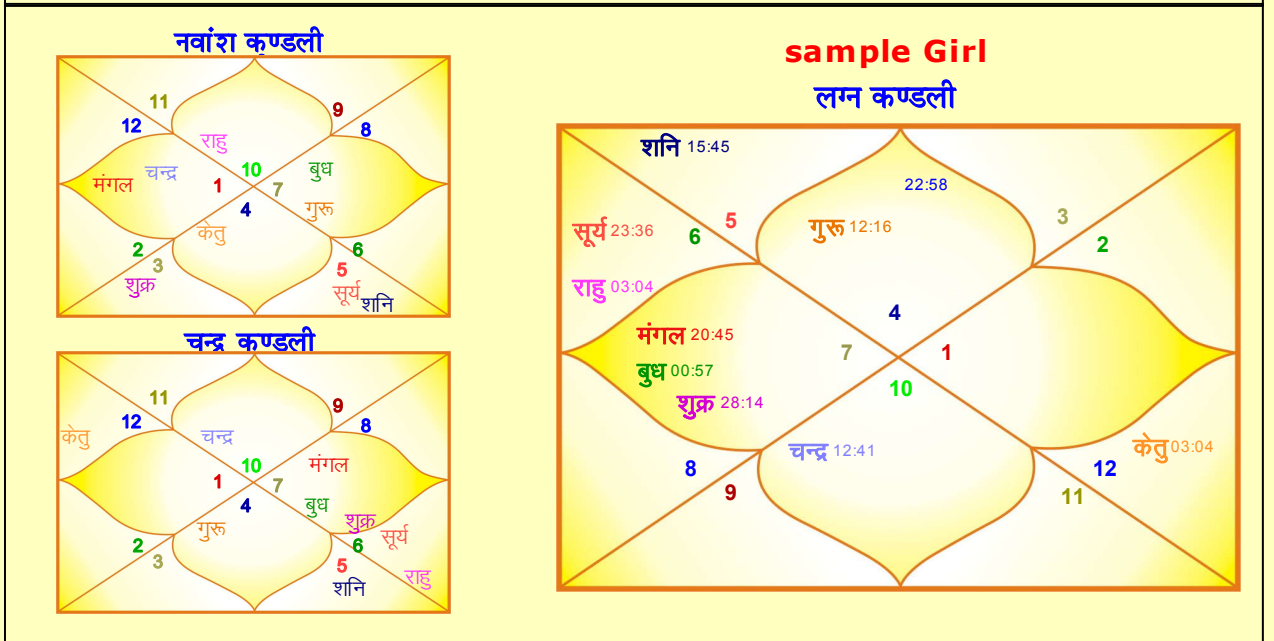
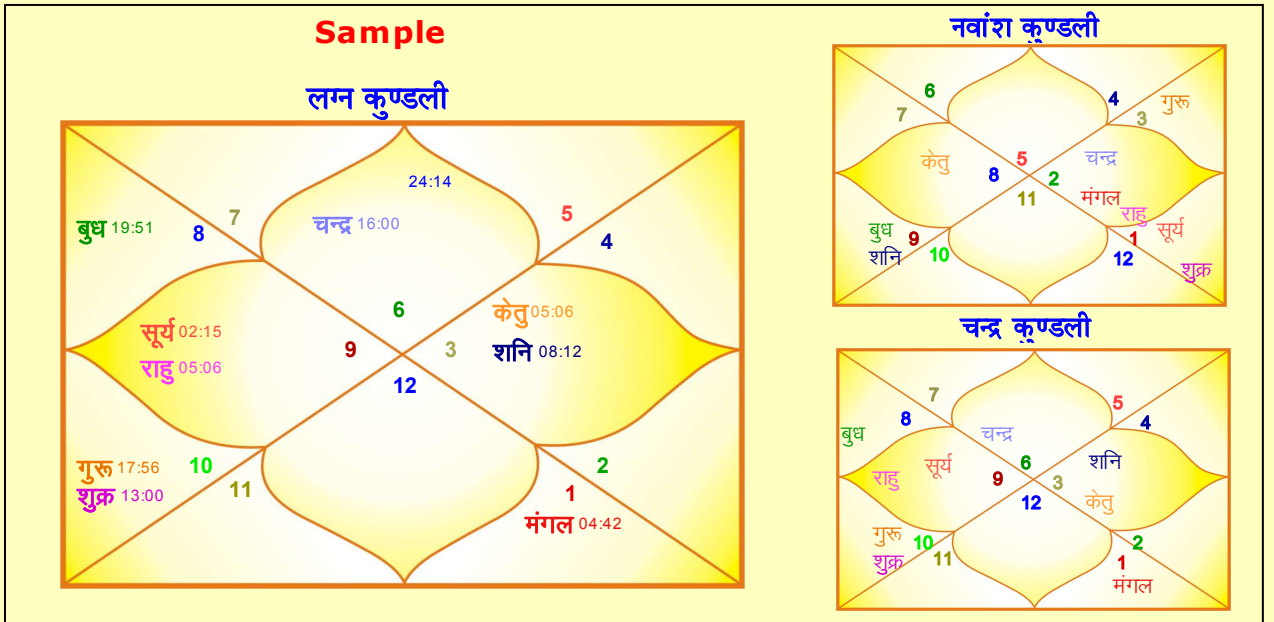
	<b>Sample</b>	<b>sample Girl</b>
जन्म दिन-	18 December 1973 (Tuesday)	11 October 1978 (Wednesday)
जन्म समय-	01:45:00AM	01:45:00AM
जन्म स्थान-	Hyderabad , INDIA	New Delhi , INDIA
रेखांश-	078:29:00E	077:13:00E
अक्षांश-	017:23:00N	028:39:00N
समयक्षेत्र-	-05:30:00 hrs	-05:30:00 hrs
समय संशोधन-	00:00:00 hrs	00:00:00 hrs
जीएमटी. समय-	20:15:00 hrs	20:15:00 hrs
स्थानीय समय संस्कार-	-00:16:04 hrs	-00:21:08 hrs
स्थानीय समय-	01:28:56 hrs	01:23:52 hrs

लग्न :	कन्या	कर्क
लग्नाधिपति :	बुध	चन्द्र
राशि (चन्द्रमा) :	कन्या	मकर
राशिपति :	बुध	शनि
नक्षत्र :	हस्त	श्रवण
नक्षत्रपति :	चन्द्र	चन्द्र
नक्षत्र चरण :	2	1
पाया :	स्वर्ण	ताम्र
ऋतु :	हेमन्त	शरद
मास :	पौष	आश्विन
पक्ष :	कृष्ण	शुक्ल
तिथि :	नवमी	दशमी
तिथि श्रेणी :	रिक्ता	पूर्णा
तिथि पति :	सूर्य	चन्द्र
करण :	गरिज	तैत्तिल
करण श्रेणी :	चर	चर
करणपति :	वासुदेव	इन्द्र
गण :	देव	देव
वर्ण :	वैश्य	वैश्य
योनि :	महिष (स्त्री)	वानर (स्त्री)
सूर्य सिद्धान्त योग :	सौभाग्य	धृति
रज्जु :	कंठ	कंठ
वश्य :	द्विपद	जलचर
तत्व :	अग्नि	वायु
तत्वाधिपति :	मंगल	शनि
विहग :	वायस	कुक्कुट
नाड़ी :	आदि	अन्त
नाड़ी पद :	मध्य	आदि
वेध :	शतभिषा	आर्द्रा
आद्याक्षर :	श	जु



ग्रह स्थिति

Sample					sample Girl					
ग्रह	रशि	डिग्री	नक्षत्र		ग्रह	रशि	डिग्री	नक्षत्र		
लग्न	कन्या	24:14:37	चित्रा (१)	- -	लग्न	कर्क	22:58:08	आरलेषा (२)	-	-
सूर्य	धनु	02:15:49	मूल (१)	मि०ग्र० ग्र०	सूर्य	कन्या	23:36:39	चित्रा (१)		दु०ग्रह
चन्द्र	कन्या	16:00:58	हस्त (२)	श०ग्र० -	चन्द्र	मकर	12:41:58	श्रवण (१)		-
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी (२)	मूत्रि -	मंगल	तुला	20:45:33	विशाखा (१)		शु०ग्र०
बुध	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (१)	श०ग्र० -	बुध	तुला	00:57:43	चित्रा (३)		शु०ग्र०
गुरु	मकर	17:56:39	श्रवण (३)	त०ग्र०शु०ग्र०	गुरु	कर्क	12:16:35	पुष्य (३)		-
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण (१)	मि०ग्र०शु०ग्र०	शुक्र	तुला	28:14:18	विशाखा (३)		शु०ग्र०
शनि व०	मिथुन	08:12:34	आर्द्रा (१)	त०ग्र० ग्र०	शनि	सिंह	15:45:55	पूर्वाफलगुनी (१)		-
राहु व०	धनु	05:06:53	मूल (२)	मि०ग्र०दु०ग्रह	राहु	कन्या	03:04:26	उत्तराफलगुनी (२)		दु०ग्रह
केतु व०	मिथुन	05:06:53	मृगशिर (४)	त०ग्र०दु०ग्रह	केतु	मीन	03:04:26	पूर्वाभाद्रपद (४)		-
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा (४)	- -	हर्षल	तुला	21:21:53	विशाखा (१)		शु०ग्र०
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (४)	- शु०ग्र०	नेपच्यून	वृश्चिक	22:29:55	ज्येष्ठा (२)		-
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्त (१)	- दु०ग्रह	प्लूटो	कन्या	23:03:42	हस्त (४)		ज्व०





## विवाह मेलापक सारिणी (अष्टकूट सिद्धान्त के अनुसार)

क्र०स०	विवरण	Sample	sample	पूर्णांक	प्राप्तांक	अभिप्राय
1	वर्ण कूट	वैश्य	वैश्य	1	1	दैविय विकास
2	वश्य कूट	द्विपद	जलघर	2	0.5	प्राकृतिक सामंजस्य
3	तारा कूट	जन्म	जन्म	3	3	सम्बन्ध का स्थायित्व
4	योनि कूट	महिष (स्त्री)	वानर (स्त्री)	4	2	प्रत्यक्ष गुण
5	ग्रह-मैत्री कूट	बुध	शनि	5	4	मानसिक प्रकृति
6	गण कूट	देव	देव	6	6	विवाह सम्बन्धि अनुरूपता
7	राशि कूट	कन्या	मकर	7	0	आपसी तालमेल
8	नाड़ी कूट	आदि	अन्त	8	8	मानसिक मानक
<b>योग</b>				<b>36</b>	<b>24.5</b>	<b>68.1%</b>

### दाम्पत्य सम्बन्धित अन्य विचार

क्र०स०	विवरण	परिणाम
1	नाड़ी-पद कूट	चूकि नाड़ी कूट समझौता भावी दम्पति के कुण्डलियों में उपस्थित है, इसलिए नाड़ी-पद समझौता पर ध्यान देना जरूरी नहीं है।
2	महेन्द्र कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों में महेन्द्र कूट समझौता उपस्थित है। यह वैवाहिक स्थिरता और लम्बे जीवन की ओर संकेत करता है।
3	स्त्री दीर्घ कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों में स्त्रीदीर्घ कूट समझौता उपस्थित है। यह बहुत अच्छे वैवाहिक एकरूपता और विवाह सम्बन्धि अनुरूपता का सूचक है।
4	रज्जु कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों में रज्जु कूट समझौता अनुपस्थित है। यदि कुण्डली में कोई सुधार की संभावना उपस्थित नहीं है तो भावी पत्नी के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।
5	वेध कूट	चूकि वर और बधु के चन्द्रमा के नक्षत्र परस्पर वेध सम्बन्ध नहीं स्थापित करते हैं, वे एक दूसरे को अच्छी तरह से समझेंगे और किसी तरह का आपसी वैमनस्य होने की संभावना कम ही है।
6	समान जन्म राशि	वर और वधु के चन्द्रमा के राशि एक समान नहीं है, इसलिए समान जन्म राशि का प्रश्न ही नहीं है।
7	समान जन्म नक्षत्र	वर और वधु के नक्षत्र एक समान नहीं है।
8	समान जन्म नक्षत्र-पद	चूकि वर-वधु के चन्द्रमा का नक्षत्र एक समान नहीं है इसलिए नक्षत्र पद को देखने की जरूरत नहीं और इस विवाह की अनुमति है।

### सुक्ष्मग्राही बिन्दु

Sample		sample Girl	
बीज-स्फुट(१)	093:12:44	क्षेत्र-स्फुट(१)	225:44:06
बीज-स्फुट(२)	161:54:01	क्षेत्र-स्फुट(२)	239:54:15
बीज-स्फुट(३)	356:43:53	क्षेत्र-स्फुट(३)	334:50:39
शु लक्षण	52 %	शु लक्षण	64 %

## कुज दोष (या मांगलिक दोष) की उपस्थिति की जाँच

लड़की की कुण्डली में, मंगल लग्न से ४थी राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जाँच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यमान है, या नहीं।

लड़के की कुण्डली में, मंगल लग्न से ८वीं राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जाँच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यमान है, या नहीं।

लड़के की कुण्डली में, मंगल चन्द्रमा राशि से ८वीं राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जाँच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यमान है, या नहीं।

लड़के की कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि में स्थित है। उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार, यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जाँच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यमान है, या नहीं। हालाँकि, दक्षिण भारतीय पद्धति के अनुसार, मंगल की शुक्र राशि में उपस्थिति कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण नहीं करती है।

लड़के की कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से ४थी राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जाँच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यमान है, या नहीं।

## कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निस्तारण

लड़के की कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से ४थे भाव में स्थित है। यह आभासी रूप से कुजा दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। लेकिन, चूँकि मंगल अपनी ही राशि में स्थित है, अतः यह एक अपवाद है – जैसाकि यह दोष स्वतः समाप्त हो जाता है। लड़के की कुण्डली में कुज दोष तकनीकी रूप से अनुपस्थित माना जायेगा।

लड़की की कुण्डली में, बृहस्पति लग्न राशि में स्थित है। यह एक अपवाद है, जहाँ पर कुज दोष को जाँचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। लड़की मांगलिक दोष से मुक्त है – वह मंगली नहीं है।

लड़के की कुण्डली में, मंगल चर राशि में स्थित है। कुछ लोगों के अनुसार यह एक अपवाद है, जहाँ पर कुज दोष को जाँचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। लड़का मांगलिक दोष से मुक्त है – वह मंगली नहीं है। (हालाँकि इस राय को बहुमत नहीं प्राप्त है।)

लड़की की कुण्डली में, मंगल चर राशि में स्थित है, कुछ लोगों के अनुसार यह एक अपवाद है, जहाँ

पर कुज दोष को जाँचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। लड़का मांगलिक दोष से मुक्त है - वह मंगली नहीं है। ( हालाँकि इस राय को बहुमत नहीं प्राप्त है। )

लड़का और लड़की दोनों की कुण्डलियों में कुज दोष (या मांगलिक दोष) आभासी रूप से उपस्थित है (उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार)। लेकिन प्रत्येक मामले में, कुछ निश्चित परिस्थितियों की उपस्थिति के कारण, दोष निरस्त हो जाता है। अतः इस दोष के निस्तारण का प्रश्न ही नहीं उठता है। अतः तकनीकी रूप से लड़का और लड़की मंगली नहीं हैं। अतः इस आधार पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती है। यदि अन्य कारक अनुकूल होते हैं, तो ये दोनों विवाह कर सकते हैं।

## वर-वधु की कुण्डली में वैवाहिक सामंजस्य की जांच-अष्ट-कुट मिलान से

### वर्ण कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच -

लड़के और लड़की दोनों का वर्ण वैश्य है। यह बहुत अनुकूल है, और इस कारण से वैवाहिक अनुकूलता पूर्ण रूप से विद्यमान है। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 9 (पूर्णांक - 9) है।

### वश्य कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच -

लड़के का वश्य द्विपद है और लड़की का वश्य जलचर समूह का है। यह बहुत अनुकूल नहीं है, और इस कारण से वैवाहिक अनुकूलता केवल नाम मात्र विद्यमान है। इस गणना के अनुसार, कूट मिलान का प्राप्तांक 0.5 (पूर्णांक - 2) है।

### तारा कुट (दिन कुट) सामंजस्य की उपस्थिति की जांच -

लड़की के जन्म नक्षत्र से लड़के के जन्म नक्षत्र तक गणना करने पर 9६ संख्या प्राप्त होती है। ६ से विभाजित करने पर इसमें 9 शेष बचता है, जो अनुकूल नहीं है। लड़के के जन्म नक्षत्र से लड़की के जन्मनक्षत्र तक गणना करने पर 90 संख्या प्राप्त होती है। ६ से विभाजित करने पर इसमें 9 शेष बचता है, जो अनुकूल नहीं है। अतः दिन (तारा) कूट के कारण इस कुण्डली में वैवाहिक अनुकूलता आंशिक तौर पर उपस्थित है। इस गणना के अनुसार, कूट - मिलान संख्या में 9.5 अंकों (पूर्णांक - 3) का योगदान होगा।

### योनि कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच -

वर का नक्षत्र महिष (स्त्री) श्रेणी का है, जबकि वधु का नक्षत्र वानर (स्त्री) श्रेणी का है। योनि-कूट मिलान के अनुसार, इस जोड़ी के लिए, 2 गुण का योगदान है।

### ग्रह-मैत्रि सामंजस्य कुट की उपस्थिति की जांच -

लड़के का जन्म राशिपति बुध है, और लड़की का जन्म राशिपति शनि है। नैसर्गिक संबंध के अनुसार, ये दोनों अधिपति ग्रह परस्पर सम हैं। यह एक बहुत अनुकूल युति है, जैसाकि यह विशेष कूट युग्म के मनोवैज्ञानिक स्वभावों को दर्शाता है। युग्म की मानसिक विशेषतायें बहुत अनुकूल होंगी, और उन दोनों में एक दूसरे से काफी लगाव होगा, जोकि वैवाहिक जीवन में खुशियों के लिये एक महत्वपूर्ण कारक है। इस कारण से कूट मिलान संख्या में 8 अंकों (पूर्णांक - 5) का योगदान होगा।

### गण कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच -

लड़के का नक्षत्र देव गण श्रेणी में है, जबकि लड़की का नक्षत्र भी देव गण श्रेणी में स्थित है। यह बहुत अनुकूल युति है, जैसा की गण व्यक्तिके मिजाज और रूझान को व्यक्त करता है। संभावित युग्म के दोनों सदस्य परिपक्व दृष्टिकोण और धैर्यवान प्रकृति के होंगे। वे कुछ अति वांछित गुणों से पूर्ण होंगे। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 6 (पूर्णांक - 6) है।

### राशि कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच -

लड़के की जन्म राशि कन्या है, जबकि लड़की की जन्म राशि मकर ये दोनों राशियाँ एक दूसरे के साथ परस्पर प्रतिकूल त्रिकोण (५-६) संबंध में हैं, वैवाहिक जीवन में संतान के खराब स्वास्थ्य या संतान के कारण जो बाद में अयोग्य साबित हो सकती है, दुःखों का संकेत है। अतः इस कारण से कूट मिलान का

प्राप्तांक 0 है। यदि कुछ बहुत बली प्रतिकारी प्रभाव दोनों की कुण्डलियों में उपस्थित नहीं हैं, तो विवाहकी स्वीकृति नहीं दी जानी चाहिये।

### नाड़ी कुट सामंजस्य की उपस्थिति की जांच -

वर की नाड़ी आदि श्रेणी का है, जबकि वधू की नाड़ी अन्त श्रेणी का है। जैसा कि वर और वधू की नाड़ी समान श्रेणी की नहीं है, संकेत लाभदायक हैं। दोनों को विवाह की सलाह दी जा सकती है। कूट-मिलान का कुल योग 9८ से कम नहीं है। इस हिसाब से योगदान ८ गुण का है।

वर्ष पूर्ण-

47

वर्षफल काल-

18:12:2020--18:12:2021



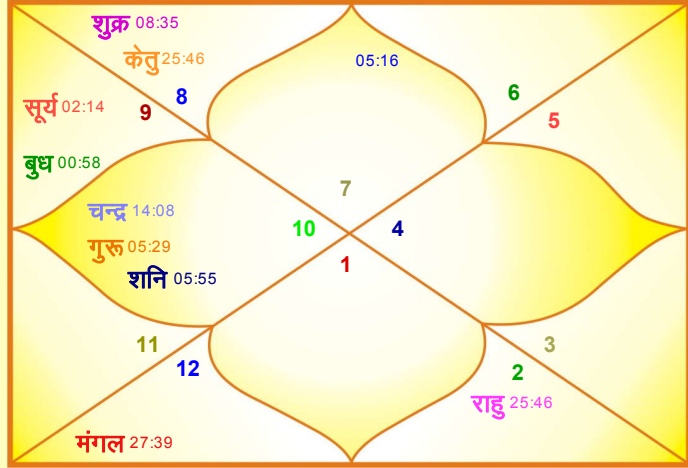
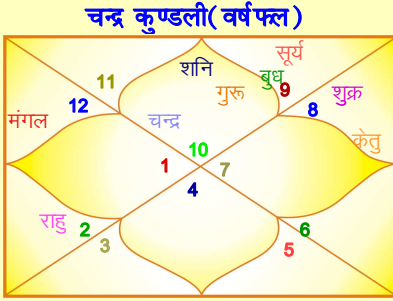
ग्रह स्थिति



जन्म					वर्षफल					
ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र		ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र		
लग्न	कन्या	24:14:37	चित्रा (१)	- -	लग्न	तुला	05:16:06	चित्रा (४)	- -	
सूर्य	धनु	02:15:49	मूल (१)	मि०ग्र० ग्र०	सूर्य	धनु	02:14:53	मूल (१)		शु०ग्र०
चन्द्र	कन्या	16:00:58	हस्त (२)	श०ग्र० -	चन्द्र	मकर	14:08:06	श्रवण (२)		शु०ग्र०
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी (२)	मूत्रि -	मंगल	मीन	27:39:24	रेवती (४)		-
बुध	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (१)	श०ग्र० -	बुध	धनु	00:58:41	मूल (१)		ज्व०
गुरु	मकर	17:56:39	श्रवण (३)	त०ग्र०शु०ग्र०	गुरु	मकर	05:29:30	उत्तराषाढ़ (३)		शु०ग्र०
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण (१)	मि०ग्र०शु०ग्र०	शुक्र	वृश्चिक	08:35:50	अनुराधा (२)		दु०ग्र०
शनि व०	मिथुन	08:12:34	आर्द्रा (१)	त०ग्र० ग्र०	शनि	मकर	05:55:30	उत्तराषाढ़ (३)		शु०ग्र०
राहु व०	धनु	05:06:53	मूल (२)	मि०ग्र०दु०ग्र०	राहु व०	वृष	25:46:34	मृगशिर (१)	व०	-
केतु व०	मिथुन	05:06:53	मृगशिर (४)	त०ग्र०दु०ग्र०	केतु व०	वृश्चिक	25:46:34	ज्येष्ठा (३)	व०	शु०ग्र०
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा (४)	- -	हर्षल व०	मेष	12:53:46	अश्विनी (४)	व०	-
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (४)	- शु०ग्र०	नेपच्यून	कुम्भ	24:07:12	पूर्वाभाद्रपद (२)		-
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्त (१)	- दु०ग्र०	प्लूटो	धनु	29:35:50	उत्तराषाढ़ (१)		शु०ग्र०

Varsha-Phala Section

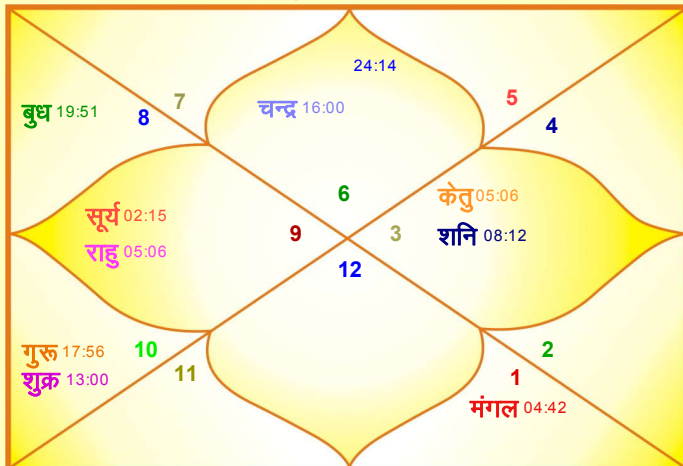
लग्न कण्डली(वर्षफल)



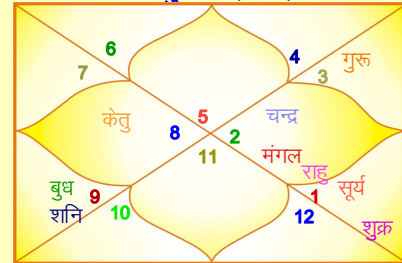
मुन्था राशि- सिंह  
मुन्था भाव- ११

Natal Section

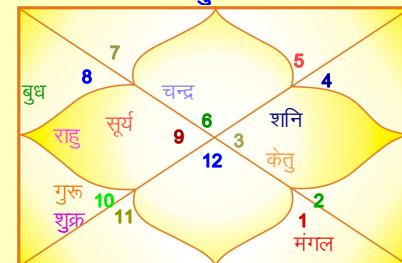
लग्न कुण्डली(जन्म)



नवांश कुण्डली(जन्म)



चन्द्र कुण्डली



Year Completed-47 ( Varshphal - From-18:12:2020 To-18:12:2021)

## वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

पंचवर्गीय बल								
क्र स	बल का नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	क्षेत्र बल	15.00	07.50	15.00	07.50	07.50	07.50	30.00
2	उच्च बल	05.81	07.90	13.37	11.56	00.05	04.62	11.56
3	हृदा बल	07.50	03.75	15.00	03.75	03.75	15.00	07.50
4	द्रेक्कन बल	05.00	02.50	10.00	02.50	02.50	02.50	10.00
5	नवांश बल	02.50	01.25	02.50	01.25	01.25	02.50	05.00
कुल बल		35.81	22.9	55.87	26.56	15.05	32.12	64.06
तुलनात्मक बल		साधारण	साधारण	बलशाली	साधारण	दुर्बल	साधारण	पूर्णबली

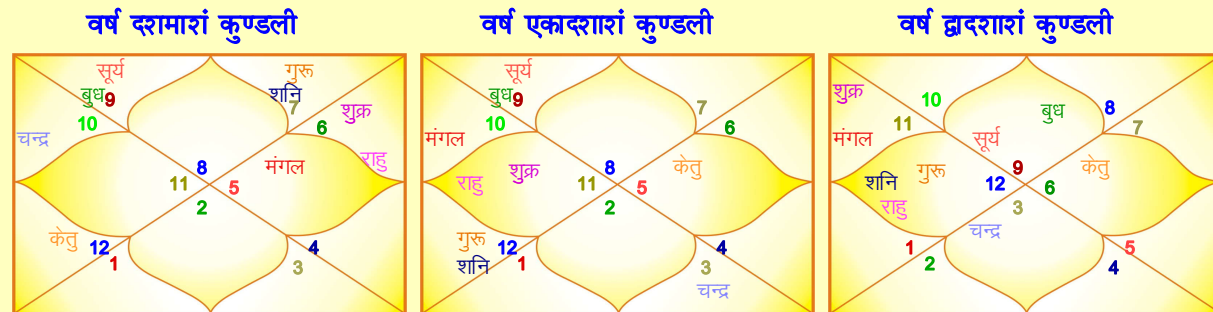
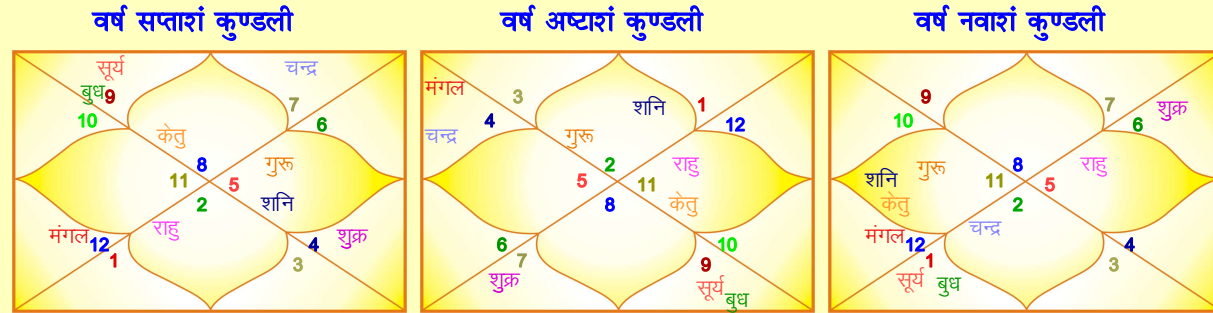
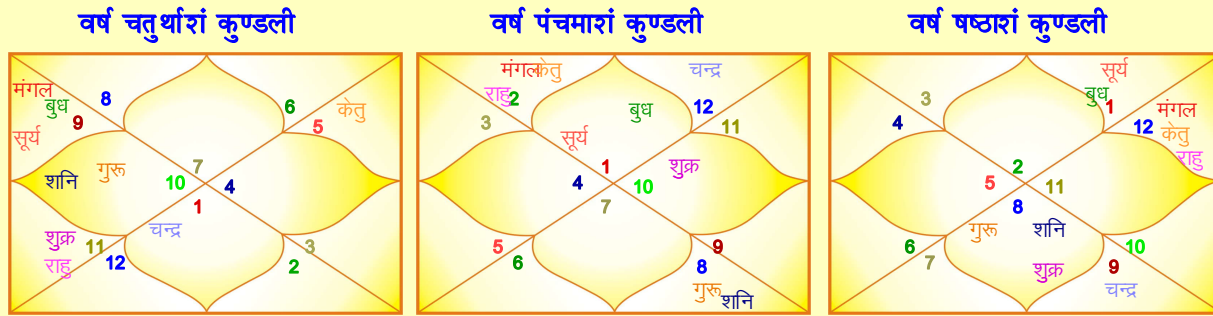
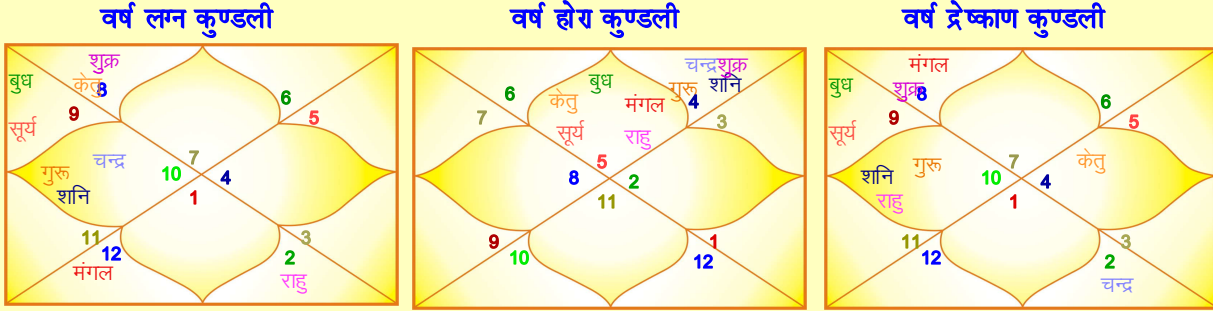
द्ववादश वर्गीय बल								
क्र स	बल का नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	राशि बल	+1	-1	+1	-1	-1	-1	+1
2	होरा बल	+1	+1	+1	-1	+1	-1	-1
3	द्रेक्कन बल	+1	-1	+1	-1	-1	-1	+1
4	चतुर्थांश बल	+1	+1	+1	-1	-1	+1	+1
5	पंचमांश बल	+1	+1	-1	-1	+1	+1	-1
6	षष्ठांश बल	+1	+1	+1	-1	+1	-1	-1
7	सप्तमांश बल	+1	-1	+1	-1	+1	-1	-1
8	अष्टमांश बल	+1	+1	+1	-1	-1	+1	+1
9	नवांश बल	+1	-1	+1	-1	-1	+1	+1
10	दशांश बल	+1	-1	+1	-1	-1	+1	+1
11	एकादशांश बल	+1	-1	-1	-1	+1	+1	-1
12	द्ववादशांश बल	+1	-1	-1	-1	+1	+1	-1
कुल बल		+12	-2	+6	-12	0	+2	0
तुलनात्मक बल		असाधारण	सम	बहुत सुन्दर	बदतर	सम	साधारण	सम

हर्ष बल								
क्र स	बल का नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	स्थान बल	0	0	5	0	0	0	0
2	क्षेत्र बल	0	0	0	0	0	0	5
3	ओज-युग्म बल	0	0	5	5	5	5	0
4	दिवा-रात्रि बल	0	5	0	5	0	5	5
कुल बल		0	5	10	10	5	10	10
तुलनात्मक बल		निर्बली	अल्पबली	मध्यबली	मध्यबली	अल्पबली	मध्यबली	मध्यबली



Year Completed-47 ( Varshphal - From-18:12:2020 To-18:12:2021)

**द्वादश वर्ग कुण्डली**



## Year Completed-47 ( Varshphal - From-18:12:2020 To-18:12:2021)

## पत्ययनी दशा

क्र स	दशा का नाम	दशा काल	से -----तक
1	बुध	0 y.0 m.13 d.	18:12:2020 To 31:12:2020
2	सूर्य	0 y.0 m.17 d.	31:12:2020 To 16:01:2021
3	लग्न	0 y.1 m.9 d.	16:01:2021 To 25:02:2021
4	गुरु	0 y.0 m.3 d.	25:02:2021 To 28:02:2021
5	शनि	0 y.0 m.6 d.	28:02:2021 To 06:03:2021
6	शुक्र	0 y.1 m.5 d.	06:03:2021 To 10:04:2021
7	चन्द्र	0 y.2 m.12 d.	10:04:2021 To 22:06:2021
8	मंगल	0 y.5 m.26 d.	22:06:2021 To 18:12:2021

## मुद्दा विंशोत्तरी दशा

क्र स	दशा का नाम	दशा काल	से -----तक
1	राहु	0 y.1 m.24 d.	18:12:2020 -- 10:02:2021
2	गुरु	0 y.1 m.18 d.	10:02:2021 -- 31:03:2021
3	शनि	0 y.1 m.27 d.	31:03:2021 -- 28:05:2021
4	बुध	0 y.1 m.21 d.	28:05:2021 -- 19:07:2021
5	केतु	0 y.0 m.21 d.	19:07:2021 -- 09:08:2021
6	शुक्र	0 y.2 m.0 d.	09:08:2021 -- 09:10:2021
7	सूर्य	0 y.0 m.18 d.	09:10:2021 -- 27:10:2021
8	चन्द्र	0 y.1 m.0 d.	27:10:2021 -- 26:11:2021
9	मंगल	0 y.0 m.21 d.	26:11:2021 -- 18:12:2021

## मददा योगिनी दशा

क्र स	दशा का नाम	दशा काल	से -----तक
1	मंगला (चन्द्रमा) दशा	0 y.0 m.10 d.	18:12:2020 -- 28:12:2020
2	पिंगला (सूर्य) दशा	0 y.0 m.20 d.	28:12:2020 -- 17:01:2021
3	धन्या (बृहस्पति) दशा	0 y.1 m.0 d.	17:01:2021 -- 16:02:2021
4	मरी (मंगल) दशा	0 y.1 m.10 d.	16:02:2021 -- 29:03:2021
5	दिका (बुध) दशा	0 y.1 m.20 d.	29:03:2021 -- 19:05:2021
6	उल्का (शनि) दशा	0 y.2 m.0 d.	19:05:2021 -- 19:07:2021
7	सिद्धा (शुक्र) दशा	0 y.2 m.10 d.	19:07:2021 -- 28:09:2021
8	संकटा (राहु) दशा	0 y.2 m.20 d.	28:09:2021 -- 18:12:2021

## मददा षोडशोत्तरी दशा

क्र स	दशा का नाम	दशा काल	से -----तक
1	मंगल	0 y.1 m.7 d.	18:12:2020 -- 24:01:2021
2	गुरु	0 y.1 m.10 d.	24:01:2021 -- 06:03:2021
3	सूर्य	0 y.1 m.4 d.	06:03:2021 -- 10:04:2021
4	मंगल	0 y.1 m.7 d.	10:04:2021 -- 18:05:2021
5	गुरु	0 y.1 m.10 d.	18:05:2021 -- 28:06:2021
6	शनि	0 y.1 m.13 d.	28:06:2021 -- 11:08:2021
7	केतु	0 y.1 m.17 d.	11:08:2021 -- 27:09:2021
8	चन्द्र	0 y.1 m.20 d.	27:09:2021 -- 16:11:2021

आपकी कुण्डली में मुद्दा षोडशोत्तरी दशा लागू नहीं हो रही है।

## जैमिनी चर दशा - वर्षफल

क्र स	दशा का नाम	दशा काल	से -----तक
1	तुला दशा	0 y.0 m.4 d.	18:12:2020 -- 21:12:2020
2	वृश्चिक दशा	0 y.0 m.15 d.	21:12:2020 -- 05:01:2021
3	धनु दशा	0 y.0 m.4 d.	05:01:2021 -- 09:01:2021
4	मकर दशा	0 y.1 m.15 d.	09:01:2021 -- 23:02:2021
5	कुम्भ दशा	0 y.1 m.11 d.	23:02:2021 -- 06:04:2021
6	मीन दशा	0 y.1 m.7 d.	06:04:2021 -- 13:05:2021
7	मेष दशा	0 y.1 m.11 d.	13:05:2021 -- 24:06:2021
8	वृष दशा	0 y.1 m.7 d.	24:06:2021 -- 31:07:2021
9	मिथुन दशा	0 y.1 m.7 d.	31:07:2021 -- 07:09:2021
10	कर्क दशा	0 y.1 m.7 d.	07:09:2021 -- 15:10:2021
11	सिंह दशा	0 y.1 m.17 d.	15:10:2021 -- 14:11:2021
12	कन्या दशा	0 y.1 m.3 d.	14:11:2021 -- 18:12:2021

## पत्ययिनी दशा से वार्षिक भविष्यफल

### बुध दशा

(18:12:2020 To 31:12:2020)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध नीचस्थ है या अस्त या ग्रसित होने के कारण कलंकित है। यह एक अनुकूल युति नहीं है। बुध की दशा आपके लिये उत्तम नहीं हो सकती है। अतः सामान्यतः आपको अपने सभी मामलों में बहुत सावधान और सजग रहना चाहिये, और अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिये। आप कफ और वायु विकारों से ग्रस्त हो सकते हैं। किसी महत्वपूर्ण काम की शुरुआत या किसी लम्बी यात्रा के लिये प्रस्थान फलदायी नहीं हो सकता है। आपके कार्यस्थल पर स्थितिकुछ हद तक समस्याकारी हो सकती है, और आप कभी-कभी आपने किसी सहकर्मियों के साथ असहमति या गलतफहमी होने के कारण झुँझलाहट महसूस कर सकते हैं।

### सूर्य दशा

(31:12:2020 To 16:01:2021)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य तुंगस्थ या अपनी राशि में या नीचस्थ नहीं है और यह ग्रसित भी नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन युति का निर्माण करते हैं। अतः सूर्य की दशा केवल साधारण होगी, और कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। हालाँकि आपके कार्यस्थल पर स्थिति कुछ हद तक खराब हो सकती है और आप अपने किसी एक वरिष्ठ या सहकर्मियों के साथ प्रायः किसी छोटी असहमति या गलतफहमी के कारण झुँझलाहट महसूस कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य एक उपचय भाव (३रे/ ६ठे/१०वें/ ११वें) में स्थित है। यह ना ही नीचस्थ है और ना ही राहु के पास में स्थित है। यह वास्तव में अनुकूल युति है। सूर्य की दशा आपके लिये लाभकारी साबित होगी। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, और वर्ष के दौरान कोई विशेष उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। वरिष्ठ सरकारी अधिकारी आपके प्रति अनुकूल होंगे और आप उनसे समर्थन या लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

### लग्न दशा

(16:01:2021 To 25:02:2021)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश तुंगस्थ या अपनी राशि में या नीचस्थ नहीं है। यह वक्री या अस्त या ग्रसित भी नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन युति का निर्माण करते हैं। अतः लग्नदशा केवल साधारण होगी, और कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। हालाँकि आपके कार्यस्थल पर स्थिति कुछ हद तक खराब हो सकती है, यद्यपि सामान्य लोग आपको उचित सम्मान देंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ अधिकारी आपको दबाने की कोशिश कर सकते हैं, और तर्कसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं, साथ ही आपको अन्यायपूर्वक उस दोष के लिये कलंकित किया जा सकता है, जहाँ आपकी बहुत छोटी या कोई भी त्रुटि नहीं है।

### गुरु दशा

(25:02:2021 To 28:02:2021)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बृहस्पति नीचस्थ है, या अस्त या ग्रसित होने के कारण कलंकित है। यह एक अनुकूल युति नहीं है। बृहस्पति की दशा आपके लिये उत्तम नहीं हो सकती है। अतः सामान्यतः आपको सावधान और सजग रहना चाहिये, और अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिये। आपके परिवार के कुछ लोग विशेषकर आपकी संतान कफ विकारों से ग्रस्त हो सकती हैं, या आप आर्थिक असुविधा के कारण अपने वचनों को पूरा करने में बहुत कठिनाई का सामना कर सकते हैं। किसी महत्वपूर्ण काम की शुरुआत या किसी लम्बी यात्रा के लिये प्रस्थान बहुत फलदायी नहीं हो सकता है।

### शनि दशा

(28:02:2021 To 06:03:2021)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि तुंगस्थ या अपनी राशि में है और यह ग्रसित या अस्त होने के कारण कलंकित नहीं है। शुक्र की दशा के दौरान आप कुछ मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगे। आप नये परिचितों और विदेशी स्रोतों से लाभ और समर्थन प्राप्त करेंगे। कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग आपके परिचित हो सकते हैं, जिससे आप अपने शत्रुओं को पूरी तरह से परास्त करेंगे। आपकी आय और स्तर में बढ़ोत्तरी होगी। आपमें संतोष की भावना होगी, लेकिन आपको प्रयुक्त किये जाने वाले उपायों पर नजर रखनी चाहिये। साथ ही आपको सावधान और सजग रहना चाहिये- जैसाकि आपको किसी छोटी दुर्घटना और / या वायु विकारों से ग्रसित होने का खतरा है।

### शुक्र दशा

(06:03:2021 To 10:04:2021)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र तुंगस्थ या अपनी राशि में या नीचस्थ नहीं है, और यह ना ही ग्रसित या अस्त है। समग्र रूप से ये एक उदासीन युति का निर्माण करते हैं। अतः शुक्र की दशा केवल साधारण होगी, और कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। आपके सभी मामले सामान्यतः भली भाँति चलेगें। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहज होंगी। आप अपने संबंधियों और मित्रों की संगति पानेके लिये कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे। आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण और खुशहाल होगा।

### चन्द्र दशा

(10:04:2021 To 22:06:2021)

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, चन्द्रमा तुंगस्थ या अपनी राशि में या नीचस्थ नहीं है, और यहना ही ग्रसित है ना ही अस्त है। समग्र रूप से ये एक उदासीन युति का निर्माण करते हैं। अतः चन्द्रमा की दशा केवल साधारण होगी, और इसमें कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। हालाँकि आपके घरेलू वातावरण में कुछ समस्याएँ हो सकती हैं, आपके परिवार के कुछ सदस्य अतार्किक ढंग से बात और व्यवहार कर सकते हैं, जिससे आप चिड़चिड़े हो सकते हैं और बहुत अप्रसन्नता महसूस कर सकते हैं।

### मंगल दशा

(22:06:2021 To 18:12:2021)

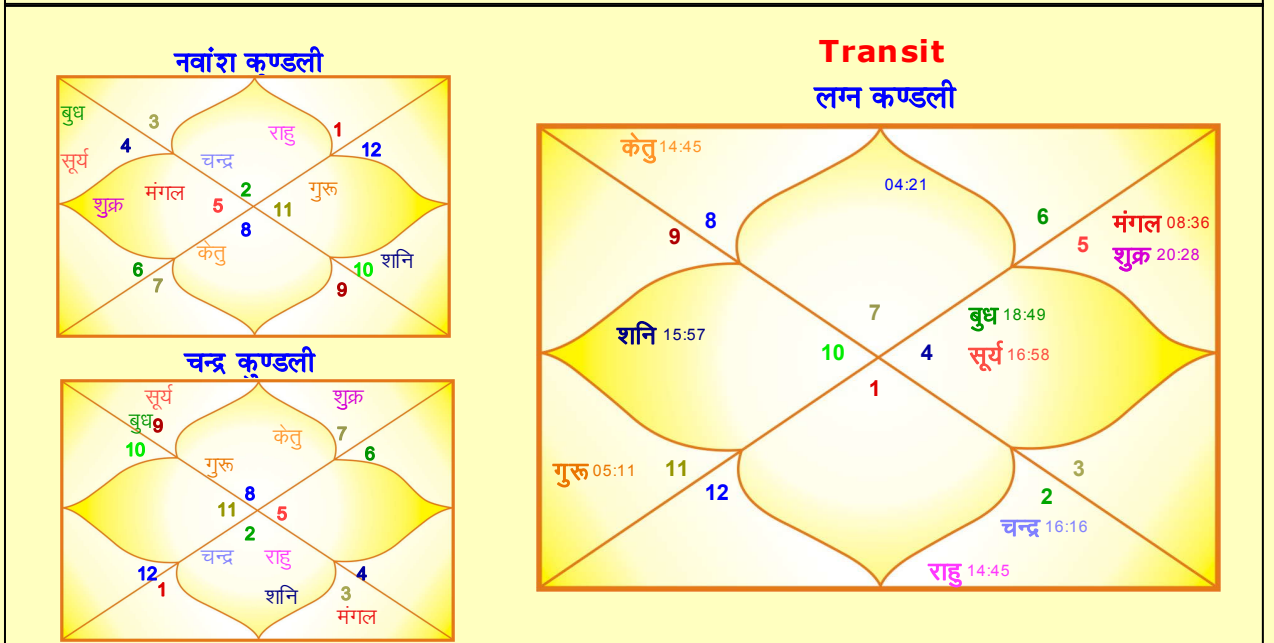
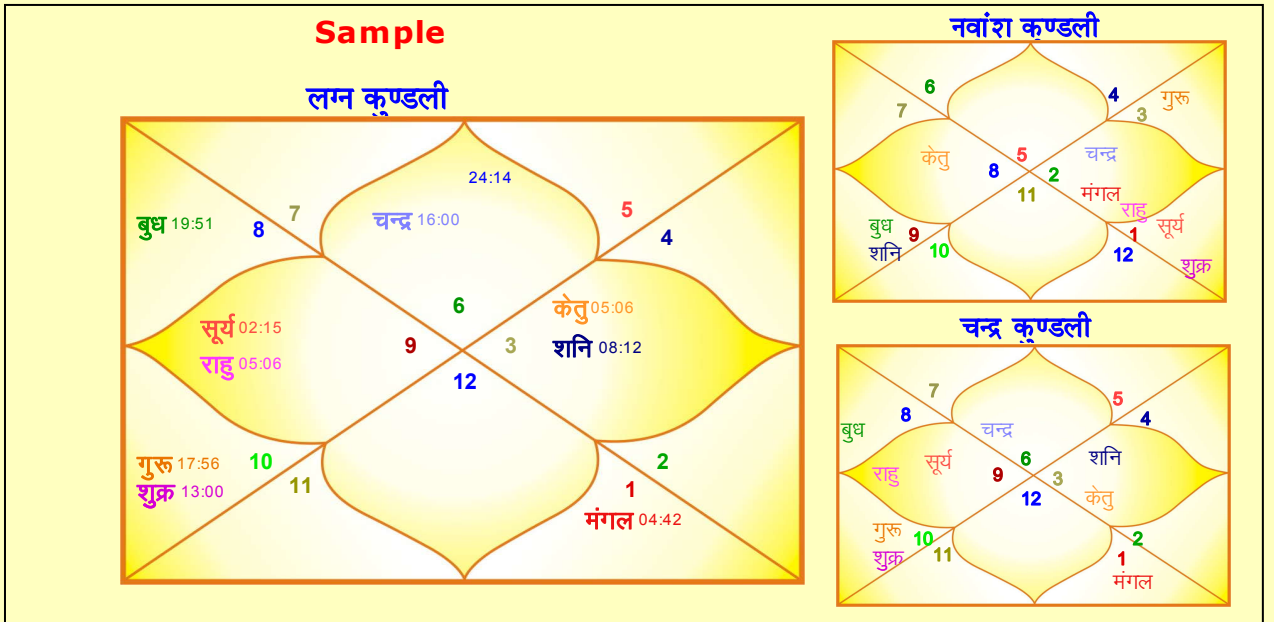
इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल तुंगस्थ या अपनी राशि में या नीचस्थ नहीं है, और यह ग्रसित या अस्त भी नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन युति का निर्माण करते हैं। अतः मंगल की दशाकेवल साधारण होगी, और कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं होगी। हालाँकि आप अपने कार्यस्थल पर कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं, साथ ही आप अपने सगे या चचेरे भाई या पड़ोसी के साथ सम्पत्ति विवाद में फँस सकते हैं, जिससे आप झुँझलाहट महसूस कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल एक उपचय भाव (३रे/ ६टे/१०वें/ ११वें) में स्थित है। यह ना ही नीचस्थ है और ना ही राहु के पास में स्थित है। यह वास्तव में अनुकूल युति है, और मंगल की दशा आपके लिये लाभकारी साबित होगी। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे और वर्ष के दौरान कोई विशेष उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। वरिष्ठ सरकारी अधिकारी आपके प्रति अनुकूल होंगे, और आप उनसे समर्थन या लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गोचर की तारीख- 03:08:2021 गोचर का समय- 11:27:47AM गोचर का स्थान- Hyderabad (INDIA)

ग्रह स्थिति

Sample					Transit					
ग्रह	रशि	डिग्री	नक्षत्र		ग्रह	रशि	डिग्री	नक्षत्र		
लग्न	कन्या	24:14:37	चित्रा (१)	- -	लग्न	तुला	04:21:28	चित्रा (४)	- -	
सूर्य	धनु	02:15:49	मूल (१)	मि०ग्र० ग्र०	सूर्य	कर्क	16:58:34	आरलेषा (१)		शु०ग्र०
चन्द्र	कन्या	16:00:58	हस्त (२)	श०ग्र० -	चन्द्र	वृष	16:16:41	रोहिणी (२)		ग्र०
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी (२)	मूत्रि -	मंगल	सिंह	08:36:17	मघा (३)		शु०ग्र०
बुध	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (१)	श०ग्र० -	बुध	कर्क	18:49:33	आरलेषा (१)		ज्व०
गुरु	मकर	17:56:39	श्रवण (३)	त०ग्र०शु०ग्र०	गुरु व०	कुम्भ	05:11:58	धनिष्ठा (४)	व०	-
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण (१)	मि०ग्र०शु०ग्र०	शुक्र	सिंह	20:28:34	पूर्वाफल्गुनी (३)		दु०ग्र०ह
शनि व०	मिथुन	08:12:34	आर्द्रा (१)	त०ग्र० ग्र०	शनि व०	मकर	15:57:23	श्रवण (२)	व०	-
राहु व०	धनु	05:06:53	मूल (२)	मि०ग्र०दु०ग्र०ह	राहु व०	वृष	14:45:11	रोहिणी (२)	व०	दु०ग्र०ह
केतु व०	मिथुन	05:06:53	मृगशिर (४)	त०ग्र०दु०ग्र०ह	केतु व०	वृश्चिक	14:45:11	अनुराधा (४)	व०	-
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा (४)	- -	हर्षल	मेष	20:31:18	भरणी (३)		-
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (४)	- शु०ग्र०	नेपच्यून व०	कुम्भ	28:39:56	पूर्वाभाद्रपद (३)	व०	शु०ग्र०
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्त (१)	- दु०ग्र०ह	प्लूटो व०	मकर	01:01:12	उत्तराषाढ़ (२)	व०	दु०ग्र०ह



**गोचर शनि**  
(शनि साढ़ेसाती)

**द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।**  
**सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत्।।**

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।

शनि साढ़ेसाती का पहला चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें )	सिंह	07:09:1977	04:11:1979	2 y.1 m.27 d.	ताम्र
द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले )	सिंह	15:03:1980	27:07:1980	0 y.4 m.12 d.	
तृतीय ढैया (जन्म चन्द्र से दूसरे )	कन्या	04:11:1979	15:03:1980	0 y.4 m.10 d.	स्वर्ण
	कन्या	27:07:1980	06:10:1982	2 y.2 m.10 d.	
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे )	तुला	06:10:1982	21:12:1984	2 y.2 m.15 d.	रूपया
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें )	तुला	01:06:1985	17:09:1985	0 y.3 m.17 d.	
	धनु	17:12:1987	21:03:1990	2 y.3 m.3 d.	ताम्र
	धनु	20:06:1990	15:12:1990	0 y.5 m.26 d.	
	मेष	17:04:1998	07:06:2000	2 y.1 m.21 d.	ताम्र
शनि साढ़ेसाती का दूसरा चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें )	सिंह	01:11:2006	10:01:2007	0 y.2 m.9 d.	ताम्र
द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले )	सिंह	16:07:2007	10:09:2009	2 y.1 m.25 d.	
तृतीय ढैया (जन्म चन्द्र से दूसरे )	कन्या	10:09:2009	15:11:2011	2 y.2 m.5 d.	स्वर्ण
	कन्या	16:05:2012	04:08:2012	0 y.2 m.19 d.	
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे )	तुला	15:11:2011	16:05:2012	0 y.6 m.0 d.	रूपया
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें )	तुला	04:08:2012	02:11:2014	2 y.2 m.28 d.	
	धनु	26:01:2017	21:06:2017	0 y.4 m.24 d.	ताम्र
	धनु	26:10:2017	24:01:2020	2 y.2 m.29 d.	
	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	ताम्र
	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	
शनि साढ़ेसाती का तीसरा चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढैया (जन्म चन्द्र से बारहवें )	सिंह	27:08:2036	22:10:2038	2 y.1 m.25 d.	ताम्र
द्वितीय ढैया (जन्म चन्द्र से पहले )	सिंह	05:04:2039	13:07:2039	0 y.3 m.8 d.	
तृतीय ढैया (जन्म चन्द्र से दूसरे )	कन्या	22:10:2038	05:04:2039	0 y.5 m.13 d.	स्वर्ण
	कन्या	13:07:2039	28:01:2041	1 y.6 m.16 d.	
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे )	तुला	28:01:2041	06:02:2041	0 y.0 m.9 d.	रूपया
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें )	तुला	26:09:2041	12:12:2043	2 y.2 m.16 d.	
	धनु	08:12:2046	06:03:2049	2 y.2 m.27 d.	ताम्र
	धनु	10:07:2049	04:12:2049	0 y.4 m.25 d.	
	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	ताम्र



## ग्रहो के गोचर से भविष्यफल

गोचर में सूर्य चन्द्र राशि से ग्यारहवें भाव से गुजर रहा है। यह एक अति शुभ गोचर है। आपकी प्रतिष्ठा आपके मित्रों, सहकर्मियों, और परिचितों में बढ़ेगी। आपको ऊँचे पदों पर स्थित अपने मित्रों से प्रत्यक्ष लाभ और अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हो सकता है। आप अधिक जिम्मेदारियों वाले पद संभाल सकते हैं और आपके आमदनी में बढ़ोतरी होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम तथा रोगमुक्त होगा। आपकी माता की तरफ के रिश्तेदारों के लिए भी यह गोचर शुभ है।

सावन महीने के दौरान सूर्य इस गोचर में होगा ( १६-१७ जुलाई से १६-१७ अगस्त तक )

चन्द्रमा गोचर में अपनी राशि से नौवें भाव से गुजर रहा है। यह गोचर शुभ नहीं है और आप अपने को अस्वस्थ महसूस करेंगे। आप किसी दूरस्थ रहने वाले व्यक्ति से कुछ संदेश प्राप्त करेंगे जो कि आपको परेशान कर सकता है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपमें गलतियाँ खोजने की कोशिश कर सकते हैं, अथवा आपके पिता थोड़े-बहुत तुनुकमिजाज हो सकते हैं जो आपके सुझाव/प्रस्ताव को मानने से इंकार कर सकते हैं, जिससे आपको दुखी हो सकते हैं।

गोचर में मंगल आपके चन्द्र राशि से बारहवें भाव से गुजर रहा है। यह एक शुभ गोचर नहीं है। आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए और खर्चों को वश में रखना चाहिए। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा और संतानों का स्वास्थ्य आपको चिंतित कर सकता है। आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव आपको परेशान कर सकता है। अगर गोचर में अन्य दूसरे ग्रह भी अशुभ स्थिति में हैं तो आपको अपने पेशे के सिलसिले में दूरस्थ स्थानों की यात्रा करनी पड़ सकती है, पर इससे आपको कोई फायदा नहीं हो सकता है।

गोचर में बुध चन्द्र राशि से ग्यारहवें भाव से गुजर रहा है। यह एक अति शुभ गोचर है और बुध की कृपा-दृष्टि आप पर बनी रहेगी। आपकी उन्नति बरकरार रहेगी। आप ऊँचे पदों पर आसीन अपने मित्रों से प्रत्यक्ष लाभ तथा सहयोग प्राप्त करेंगे, और आपके लिए नए रास्ते खुले होंगे। आप अपनी संपत्ति अपने विवेक और समझदारी भरे निवेश से बढ़ाएंगे। सामाजिक स्तर पर भी आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी।

गोचर में वृहस्पति चन्द्र राशि से छठे भाव से गुजर रहा है। यह बहुत ही शुभ गोचर नहीं है। आपको काफी सावधान और सचेत रहना चाहिए। आपको अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि आप बीमार पड़ सकते हैं। आपके शत्रु आपको परेशान करने की कोशिश कर सकते हैं और आपके सम्बन्धी, मुख्य रूप से आपकी माता के तरफ के, आपके प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार करेंगे। आपके कुछ कर्मचारी अथवा नौकर आपको छोड़कर जा सकते हैं, जिससे आपकी परेशानी काफी बढ़ सकती है। यद्यपि यह समय आपके व्यापार अथवा नौकरी के लिए ठीक है और आपकी उन्नति बरकरार रहेगी।

गोचर में शुक्र चन्द्र राशि से बारहवें भाव से गुजर रहा है। यह गोचर अत्यंत शुभ है और आप हर तरह की खुशी पायेंगे। अपने रहन-सहन के स्तर में सुधार के लिए आप काफी धन व्यय करेंगे। आप रूचिकर स्थानों का भ्रमण करेंगे और अपने समान लोगों के साथ परम आनंद का अनुभव करेंगे। आपकी संतानों

का स्वास्थ्य ठीक होगा और आपके जीवनसाथी आपको बहुत सारी खुशियाँ प्रदान करेंगे।

गोचर में शनि चन्द्र राशि से पाचवें भाव से गुजर रहा है। यह एक अशुभ गोचर है। आप जीवन के कई क्षेत्रों को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं और असुविधाओं को महसूस कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी मिजाजी और अप्रत्याशित व्यवहार करने वाले हो सकते हैं जबकि आपके संतानों का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है। अगर आप किसी शैक्षणिक या बौद्धिक कार्य में लगे हैं तो आपकी उन्नति रूक सकती है या तात्कालिक विराम भी लग सकता है। पेशे से आपकी आय तथा अन्य स्रोतों से लाभ कम हो सकता है। संभावित हानि से बचने के लिए आपको यह सलाह दी जाती है कि निवेश से दूर रहें।

गोचर में राहु आपकी चन्द्र राशि से नौवें भाव से गुजर रहा है। यह राहु का सबसे अशुभ गोचर है और आपको बहुत ही सावधान और सचेत रहना चाहिए। किसी अप्रत्याशित परिस्थितिवश, दूरस्थ बैठे किसी व्यक्ति से आपकी अपेक्षाएँ खत्म हो सकती हैं। इसके अलावा, आपको कुछ निराशा हो सकती है और अनिश्चितताएँ आपकी संभावनाओं को धुँधली कर सकती हैं। यदि अन्य ग्रह भी शुभ गोचर में नहीं हैं तो आपको हानि उठानी पड़ सकती है और सबसे बुरी संभावना है कि आप अनर्थ घटना, राजनैतिक या सामाजिक अशांति या सरकारी नीतियों में अचानक बदलाव के शिकार हो सकते हैं।

गोचर में केतू आपकी चन्द्र राशि से तीसरे भाव से गुजर रहा है। यह एक शुभ गोचर है। आपका जीवन सुखमय और खुशियों से भर होगा। आप काफी साहसी, सक्रिय, और उत्साही होंगे। आप कोई नया कार्य शुरू करेंगे और उसे समय पर सफलता पूर्वक समाप्त भी करेंगे। अपने पेशे से संबंधित आपको निकट स्थानों की छोटी-छोटी यात्राएँ करनी पड़ सकती हैं, और आप बहुत सारे नये लोगों से मिलेंगे, जिनसे भविष्य में आपको लाभ प्राप्त होगा। अगर आप ठेकेदार या कोई एजेंट या आपूर्तिकर्ता हैं तो आपको बहुत सारे नये मौके प्राप्त होंगे।